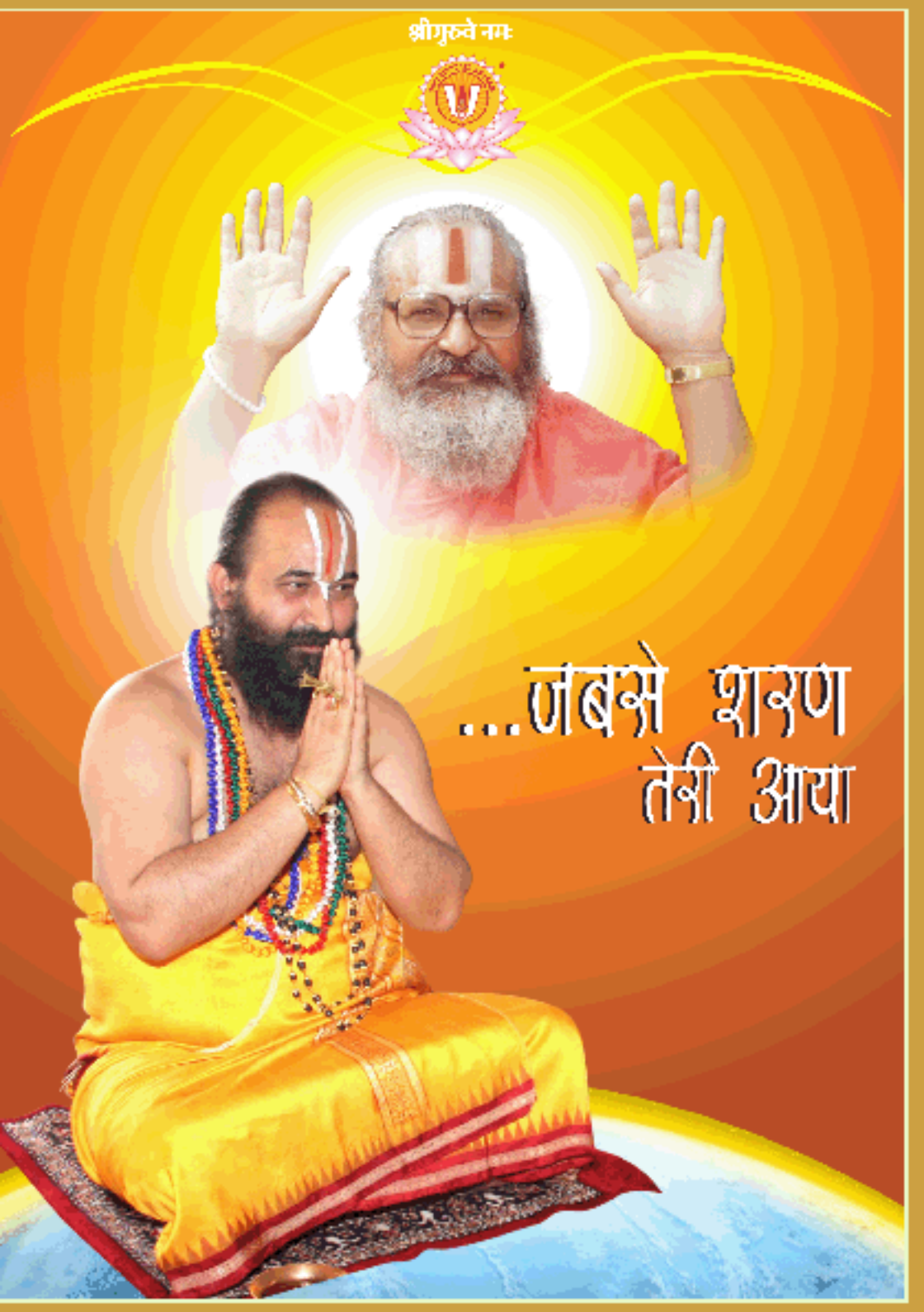

श्रीगुरुभ्यो नमः
...जबसे शरण
तेरी आया

श्री गुरुवे नमः

'गुरुदेव की कृपा तो हर समय बरसती है। शिष्य को चाहिए
कि वह केवल उनके वचनों में श्रद्धा रखे
और उनके आदेशों का पालन करे।'

आशीर्वाद प्रदाता :

अनन्त श्री विभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा
पीठाधीश्पर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य
स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज

संपादन : सौरभ भारद्वाज

लेखक : उमेश शास्त्री

संकलन : अभिनव गौतम

जबसे शरण तेरी आया :
प्रथम संस्करण - 22 जुलाई, 2013, गुरु पूर्णिमा

पेपर बैक
सेवा न्यौछावर
© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित

प्रकाशक :
जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट,
श्री सिद्धदाता आश्रम
सूरजकुंड मार्ग, सैक्टर -44,फरीदाबाद (हरियाणा) भारत

कॉन्सेप्ट, कवर पेज डिज़ाइन एवं मुद्रक :
वी.ओ.एफ. मीडिया प्रा. लि.
फरीदाबाद, फोन - 9818347666

चमत्कार को नमस्कार है!

मानवता के इतिहास में जितने भी अवतार हुए उन्होंने अपने क्रियाकलापों से न सिर्फ मानव मात्र को चमत्कृत किया है बल्कि सर्वशक्तिमान ईश्वर की सत्ता के प्रति मानव की आस्था को और दृढ़ता के साथ स्थापित किया है। पूज्य गुरुदेव स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज और उनके बाद स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने अपनी अलौकिक शक्तियों के सहारे न सिर्फ आम जनों के कष्टों को दूर किया अपितु ईश्वरीय सत्ता के प्रति उनकी आस्था को और दृढ़ किया है। जो भी अपने तमाम किंतु-परंतुओं को छोड़ कर शरण आया उसने न सिर्फ कृपा प्राप्त की, बल्कि चमत्कारों को अपनी आंखों के सामने घटित होते देखा। हजारों की संख्या में उस कृपा को लोगों ने महसूस किया है। कृपा के ये अनुभव नितांत निजी अनुभव हैं। कई बार लोगों ने इन चमत्कारों को तर्कशास्त्र की कसौटी पर कसने का प्रयास किया लेकिन उनके हाथ कुछ नहीं लगा। बहुत बार कृपा पाने वालों को कृपा प्राप्त हुई लेकिन वे उसे अभिव्यक्त नहीं कर सके, क्योंकि साक्षात कृपा का यह अनुभव गूंगे के गुड़ जैसा है। इसके आनंद को तो वही पा सकता है जो शरण में आया हो। जिसने अपना संपूर्ण गुरु के श्री चरणों में रखकर मन से कहा हो... अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में अब जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में...। देश-विदेश में फैले गुरु प्रेमियों के इन निजी अनुभवों को संकलित करने का बीड़ा उठाया था। भाई अभिनव गौतम के सहयोग और गुरु कृपा से ही यह संभव हो सका है। आचार्य उमेश शास्त्री, निदेशक, व्यास बालावक्ष शोध संस्थान जयपुर द्वारा गुरु महिमा पर दिए गए उत्कृष्ट लेख ने इस पुस्तक को और भी उपयोगी बना दिया है। इस लेख से हमारे पाठकों को शरणागति को विस्तार से समझने में मदद मिलेगी। इस पुस्तक को प्रकाशित करने का उद्देश्य सिर्फ एक, पूज्य गुरुदेव ने अपनी कृपा से सद्मार्ग पर चलने का जो रास्ता दिखाया है उसे अन्य गुरु प्रेमियों के साथ बांटा जा सके और भगवान श्रीमन्न नारायण के प्रति आस्था को और दृढ़ किया जा सके।

सौरभ भारद्वाज

पूज्य गुरुदेव वैकुण्ठवासी सुदर्शनाचार्य जी महाराज

अकरूणा-करूणा वरूणालय पतितपावन भूतभावन भगवान् की दिव्य आज्ञाओं को जन जन तक पहुँचाने एवं भारतीय जनमानस में आध्यात्मिक चेतना तथा दृष्टि देने के लिए सनातन धर्म में अवतारवाद परम्परा अति प्राचीन है। गीता में भगवान्

श्रीकृष्ण ने असुरों का नाश, धर्म संस्थापना और धर्म प्रचार के लिए ''संभवामि युगे युगे'' की प्रतिज्ञा को आत्मसात् करने के साथ दिशाबोध देने के लिए हर युग में विभिन्न रूपों में अवतार लिया है। इसी परम्परा में भूत, भविष्य और वर्तमान द्रष्टा कैंकर्य-लक्षण-विलक्षण-स्वरूप, रामानुजाचार्यानुवर्ती प्रातः स्मरणीय पूज्यपद अनन्त श्रीविभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर स्वामी सुदर्शनाचार्य जी का राजस्थान की पावन अवनी में सवाई माधोपुर मण्डलान्तर्गत पाड़ला ग्राम में एक सम्पन्न कृषक ब्राह्मण परिवार में 27 मई 1937 में प्रादुर्भाव हुआ था।

''वीरवान बलवान के होत चिकने पात'' इस कहावत को सार्थक करते हुए प्रतिभा के धनी, धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत, सर्वप्रथम मेंहदीपुर बालाजी के प्रसिद्ध मंदिर के महन्त श्री गणेशपुरी का सान्निध्य प्राप्त कर मानव कल्याण की कामना से लोकहित कार्यों में अपना ध्यान आकृष्ट किया। इसके बाद व्रजवसुन्धरा के पावन वृन्दावन धाम में खटलेश स्वामी गोविन्दाचार्य महाराज से दीक्षा एवं शिक्षा ग्रहण कर सारस्वत नगरी काशी में भी वेदादि शास्त्रों का गहन अध्ययन किया।''अनुभवगम्य भजहिं जेहि सन्ता'' परमभक्त संत तुलसीदास के वचनों को हृदयङ्गम करते हुए भानगढ़ के बीहड जंगलों में बारह वर्षों तक कठोर तपस्या कर मन्त्र तन्त्रों की प्रत्यक्ष अनुभूति कर लोकोपकार करने के लिए सांसारिकों के बीच में प्रकट हुए।इसी परिवेष में अरावली पर्वत के उपत्यका पर परशुराम, पाराशर, व्यास, कुन्ती सेवित सिद्धाश्रम के रूप में पूर्व से ही विख्यात फरीदाबाद मण्डलान्तर्गत व्यास पहाड़ी के भूखण्ड पर सिद्धदाता आश्रम के निर्माण के लिए 1989 ई0 में कार्य प्रारम्भ हुआ। इस भूखण्ड ग्रहण के विषय में एक रोचक किन्तु भावपूर्ण किंवदन्ती सम्बन्धित है। फरीदाबाद से

दिल्ली की ओर जाते समय अचानक गाड़ी रूकने के कारण जून के प्रचण्ड आतप मध्यदिन में महाराजजी को जल का चमकता हुआ श्रोत सा दिखाई दिया। वाहन रोककर निरीक्षण बुद्धि से देखने पर कुछ भी दिखाई नहीं दिया। परन्तु कुछ अव्यक्त वाणी सुनाई दी, जिसे प्रमाण मानकर उसी स्थान पर आश्रम बनाने की प्रेरणा ग्रहणकर वे क्रियान्वयन के लिए प्रवृत्त हुए। प्रारम्भिक गतिरोध के बाद इस कार्य में सफल हुए और आश्रम निर्माण का कार्य सम्पन्न हुआ। महाराज जी की वैयक्तिक स्वाभाविक इच्छा आश्रम निर्माण में ही थी। लेकिन इसके बाद में श्रीलक्ष्मीनारायण दिव्यधाम निर्माण का कार्य भगवदाज्ञा को स्वीकारकर 1996 के विजयादशमी के पावन पर्व पर प्रारम्भ हुआ। महाराज जी के अहर्निश अनथक परिश्रम भक्तजनों के द्वारा की गई कारसेवा के परिणामस्वरूप चार वर्ष के अत्यल्प समय में गगनचुम्बी शिखरों से विभूषित स्वर्णकलश-मण्डित श्रीलक्ष्मीनारायण दिव्य धाम का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। जहाँ समस्त भक्त जनों की श्रद्धानुसार सभी मनोकामनाएँ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्त होती है।पूज्य महाराज श्री के जीवन दर्शनों में अनेक आयाम प्रमुख होते हुए नामजप, शरणागति, मानवता और लोकसेवा प्रधानरूप से भक्तों एवं सांसारिकों के सामने में दिखाई देते है। अपने अनुभूति वचनों में ----

लिया दिया तेरे संग चलेगा, धर्म कर्म का नाता है।
सांई नाम की चिन्ता कर ले, देने वाला दाता है।।

गुरु जी ने इन सन्त वचनों को हृदयङ्गम करके व्यवहार में नाम-ग्रहण करने, दान देने और शरणागति को सर्वोपरि सिद्धान्त मानकर अपने व्यवहारिक परिचर्याओं तथा दिव्य अमृतमय संत्सगों के द्वारा जनमानस में समारोपित करने का अनथक प्रयास किया। जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान में आर्यसमाज बहुल्य प्रदेशों में भी भगवान् के विग्रहों एवं परिचर्याओं में भक्तों का ध्यान आकृष्ट हो रहा है। दिव्यशक्तिओं के प्रयोग से समस्याओं का समाधान एवं प्रत्यक्ष अनुभूति से अनेक प्रमाण प्रस्तुत हो रहे हैं। गुरु

''विप्र धेनु सुर सन्त हित'' इस तुलसीदास कथनानुसार वर्ण-व्यवस्था, गोधन की रक्षा के लिए भगवान् या उनके विभूति का अवतार होता है। 'गवां मध्ये वसाम्यहम्' के अनुसार गोवंश की रक्षा के लिए पूज्य महाराज ने विशाल गोशाला का निर्माण करवाया। जिसमें सम्प्रति तीन सौ से अधिक गायें रहती हैं। जिसके दुग्ध पंचगव्यों के निर्माण से अतिथि एवं मानव सेवा का कार्य निरंतर संचालित हो रहा है।

स्वामीजी के विलक्षण वैभव व गुणों से प्रभावित होकर वैष्णव समुदाय ने 1998 के हरिद्वार के महाकुम्भ में पतित पावनी गंगाजी के किनारे जगद्गुरूओं, पीठाधीश्वरों, त्रिदण्डी स्वामियों एवं आचार्यों तथा व्यापक वैष्णव समुदाय के समक्ष आपको श्रीमज्जगद्गुरू रामानुजाचार्य के पद पर विभूषित कर इस पद की गरिमा को भी सम्मानित किया।इसके चरितार्थ के रूप में महाराज श्री ने हरियाणा

के फरीदाबाद में सिद्धदाता आश्रम में श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम की स्थापना कर एक ऐसे तीर्थ स्थल का निर्माण किया, जिस के दर्शन से अनन्त काल तक श्रद्धालु भक्त लोग पुण्य लाभ प्राप्त कर जीवन सफल बनाते रहेंगे। श्वेत संगमरमर पत्थर से निर्मित अत्यन्त सूक्ष्म कलाकृतियों से विभूषित मन्दिर अपने दर्शन मात्र से आगन्तुक एवं दर्शनार्थी मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। मन्दिर में स्थापित भगवान् की विभिन्न प्रतिमाऐं मानों कृपा दृष्टि बरसाती हुई साक्षात् वार्तालाप करती हों, भक्त जनों के आर्तों को श्रवण करती हों, कष्ट निवारण करती हों, ऐसा अनुभव होता है। भक्तों सज्जन पुरूषों, आगन्तुकों एवं जनमानसों के अनुभवों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनन्त श्रीविभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज सविग्रह सिद्धदाता आश्रम के कण-कण में, वृक्ष लता-वितानों में आश्रमवासियों के हृदयों में अनन्त रूप से विद्यमान है। भक्तों, शिष्यों, पीड़ितों के कष्टों को दूर कर इन्हें अध्यात्म ज्ञान की पावन सरिता में निरंतर अवगाहन कराते रहते हैं। साथ ही निरन्तर मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हुए

'वसुधैव कुटुम्बकम् तथा
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्वेत।।

का भाव प्रदर्शित करते हैं। अपने जीवन काल में ही 23 अप्रैल 2007 को अनेक संत, महन्त एवं भगवद्भक्तों के समक्ष अपने उत्तराधिकारी स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी को पद पर अभिषेक कर सांसारिक उत्तरदायित्वों एवं सिद्धदाता आश्रम के कार्यभार से मुक्त हो गये तथा 22 मई 2007 के मध्यान्हकाल अभिजित नक्षत्र के शुभ समय में सूर्यांश को ग्रहणकर इस नश्वर शरीर को त्यागकर वैकुण्ठवास कर गए परन्तु वह भगवद्भक्तों के हृदय में नित्य विराजित है।

आत्मा वैजायते पुत्रः

"आत्मा वैजायते पुत्रः" शास्त्रीय सिद्धान्तों को आलोक में पिता की आत्मा ही पुत्र रूप में उनके गुणगणों से युक्त होकर धराधाम पर अवतरित होती है। इसी परिवेश में इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषित वैकुण्ठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य के आत्मज ज्येष्ठ पुत्र एवं शिष्य श्री प्रह्लाद शर्मा वर्तमान आचार्य अनन्त श्रीविभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी पुरूषोत्तमाचार्य का जन्म एवं कर्म योग्य पिता के योग्य पुत्र के रूप में हुआ है। शैमुषी प्रतिभा के धनी, जीवन के प्रारम्भिक काल से ही आध्यात्म पथ पथिक होकर 1989 से ही आश्रम के निर्माण एवं अन्य गतिविधियों में सदैव योगदान देते रहे है। इसलिए भविष्यदृष्टा परमपूज्य गुरु महाराज जी ने सिद्धदाता आश्रम का भूमि पूजन का कार्य आपके करकमलों के द्वारा ही सम्पन्न कराया। आपके सौम्य-स्वभाव, मृदुभाषी, स्नेहमय और आत्मीय व्यवहार इत्यादि श्रेष्ठगुणों को देखकर आपका जनहित चरिटेबल ट्रस्ट का प्रधान पद का उत्तरदायित्व ग्रहण करवाया गया। साथ ही सिद्धदाता सत्संग सेवा समिति के अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। इन दोनों पदों के भार को इन्होंने पूर्ण क्षमता के साथ निर्वाह किया। इसी कारण पूज्य गुरूमहाराजजी के अधूरे स्वप्नों एवं आश्रम के अधूरे कार्यों को सम्पन्न कर कार्यक्षमता, दूरदृष्टि, अनथक परिश्रम का परिचय दिया।

पूज्य गुरु महाराज स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी ने 19 से 23 अप्रैल 2007 को सिद्धदाता आश्रम में श्रीलक्ष्मीनारायण दिव्य धाम में विभिन्न देवी-देवताओं की प्राणप्रतिष्ठा का समारोह सम्पन्न कराकर अपनी प्रौढ़ता का परिचय दिया। समारोह में देश विदेश के अनेक भक्तजन, आचार्यगण, विद्वज्जन, संत, महन्त, पीठाधीश्वर, राजनेता, मंत्रीगण, अधिकारीगण के आवास भोजन, यातायात की सुविधा देकर अहर्निश कार्यों में तत्पर रहकर, उसे संचालित कराकर आपके बहुआयामी व्यक्तित्व का ही प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। समस्त वैष्णव समुदाय एवं संत महन्तों के समक्ष 23 अप्रैल 2007 को पूज्य महाराज जी की उपस्थिति में स्वामी पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज को उनके उत्तराधिकारी के गरिमामय पद पर अभिषिक्त किया गया। स्वामी सुदर्शनाचार्य जी के वैकुण्ठवासी होने के बाद आचार्यश्री को इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर व श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य के पद पर भी सुशोभित किया गया। जो कि बड़ा खटला वृदांवन के महन्त स्वामी जयकृष्णाचार्य की अध्यक्षता में चिन्ना जीयर स्वामी के तत्वावधान में अनेक संत, महन्तों, जगद्गुरूओं के सान्निध्य में

प्राप्त हुआ।

आपके निर्देशन में आश्रम के चहुँमुखी विकास के साथ सभी अधूरे स्वप्न साकार रूप में सम्पन्न हुए हैं तथा आश्रम में नव-नवायमाण होते हुए अनेक कार्य समायोजित हो रहे हैं।आपका जगद्गुरू रामानुजाचार्य इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर के पद पर भक्तों वैष्णवों, संत महन्तों के समक्ष 4 जून 2007 को अभिषेक किया गया। आप उसी दिन से आश्रम के सर्वाङ्गींण विकास एवं वैष्णव धर्म का प्रचार, लोक कल्याण की कामना से निरन्तर प्रयास एवं कार्य कर रहे हैं। लोकहित एवं जनकल्याण की भावना आपके स्वभाव में समाई हुई है। लोक कल्याण के लिए आप सतत् प्रयासरत रहते हैं।

आपने पूज्य वैकुण्ठवासी गुरु महाराज जी के साथ रहते हुए न केवल जनसाधारण मानव के दुःखों उनके आधि-व्याधियों को वैयक्तिक एवं प्रत्यक्ष रूप में अनुभव किया, बल्कि उसके निराकरण की विधाऐं एवं विद्याओं को भी आत्मसात् किया। इसलिए आप श्रीसम्प्रदाय परम्परा में दीक्षित देश विदेश में फैले अनगिनत भगवद्भक्तों के कल्याण की कामना से उनके साथ निरन्तर सम्पर्क बनाये रखते हैं। साथ ही साथ उनकी समस्याओं का आध्यात्मिक चिन्तनों द्वारा निराकरण करने का सहज भाव रखते हैं। आपके द्वारा समय समय पर दिए गये अध्यात्म प्रवचनों से भक्त जनों के हृदय में अगाध श्रद्धा और सहज विश्वास का भाव जागृत हो रहा है। जिसके परिणामस्वरूप आपमें सद्टस्थ एवं भक्तजन पूज्य वैकुण्ठवासी महाराज का प्रतिबिम्ब का दर्शन कर आनन्द विभोर हो रहे हैं। आपके संरक्षण में सिद्धदाता आश्रम के चहुँमुखी विकास के साथ नित्य-नवीन कार्यक्रमों के आयोजन से भक्तों के हृदय में आनन्दातिरेक समाया हुआ है।

''सर्वत्र विजयमिच्छेत् (पुत्रात्) शिष्यादिच्छेत् पराजय'' इस नीति वचन को हृदयङ्गम् करते हुए वैकुण्ठवासी महाराज जी भी गौरवान्तित हो रहे हैं। आपके संरक्षण में श्रीलक्ष्मीनारायण दिव्य धाम एवं जनहित चेरिटेबल ट्रस्ट दिनों दिन प्रगतिमार्ग पर अग्रसर हो रहा है।

ओऽम शान्तिः

डॉ.गुज्जेश्वराचार्य
प्राचार्य, स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय,
श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

अपनी बात

'श्री सुदर्शनवचनामृतम्' के दोनों भाग पूज्य गुरुजी पुरुषोत्तमाचार्य जी ने भेंट करते हुए चर्चा में कहा - ''गुरु-पूर्णिमा'' के अवसर पर भक्तों को इस पर्व का महत्व समझाया जाए। इसी संदर्भ में श्री जगदीश सोमानी के आग्रह पर दो शब्द लिख दिये, जो लघुकाय कृति का रूप बन गई। अवसर की उपयोगिता के अनुकूल जिन शब्दों ने जन्म लिया, वे सभी पूज्य गुरुजी को अर्पित हैं।

संवत् 2070

आचार्य उमेश शास्त्री

मानव समुदाय में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण दिन होते हैं कि जिन्हें हमेशा स्मरण किया जाता है। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा गुरुपूर्णिमा कहलाती है। इसे व्यास पूजा दिवस के नाम से भी जाना जाता है। सृष्टि से जिस दिन से मार्ग बताया जाने लगा उसी दिन से गुरु पूर्णिमा का महत्त्व आरम्भ हो गया। गुरु पूर्णिमा ऐसा दिवस है जो कि मानव समुदाय को सम्यक् मार्ग, सम्यक् चिन्तन और सम्यक् कार्य के निर्देश का दिवस है। यह सत्य है कि गुरु के संरक्षण और आशीर्वाद से ही मानव अपने सुखी जीवन को सफल बनाता हुआ मुक्ति के माध्यम से ब्रह्मलीन हो सकता है। आत्मा को परमात्मा से मिलाने के मध्य एक बहुत बड़ी गहरी खाई है जो माया सागर कहलाती है। मोह, लोभ, काम, क्रोध, ईर्ष्या, आलस्य के विषैले जीव इसमें तैरते रहते हैं। कोई भी मनुष्य इस सागर को तैरकर पार नहीं कर सकता है। इन दुष्ट जीवों के बीच मानव नारकीय जीवन जीने को विवश हो जाता है। कर्म और कर्त्तव्य की परिभाषा को भूल जाता है। इसी भीषण अंधकार में आत्मा की कौन सुनेगा ? प्रकाश की किरण कहाँ से आयेगी? ज्ञान का दीपक कैसे जलेगा? विवेक का कमल कैसे खिलेगा? बहुत कठिन है। इसी चक्र से उलझा हुआ जीव बार-बार जन्म लेकर नाना योनियों में भटकता रहता है। इस सागर को पार नौका से ही किया जा सकता है अथवा किसी सेतु से। यहाँ गुरु सेतु का काम करता है। वह जीव को इस पार से उस पार ले जाने में सहायक होता है और अपने आशीर्वाद से कर्म बंधन से मुक्त कराकर ब्रह्म में विलय करा देता है। गुरु का पद सामान्य नहीं अपितु अतिविशिष्ट है। संसार में इस पद को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है कि -

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े कांके लागु पाँय।
बलिहारी गुरुदेव की गोविन्द दीयो बताय।।

यदि गुरु नहीं होते, उनके निर्देषों का पालन नहीं करवाते। गोविन्द से कैसे मिलता? यह गुरु की असीम कृपा है जो मुझे अकिंचन को परमब्रह्म से साक्षात्कार करवा दिया। जीवन की सार्थकता को सिद्ध कर दिया। सर्वप्रथम में गुरु के चरणों में ही नमन करता हूँ और आशीर्वाद चाहता हूँ। समय- समय पर मुझे निर्देष देते रहें साक्षी बनते रहें, मेरे मार्ग को प्रशस्त करते रहें। गुरु की अति महिमा है। जिसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

यथार्थगुरु

मानव जीवन के लम्बे अन्तराल में अनेक लोग ज्ञान की बात करते हैं निर्देष देते हैं, मार्ग बताते हैं किन्तु वे गुरु नहीं कहला सकते। जीवन में गुरु तो एक ही होता है जिसके प्रति अज्ञात श्रद्धाओं और समर्पण के प्रति जाग्रत हो। जिसकी अस्मिता और व्यक्तित्व में आकर्षण हो और पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण की तरह शिष्य को बार-बार आकर्षित करे। जैसे श्री कृष्ण की मुरली मनोहर से

गोपीकाएँ स्वतः घर छोड़कर सुध-बुध भूलकर मधुवन में चली आती थीं। उनके लिए श्री कृष्ण ही सर्वोपरि थे। उसी प्रकार जीवन में एक ही गुरु होता है जिसके संरक्षण में साधक स्वयं सिद्ध हो जाता है। एक गुरु का निर्धारण करना होगा। हर किसी व्यक्ति को गुरु नहीं बनाया जा सकता है। गुरु के स्वरूप को देखना होगा, उनके व्यक्तित्व, वैदुष्य और साधना के समन्वय को देखकर गुरु से संबंध बनाया जा सकता है। आज के युग में अपने आपको गुरु प्रचारित करने वाले बहुत से व्यक्ति हैं जो आडम्बरी हैं अपने व्यापार के लिए हजारों शिष्यों को साथ लेकर चलते हैं। जब उनके प्रवचन आकाशवाणी और दूरदर्शन पर प्रसारित होने लगते है जिससे षड्यंत्र की दुर्गन्ध आने लगती है। ऐसे लोगों को गुरु बनाने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती है अपितु भ्रष्टजीवन जीकर समय और धन को व्यर्थ गंवाना है। गुरुपूर्णिमा के दिन ऐसे आश्रमों में शिष्यों की भीड़ लगती है और धन भी समर्पित किया जाता है।

यह समर्पण नहीं अपितु खुले आम लूट है और इस लूट का धन भौतिक सम्पदा बनाने के काम आता हैं। आध्यात्म का इससे संबंध नहीं है। बहुत से बाबा तो आक्रोश में जीवन जीते हैं। वासना का जीवन जीते हैं, कुकर्म में संलग्न रहते हैं और असंवैधानिक कृत्य करते हैं तथा राजनीतिक कटाक्ष कर अपने आपको बहुत ज्ञानी सिद्ध करते है। यह सभी आडम्बरवादी और धनलोलुप व्यक्ति हैं। ऐसे गुरुओं के प्रति श्रद्धा भाव का होना बहुत कठिन है। श्रद्धालु भावना के वशीभूत हैं। उदारचेता और ज्ञान गौरव के समक्ष ही श्रद्धा समर्पित होती है किसी आडम्बरवादी के प्रति नहीं। लोग अस्थायी चमत्कारों के पीछे भागते हैं यह चमत्कार नहीं है अपितु हाथ की सफाई है। ऐसे अकर्मण्य लोगों से दूर रहना ही श्रेयस्कर है। कोई भी गुरु अपना विज्ञापन नहीं करता है और न ही प्रदर्शन करता है।

गुरु की अस्मिता

गुरुपद ज्ञानवान ही ग्रहण कर सकता है जिस व्यक्ति ने विधिवत् वेद, वेदान्त एवं वेदांग का गहन अध्ययन कर अपने को व्यक्तित्वमय बनाया वही गुरु कहलाने योग्य हैं। आवश्यक नहीं है किसी गुरु के पास विश्वविद्यालय की उपाधि हो। बहुत से ऐसे विद्वान हैं जिनके पास उपाधि नहीं अपितु ज्ञान का भण्डार है। गुरु के व्यक्तित्व में गरिमा और शालीनता का समन्वय होना आवश्यक है। जिस व्यक्ति ने अपनी साधना के माध्यम से छः शत्रुओं पर विजय प्राप्त ली हो वही जितेन्द्रिय गुरु पद के योग्य है। साधक के ललाट पर तेजस्विता अपने आप उभरने लगती है और आम आदमी श्रद्धा के साथ नतमस्तक हो जाता है। गुरु अपने साधना के फल को आम लोगों में वितरित करता रहता है। आशीर्वाद स्वरूप वक्य ही गुरु कर्म है। जो कार्य अच्छे-अच्छे चिकित्सक नहीं कर पाते हैं। वकील जिन विवादों को नहीं सुलझा पाते हैं। समाज जिन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता है। उनका समाधान गुरु के माध्यम से हो जाता है। गुरु का सबसे बड़ा आदर्श है - 'त्यक्तेन भुंजीथाः

अर्थात् त्याग के साथ साधनामय जीवन जीये, वह अपने लिए नहीं जीता है, अपितु समाज के लिए उसका जन्म होता है। भ्रान्त मनुष्यों को दिशाहीन होने से बचाकर मार्ग पर लाने का कार्य करता है। क्लेश में लोगों को आश्वस्त करना, शोकाकुल लोगों को जीवन चक्र समझा कर रोगियों को पीड़ा मुक्त करना, भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर ले जाने का कार्य गुरु का आदर्श कर्त्तव्य है। गुरु आपसे स्थान, अर्थ, पद एवं भेद आदि नहीं चाहता है, अपितु श्रद्धा चाहता है। शिष्य को गुरु के प्रति शुद्ध भावना से श्रद्धा के साथ अपना समर्पण करना चाहिये, क्योंकि कहा गया है कि-

यादृषी भावना तादृषी सिद्धिभवर्ति।

गुरु का पद ईश्वर से भी बढ़कर है जैसे ईश्वर निर्विकार, अगम्य और स्वरूप विहीन है वैसे ही गुरु आदर्शशिष्ठ, आगम्य और स्वरूपवान है। गुरु के आशीर्वाद से असम्भव भी सम्भव है। प्राचीन काल से ही पुराणों में अनेक उदाहरण ऐसे मिलते हैं कि गुरु के आशीर्वाद से शिष्यों ने अपने जीवन को धन्य बना लिया। कई शिष्यों ने ईश्वर को प्राप्त किया। गुरु ने शिष्यों की समय-समय पद परीक्षा ली और सफल होने पर हृदय से आशीर्वाद दिया। उपमन्यु, श्री कृष्ण, सुदामा आदि अनेक ऐसे पात्र हैं जो परीक्षा में सफल होकर गुरु के आशीर्वाद को प्राप्त करते रहे। गुरु की आज्ञा सर्वोपरि है। गुरु के आदेश को अपने विवेक से नहीं जोड़ना चाहिए क्योंकि आपके चिन्तन और गुरुदेव के चिन्तन में भूमि-आसमान का अन्तर है। यदि आपने अपने विचार से अवज्ञा या अवहेलना की तो आप पूर्ण शिष्य अधिकारी नहीं रहेंगे। गुरु के बिना यश पाना बहुत कठिन है। गुरु ही शिष्य को आराधना या साधना का ज्ञान देता है। जब वह शिष्य की पात्रता को परख लेता है तब उसे साधना मार्ग की ओर प्रेरित करता है। यद्यपि गुरु विधिविधान के प्रति दिशा-निर्देश दे देता है किन्तु फिर भी पथ में भ्रान्तियां आती हैं, बाधाएँ आती हैं उन्हें पार करने के लिए गुरु का संरक्षक रूप में होना अनिवार्य है। यदि कोई शिष्य अपने आपको साधना का अधिकारी समझ लेता है तो वह बड़ी भूल करता है। उसका अहंकार उसे विनष्ट कर देता है। अतः गुरु के संरक्षण में ही साधना सफलतापूर्वक की जा सकती है। गुरु वह है तो तूफान में भी नौका को उस पार लगा सकता है। गुरु के अनुशासन में रहकर शिष्य को अपनी साधना पूर्ण करके सिद्धि प्राप्त कर लेनी चाहिये।

आज ज्ञान की परिभाषा से बहुत दूर रहकर मानव सांसारिक जीवन के प्रति गहन रूचि रखने लगा है। भौतिक उपलब्धियों के निमित्त सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने की लालसा रखता है। आज गुरु के निकट जाने वाला एक ही लालसा लेकर जाता है - मेरे अशुद्ध कार्य भी सिद्ध हो जायें। मैं धन कुबेर हो जाऊँ, मैं राजनीतिक पद प्राप्त कर लूँ। मेरे पुत्र हो जाये। इच्छाओं को लेकर शिष्य गुरु के पास पहुँचते हैं। गुरु आपके अशुभकार्यों को शुभत्व नहीं कर सकता है। आपके असंभव को संभव नहीं कर सकता है? गुरु अपने आशीर्वाद से आपके कष्टों को दूर कर सकता है। आपको दुःखमय जीवन से निकालकर सुखमय मार्ग की ओर ले जाता हैं। यदि आप चल राशि

भेंटकर गुरु को खरीदना चाहें तो वहां व्यापारिक केन्द्र नहीं है। कोई भी सच्चा गुरु अर्थ के प्रभाव में अपनी साधना को बेच नहीं सकता है। प्रलोभन में आकर आशीर्वाद नहीं दिया जा सकता है। आशीर्वाद तो आपकी आराधना और श्रद्धा में निहित है। आपके अर्थ क्रय-विक्रय को देखकर कोई भी गुरु प्रसन्न नहीं हो सकता है और नहीं असद् कार्य के लिए स्वीकृति दे सकता है। यदि कोई ऐसा कार्य करता है तो वह गुरु पद का अधिकारी नहीं है। अपितु आडम्बरी और मिथ्यावादी है। गुरु शिष्य के संदर्भ में अर्थ, पद, जाति या अधिकार नहीं देखता है। अपितु श्रद्धा, समर्पण, सेवाभाव देखता है। यदि आपका सम्यक् समर्पण है तो गुरु का हृदय स्वतः ही आशीर्वाद से प्रेरित होगा। अन्तर्रात्मा से निकले हुए शब्द आशीर्वचन होंगे।

समाज में अधिकांश लोग एक को देखकर स्पर्धा की दौड़ में गुरु के सान्निध्य में जाते हैं। उसे यह आशीर्वाद मिल गया, हमें भी मिल जायेगा। इस चिन्तन को लेकर गुरु के द्वार तक पहुँचते हैं। उन्हें गुरु के व्यक्तित्व, गरिमा, आदर्श के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं है। केवल अपना स्वार्थ सर्वोपरि समझते हैं। तुरन्त लाभ की आकांक्षा ऐसे जीवन में लोगों के प्रति भ्रान्तियाँ पैदा करती है। न तो उनके जीवन में सेवा भाव होता है, न समर्पण की इच्छा। ऐसे लोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए जाते हैं पूर्ण नहीं होने पर निन्दा वचन बोलने लग जाते हैं। गुरु की निन्दा करने से आप अपनी निष्ठा में विकार लाते हैं। अपने संचित पुण्यों का ह्रास करने लगते हैं। आप स्वयं अधोमुखी हो जाते हैं। आपके निन्दा वचनों से गुरु के व्यक्तित्व की हानि नहीं होती हैं क्योंकि जो साधक है निस्वार्थी है, वह ऐसे वचनों से तनिक भी विचलित नहीं होता है। अपने कर्म में अनवरत लगा रहता है। जो साधक अपने संशय को छोड़कर गुरु की शरण में जाते हैं वे निर्भय हो जाते हैं। उन्हें संसार में कोई भी कष्ट नहीं सताता है। श्री कृष्ण ने अर्जुन को शिष्य बनाया तो गुरु का एक ही वचन रहा। **''सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज''** अर्थात् हे अर्जुन ! तमु मेरे शिष्य बन गये हो, तुमने अपने स्वयं का परित्याग कर दिया है। अब सभी विचार-धाराओं, कर्त्तव्यों और संशयों का परित्याग कर मेरी शरण में आ गये हो। अब यह मेरा दायित्व है कि तुम्हे सभी पापों से मुक्तकर, सभी कष्टों से निकालकर, मुक्ति के मार्ग की ओर ले चलूँ। जीवन के लक्ष्य तक पहुँचा दूँ। श्री कृष्ण का वचन सुनकर अर्जुन समर्पित शिष्य की तरह महाभारत के रणांगण में युद्ध करता रहा और विजयी हुआ। यह उदाहरण प्रत्येक शिष्य के लिए उपयोगी है कि वह गुरु के सानिध्य में विवेक का परित्याग कर समर्पित हो जाये। यह समर्पण ही सच्ची गुरु दक्षिणा है।

गुरु पूर्णिमा के दिन प्रत्येक शिष्य सांसारिक कार्यों से मुक्त होकर गुरु के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करता है तथा प्रतिज्ञा करता है कि मैं उनसे निर्देशानुसार मार्ग का अनुसरण करूंगा। गुरु की आज्ञा ही सर्वोपरि होगी। इसी चिन्तन के साथ गुरु का स्मरण करता हुआ अपने कर्त्तव्य और कर्मों में संलग्न रहता है। फूल-माला, शाल, मिठाई, द्रव्य अर्पण करने से गुरु की कृपा नहीं मिल सकती

है। यह कृपा क्रय-विक्रय के योग्य नहीं है। यह तो श्रद्धा सुमन की गंध है। इस गंध को पाकर मानव आशीर्वाद के साथ अपना जीवन सफल करता है। गुरुदेव जिस मार्ग का चयन करें उनके निर्देषानुसार साधना के मार्ग पर अग्रसर हों। कोई भी गुरु आम आदमी को साधना का कठिन मार्ग नहीं बताना चाहता है। सिद्धियां प्राप्त करने के लिए ही कठिन साधनाएँ हैं। गुरु के पास सबसे सहज उपाय है, अपने गृहस्थ का कर्त्तव्य पालन करता हुआ परहित का चिन्तन करें। परहित में सभी सद्वृत्तियों का समावेष हो जाता है और मानव इस मार्ग पर चलता हुआ सुख-शान्ति को प्राप्त कर लेता है।

गुरु के प्रति संशय का जन्म नहीं होना चाहिये। बहुत से लोग भ्रान्तियों में जीते हैं। गुरु सहजयोगी एवं निःस्वार्थ साधक है। उनके जीवन से कुछ ग्रहण करने की लालसा होनी चाहिये न की फल प्राप्ति की। कुछ लोग ऐसे तुलना करने को आतुर हो जाते हैं। नकल करने से अभीष्ट सिद्धि नहीं हो सकती है। ज्ञान तो स्वयं झलकता है। तपस्या झलकती है। वाणी स्वयं सत्य का अनुसरण करती है। गुरु के जीवन को देखकर ईर्ष्याग्रस्त होना स्वयं का विनाश करता है। गुरु के सान्निध्य में रहकर अनेक आदर्शों की पालना, उनके गहन चिन्तन का अनुसरण करना, साधना का निर्वहन करना सच्चे शिष्य के लक्ष्य हैं। यदि किन्चित प्राप्ति के बाद अहंकार से ग्रस्त होकर मंझधार में ही ठहर जाता है। सागर ने उस पार नहीं पहुँच पाता है। जबकि लक्ष्य यह होना चाहिए कि मैं मानवजीवन के प्रमुख लक्ष्य को प्राप्त कर सकूं। कई सज्जन महाराज के आचरण की निन्दा करते हैं। कई उनकी वेश-भूषा पर व्यंग्य करते हैं। कुछ लोग उनकी लालसा वृत्ति की समीक्षा करते हैं। भौतिकता और विलासिता में डूबकर छिन्द्रों को देखने लगते हैं। कोई भी व्यक्ति यह नहीं चाहता है कि पूर्णत्व की ओर जाने के लिए कौनसा मार्ग सहायक होगा? गुरु के प्रति श्रद्धा और सेवा भाव से आयु, यश, धन की वृद्धि होती है। गुरु की कृपा से ही व्यक्ति आजीवन निरोगी रहकर सहनीय कार्यो में लगा रहता है। गुरुजन कभी भी अपने अहंकार का प्रदर्शन नहीं करते हैं। न अपनी साधना का विज्ञापन करते है न कि आशीर्वाद के फल बांटते हैं और न ही किसी को श्राप के अंगारों में जलाते हैं। व्यक्ति अपने पाप-पुण्य के इशारों से मरता और जीता है। गुरु तो उसे अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाता है। अतः गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा और सम्पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है। जो लोग गुरुजन के प्रति श्रद्धा भाव रखते है सेवा में लगे रहते हैं, उन पर अयाचित कृपा होती रहती है और वे अपने जीवन को धन्य कर लेते हैं।

एक व्यक्ति आश्रम में एक फल लेकर प्रतिदिन जाता। गुरु के चरणों में नमन कर फल को अर्धरूप में समर्पित कर देता, वह निर्विकारी गुरु कृपा से भाग्यशाली हो गया और सुख-वैभव के साथ जीवन जीने लगा। उसे देखकर अन्य भी आश्रम में जाने लगे। मिठाई के डिब्बे और फलों के टोकरे लेकर जाते थे, किन्तु उन्हें कुछ भी नहीं मिला। ऐसे लोग गुरु की निन्दा करने लगे और आश्रम को आडम्बर का अखाड़ा कहने लगे। उन लोगों ने भी विचार नहीं किया कि मन का विकार

ही सबसे बड़ा शत्रु है। जब तक शत्रु साथ रहेगा, श्रद्धा का जन्म ही नहीं हो सकता है। सेवा की वृत्ति का उदय ही नहीं होगा तो समर्पण का तो प्रश्न ही नहीं है। समर्पण में सबका परित्याग है। कोई भी व्यक्ति अपने मैं का त्याग नहीं करता है। वह 'मैं' में ही जीता है और 'मैं' में ही मरता है। यही कारण है कि छहों शत्रु उसके साथ चिपके रहते हैं। वह कभी भी अनासक्त होकर परहित का चिंतन नहीं कर सकता है। स्वयं के परित्याग के पश्चात् ही परोपकार जन्म लेता है। परोपकार का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। दूसरे असहाय मनुष्यों की सहायता करना, रोगियों का उपचार करना, दुःखियों का आश्वस्त रखना, विधवाओं की सहायता करना, अनाथों के भोजन, वस्त्र की सहायता करना, भटके हुए लोगों को सही रास्ता दिखाना, वृद्धों के प्रति विनम्र भाव व्यक्त करना, जीव-जन्तुओं की रक्षा करना, गौ-शाला, विद्याश्रम, अनाथालय, प्याऊ लगाना, वृक्षारोपण करना आदि सभी कार्य परोपकार की श्रेणी में आते हैं। परोपकार की भावना में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मैं स्व को निकाल दूँ। यदि स्व की भावना है तो यह स्वतः सिद्ध हो जायेगा कि अपने स्वार्थ के लिए परोपकार का प्रदर्शन किया गया है। किसी को कुछ भी देने से पहले लेने की अपेक्षा नहीं करना चाहिए। क्योंकि लेना भी लालसा का द्योतक और लोभ की परिभाषा में आता है। बहुत कुछ देने पर भी प्रदर्शन नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह अहंकार की श्रेणी में आता है। गुरु भी वही हैं जो अहंकार शून्य हैं। यदि वह किसी शिष्य को ज्ञान देकर अथवा वरदान देकर यदि विज्ञप्ति करता है कि यह सब मैंने किया है तो वह अज्ञानी है। क्योंकि ईश्वर ने उसे जो कुछ भी दिया है वह वितरित करने के लिए दिया है। संचय करने के लिए नहीं यदि संचय की वृत्ति है तो व्यक्ति जीवन में कुछ नहीं कर पायेगा। बहुत से ज्ञानी लोग गुरु प्रदत्त ज्ञान को अथवा साधना सिद्ध ज्ञान को दूसरों को वितरित नहीं करते हैं, योग्य पात्रों को प्रदान नहीं करते हैं तो ज्ञान स्त्रोत उनके साथ ही समाप्त हो जाता है। परम्परा से प्राप्त विद्या विलुप्त हो जाती है। बहुत बड़ी सांस्कृतिक हानि होती है। ज्ञानी यही समझता है कि श्रेष्ठ पात्र का चयन नहीं हुआ। अतः ज्ञान देने से दुरूपयोग हो सकता है। किन्तु ज्ञानी व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए अथवा अपने अहंकार की पूर्ति के लिए ज्ञान का दुरूपयोग नहीं करेगा गुरु के बताये हुए मार्ग पर विधि विधान से अपने व्यक्तित्व का निर्माण करें। ज्ञान को शुभकार्यों में लगाकर लोगों का परोपकार करें यही श्रेष्ठ धर्म है, यदि सच्ची साधना है और यही ईश्वर प्राप्ति का माध्यम है। सद्वृत्तियों का उदय होने से दुष्प्रवृत्तियाँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं। सद्संगति मानव जीवन का परिष्कार कर देती है। उसे संस्कारवान बना देती है और वह अपने आप में निर्मल जीवन जीने लगता है।

आश्रम का निर्माण

जब कोई साधक परोपकार में संलग्न होना चाहता है तो उसे स्थान भी निर्धारित करना होता है। चाहे वह सद्गृहस्थ हो या सन्यासी। एक सुनिश्चित स्थान होना आवश्यक है। जबकि महात्मा लोग पर्यटन प्रिय होते हैं। चतुर्मास में विभिन्न स्थानों में जाकर प्रवचन देते हैं और लोगों को सन्मार्ग का

रास्ता दिखाते हैं। सभी लोग तो महात्माओं के साथ नहीं चल सकते हैं। अतः गुरु का एक निश्चित स्थान होना आवश्यक है। जहाँ गुरु बैठते हैं वही आश्रम होता है। गुरुदेव के आश्रम में देव प्रतिष्ठा, यज्ञ, विद्यान, गौसेवा, अतिथि सेवा, सत्संग आदि सभी तो कार्यक्रम होते रहते हैं। इन सभी प्रवृत्तियों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। यह एक दूसरे की पूरक हैं। आश्रम में देव प्रतिमाओं के समक्ष बैठकर भक्त आराधना करते हैं, भक्ति के स्वर गूंजते हैं। आत्मा का उदय होता और आनन्द की अनुभूति होती है। नवधा भक्ति का केन्द्र ही आश्रम कहलाता है। महामना प्रातः स्मरणीय गुरुप्रवर श्री सुदर्शनचार्य जी ने दिल्ली से बाहर फरीदाबाद नगर के बाहर सूरजकुण्ड के पास बडखल रोड पर भूमि की व्यवस्था की ओर इस विशाल परिसर को आश्रम का रूप दिया। इस आश्रम में दिव्य मंदिर की स्थापना की जहाँ वेदव्यास, राम परिवार, राधाकृष्ण, नृसिंहलक्ष्मी, वागीश्वरी, शक्ति के प्रतीक हनुमान आदि सभी देवताओं की प्रतिष्ठा की। यहाँ आश्रम में रामानुज सम्प्रदाय की परम्परा के अनुसार सभी प्रतिमाओं की शास्त्रीय विधि से पूजा-अर्चना होती है। भक्त लोग इन दिव्य प्रतिमाओं के दर्शन पाकर विकार रहित होते हैं और मन में संतुष्टि मिलती है। मंदिर के परिसर में ही वैदिक पाठशाला है। भारतवर्ष में प्रकाण्ड पंडित वेद विज्ञान विद्यार्थियों को वेदों का शास्त्रीय अध्ययन कराते हैं। प्रथम तो आर्यावर्त की वैदिक संस्कृति की रक्षा होती है। विद्यार्थी जो कि असहाय हैं जिनके पास दैनिक व्यवस्था भी नहीं है, जो सन्मार्ग को छोड़कर भ्रान्त हो रहे है। ऐसे बच्चों की यहाँ प्रवेश दिया जाकर उनकी पूर्ण व्यवस्था आश्रम करता है तथा इन्हें सन्मार्गी बनाता है। यह दिशाबोध के लिए परमयज्ञ है। आश्रम के एक ओर स्वस्थ पयस्विनी गायों का समूह है जो देवता और अतिथियों के लिए सत्कार के लिए काम में जाता है। देश-परदेश से अनेक भक्त आश्रम में आते हैं और शान्ति प्राप्त करने के लिए गुरु चरणों में रहना चाहते हैं और सत्संग में सम्मिलित होना चाहते हैं। उनके लिए आश्रम के स्थान और भोजन की पर्याप्त व्यवस्था है। गुरुजन अपनी साधना से निवृत्त होकर भक्तों को प्रवचन देते हुए सन्मार्ग के लिए तथा कर्मवाद में रहने के लिए संदेश देते हैं। अतः आश्रम व्यवस्था आवश्यक है। कहा भी गया है वह स्थान ''भ्रष्टा न शोभन्ते''। स्थान आवश्यक है किसी भी साधन के लिए एक सुनिष्चित स्थान की आवश्यकता होती है। जहां पर आसन बिछाकर साधक मंत्र जाप करता है, साधना करता है एवं पुण्य को संचित करता है। इसी संचित पुण्य को वह अपने शिष्यों को वितरित कर लोगों के कष्ट को दूर करता है। कोई भी महात्मा या अपने स्वार्थ के लिए पुण्य का संचय नहीं करता है। उसका जन्म तो परोपकार के लिए ही हुआ है। परहित साधना ही उसका कर्म है। यदि वह अपने आसन पर नहीं बैठेगा तो पुण्य का संचय कैसे होगा? जब खजाना ही खाली हो गया तो बांटेगा क्या? अतः साधक के लिए निष्चित स्थान पर होना आवश्यक है।

कुछ आधुनिक अपने आपको बाबा कहने वाले व्यक्ति साधना और भक्ति का दुरूपयोग करते हैं। ऐसे आश्रम आश्रम नहीं, अपितु विश्राम स्थल हैं। नाना प्रयासों से भीड़ का एकत्र कर अपने आपको

ईष्वर का अंशावतार बताकर तांत्रिकी विधानद्वारा सम्मोहित कर धन लूटने वाले यह लोग धर्मवंचक हैं। झूठे आश्वासन देकर लोगों को भ्रान्त करते हैं उनके परिवार के साथ खेल करते हैं। उनके जीवन मूल्यों के साथ रास करते हैं। ये साधु नहीं धर्म की आड़ में छिपे हुए लुटेरे हैं।

धर्मस्थान की विशेषता है जहाँ व्यक्ति को अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर जाया जाये। कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाये। अज्ञान से ज्ञान की ओर प्रेरणा देना ही आश्रम का मूल मंत्र और गुरु का कार्य है। आश्रम व्यवस्था सन्मार्गियों का केन्द्र है जहाँ गुरु के सान्निध्य में बैठकर विष्य अनासक्त होना चाहता है। प्रातः स्मरणीय श्री सुदर्शनाचार्य जी की दिव्यता मन को आकर्षित भी करती है। गुरु समाधि पर जाने पर मानव मन विकार रहित हो जाता है। गुरुदेव का आश्रम ब्रह्म का मंदिर है। परमात्मा का वह केन्द्र है जहाँ आत्माएँ निराशा में अंधकार से निकालकर आशा और विश्वास के साथ जीवन जीती हैं। हमें पूर्व में ही बता चुके हैं कि उसे के संरक्षण के अभाव में कोई भी साधना सफल नहीं हो सकती है। गुरु नाम का संकीर्तन ही महामंत्र है। उनका ध्यान ही दिव्य दर्षन है शिष्यगण उनके नाम को ही प्रणाम कर श्रेष्ठ कार्यो का संचालन करते हैं और सफल होते हैं।

श्री सुदर्शनाचार्यजी की कृपा के संदर्भ में उसके शिष्य श्री रामेश्वर सिंह जी ने कुछ लिखा है वे शब्द आचार्य जी की महिमा को व्यक्त करते हैं। उनकी साधना शक्ति को परिभाषित करते है।

''मैं सन् 1986 में श्री गुरु महाराज जी के सम्पर्क में आया। पिछले 20 वर्षो में मेरे जीवन में अनेक अद्भुत घटनाएँ घटित हुई हैं। उन घटनाओं को यदि चमत्कारों की संज्ञा दी तो अतिषयोक्ति नहीं होगी। जब मैं गुरु भक्तों से उनके जीवन में बीती चमत्कारित घटनाओं को सुनता हूँ तो मुझे उन पर पूर्ण विश्वास होता है क्योंकि मेरे अपने जीवन में अनेक चमत्कारिक घटनाएँ घटी हैं। श्री गुरुमहाराज के सम्पर्क में आने से पहले जब कोई चमत्कारिक घटनाओं की बात करता था तो विश्वास नहीं होता था। लगता था कि या तो वह व्यक्ति ढोंगी है या फिर उसके मस्तिष्क की कोई नस ढीली हो गई है। गुरु कृपा से आज सब कुछ स्पष्ट हो गया है। परमात्मा और परमात्म स्वरूप सद्गुरु अपने भक्तों के लिए कुछ भी कर सकते हैं। वह भक्तों के लिए सांसारिक नियमों को तोड़ देते हैं।

मुझे बचपन से ही धार्मिक एवं दार्शनिक पुस्तकें पढ़ने में रूचि थी। मैने नास्तिक दार्शनिकों की भी पुस्तक पढ़ी हैं, जैसे कार्ल माक्स, बर्टेउ्ड रस्सेल आदि की ओर धार्मिक दार्शनिकों की भी पुस्तकें पढ़ी हैं। स्वामी विवेकानन्द, अरबिन्द घोष आदि। रजनीश (ओशो), महात्मा गांधी और दूसरे कई संत महापुरूषों की पुस्तकें पढ़ी हैं।मैंने आर्य समाज, समानत धर्म के प्रकाण्ड विद्वानों को सुना है। राधास्वामी मत की भी पुस्तके पढ़ी हैं, गीता और रामचरितमानस को भी पढ़ा है। उपरोक्त कारणों से मेरे मन में, मस्तिष्क में, परमात्मा देवी-देवता, पितर, गुरु, जीवात्मा, आवागमन, मानव लक्ष्य आदि के प्रति कोई ठोस धारणा नहीं बन पाई। इन सबका कोई अस्तित्व है या नहीं मैं कुछ नहीं

कह सकता था। धारणा यह थी कि हो भी सकता है और नहीं भी। मैं न आस्तिक था और न नास्तिक ही। श्री गुरु महाराज के सम्पर्क में आने से आहिस्ता-आहिस्ता वह शंकारूपी धुंध छट गई। परमात्मा पर, उसके विधान पर देवी-देवताओं, पितरों, गुरु, कर्म सिद्धान्त, मानव लक्ष्य आदि पर अटूट विश्वास बन गया। आज हजार नास्तिक कहें कि परमात्मा, आत्मा कुछ नहीं है, देवी-देवताओं का कोई अस्तित्व नहीं है, पितर आदि सब ढोंग हैं, उनका मुझ पर कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है क्योंकि श्री गुरु महाराज न केवल वाणी के द्वारा अपितु प्रत्यक्ष प्रमाण देकर निजी अनुभव कराकर, सिद्ध किया है सनातन धर्म की मान्यताएँ 100 प्रतिशत सच्चाई पर आधारित हैं। अब मुझे कोई व्यक्ति विचारधारा से डगमगा नहीं सकता।

श्री गुरु महाराज की कृपा से आज मेरे मन में भविष्य के प्रति कोई चिन्ता नहीं, कोई भय नहीं, कोई दुविधा नहीं है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि परमात्मा तत्व हर समय, हर जगह मौजूद है। वह पूर्ण न्यायकारी है और शरणागत के लिए पूर्ण दयालू है। शरणागत के दुःखों को मिटाने के लिए परमात्मा व गुरु दोनों ही अपने नियमों को तोड़ देते है, ऐसा मैंने अनुभव किया है और मेरा पूर्ण विश्वास है।

हमारे कर्मो के फल के रूप में दुःखमय व सुखमय परिस्थितियाँ आती-जाती रहती हैं, परन्तु इनमें दुःखी होना या सुखी होना मूर्खता है। हमें हर परिस्थिति में सम रहना उसका सदुपयोग करना चाहिए। प्रभु समर्पण के बिना समभाव का आना संभव नहीं है। प्रारब्ध के अनुसार अच्छी-बुरी परिस्थितियाँ आती रहेंगी। उनको सहन करना है और सद्कर्म करने से कभी पीछे नहीं हटना है।

कई शिष्यों से एक बड़ी गलती यही हो रही है कि उन्होंने अपने आपको भौतिकवाद तक ही सीमित कर रखा है। उन्होंने आध्यात्मिक हीरे-जवाहरात की अपेक्षा भौतिकवाद के कंकड-पत्थरों को अधिक महत्व दिया हुआ है। वे अपने मन की इच्छाओं की पूर्ति चाहते हैं। वे गुरुवचनों पर विश्वास नहीं करते, उनको नहीं मानते यही कारण है कि उनका विश्वास डगमगाता रहता है, भटकाव बना रहता है। हर समय अपने दुःखड़े रोते रहते हैं, रात-दिन परनिन्दा में लगे रहते हैं। सुख शान्ति मिले तो कैसे मिलें? अगर हमें सुख शान्ति चाहिए तो हमें श्री गुरु महाराज के वचनों पर विश्वास करना ही पड़ेगा। उनके सिद्धान्तों पर चलना ही पड़ेगा। नहीं तो सपने में भी शांति नहीं मिलेगी। मानने में आया है -

गुरु के वचन प्रतिदिन जेही।
सपनेहूं सुगम न सुख सिधितेही।।

मानस में ही एक और जगह लिखा है कि मानव काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि अनेक रोगों से पीड़ित है। इन रोगों से बचने के लिए गोस्वामी जी लिखते हैं -

सद्गुरु बैर वचन बिस्वासा।
संजम यह न शिष्य के आसा।

सद्गुरु के वचनों पर श्रद्धा विष्वास करने से और उन पर चलने से ही ये लोग अर्थात् काम, क्रोध आदि नष्ट होंगे। भगवान श्री कृष्ण ने गुरु रूप में अर्जुन को उपदेश दिया था। उन्होंने कोई जादू नहीं किया। उन्होंने केवल उपदेश दिया जो अर्जुन ने स्वीकार किया। अन्त में अर्जुन ने भगवान को यही ''मेरा मोह भंग हो गया है। मैं आपके वचनों के अनुसार काम करूंगा''। हम श्री गुरु महाराज पर अनेक वचनों पर विश्वास और श्रद्धा रखें, उनको धारण करें, हमारे जन्म जन्मांतरों के पाप नष्ट हो जाऐंगे और हम निष्पाप होकर उस स्थान को अवश्य प्राप्त करेंगे जहाँ जाकर फिर यह जीवन मृत्युलोक में वापिस नहीं लौटता, परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है। यही जीवन का लक्ष्य है। जैसे मुझे गुरु कृपा प्राप्त हुई है, वैसे ही अनेक गुरुभाइयों को भी गुरु कृपा प्राप्त हुई है। दृढ़ आस्था और विश्वास की आवष्यकता है।

गुरु गरिमा

गुरु दूर बैठकर भी अदृश्य दृश्यों को देख लेता है। यदि शिष्य में मन में गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा होती है तो वह गुरु को नमन करता हुआ विकट परिस्थितियों से नहीं निकल जाता है। चारों ओर से आपदाओं के आने पर मृत्यु को सन्निकट देखते हुए गुरु के आशीर्वाद से अपने को बचा लेता है। ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। अभी केदारनाथ हादसे में कई उदाहरण सामने आए हैं जो गुरुदेव का स्मरण करते हुए भीषण बाढ़ की चपेटों से निकलकर गुरु कृपा के महत्व को स्वीकारते हैं। यह सत्य है जिस पर गुरु की कृपा होती है, वह अपने जीवन में मुसीबतों के पर्वत भी लांघ लेता है। गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा होनी चाहिए। संकल्प और समर्पण के साथ शिष्य बनना चाहिये। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जब उपदेश दिया तब अर्जुन ने अपने आपको समर्पित शिष्य बनकर भगवान से कहा -

यच्छेयः स्यान्निष्चितं ब्रूहि तन्मे।
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।

अर्थात् अर्जुन पूर्णरूपेण यही कहता है कि मैं आपकी शरण में आया हुआ शिष्य हूँ जो मेरे लिए कल्याणकारक मार्ग हो उस मार्ग पर चलने का निर्देष दीजिए। मैं आपकी आज्ञा का अक्षरषः पालन करता हुआ लक्ष्य प्राप्त कर सकूँ। क्योंकि आप मेरे गुरु हैं और गुरु की शरण लेना सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। गीता में कहा भी गया है -

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।

अर्जुन ने कृष्ण को गुरु माना। गुरु के वचनानुसार से संग्राम में युद्ध करता हुआ विजय को प्राप्त हुआ। यहाँ यह बात समझने योग्य है कि गुरु के वचन को विवेक से धारण करना चाहिये और अक्षरशः से पालन करना चाहिये। जहाँ ज्ञान विद्यमान है, वहाँ विजय अवश्यम्भावी है। गुरु पूर्णिमा के दिन परम आराध्य गुरुदेव की पूजन अपने मूल मंत्र की पूजन है, ब्रह्म का पूजन है अतः इस अवसर

का किसी भी कारण से त्याग नहीं करना चाहिये। इसी दिन गुरु आशीर्वाद प्रदान करता हुआ आपको एक वर्ष के लिए अभयदान देता है। गुरु के हृदय में आपका स्थान बन जाता है। जैसे हरि सर्वव्यापक अन्तर्दृष्टा है वैसे ही आपके आराध्यदेव गुरुजी भी आपके द्वारा स्मरण किये जाने मात्र से ही उपस्थित हो आपको बाधाओं से बाहर निकाल लेते हैं। आपका आभास भी नहीं हो पाता है कि मैं विपदाओं के चक्रव्यूह को तोड़कर खुली हवा में कैसे आ गया? भगवन् सर्वत्र व्याप्त है, अणु-अणु में विद्यमान हैं-

हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम से प्रकट होई मैं जाना।।

भगवान को प्रसन्न करने के लिये सेवा-व्रत और आस्था होना आवश्यक है, वैसे ही गुरु-कृपा के निमित्त श्रद्धा और प्रेम का संयोग होना चाहिये। प्रेम पराकाष्ठा का प्रतीक है। जब गुरु से स्नेह हो जाता है तो गुरु के दर्शन के बिना विकलता बढ़ जाती है। गुरु का आशीर्वाद मिलने पर ही आत्मिक शांति प्राप्त होती है। शिष्य को गुरु चरणेभ्यो नमः का बार-बार उच्चारण करना चाहिये आपकी यह विनम्रता अनुरोध में परिवर्तित हो आकर्षण बन जायेगी। किसी ने कहा भी है -

मोहे लागी लगन गुरु चरणन की।
चरणन बिन मोहे कछु नहीं भावै।।

गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा होनी चाहिये। मनसा वाचा एवं शरीरेण समर्पण ही आपका सेवाव्रत है। आप गुरु-चरणों में अपना ध्यान रखते हुए मूल मंत्र का जप करते रहिये, गुरुदेव आपको अवश्य ही शरण प्रदान करेंगे। गुरु सामान्य व्यक्ति नहीं है। वे अपने तपोबल और साधना के फलस्वरूप सामान्य से असामान्य रुप में आ गये। ईश्वर की कृपा से वैशिष्टय प्राप्त कर लिया। ब्रह्म ने वर देकर शक्तियाँ प्रदान कर दी जिससे वे आम लोगों के कष्ट को दूर कर सकें, उन्हें विपदाओं से मुक्त करें, माया-मोह के कीचड़ से बाहर निकाल कर शक्ति के मार्ग से नरत्व के लक्ष्य तक ले जाये। अतः गुरुदेव को सर्वशक्तिमान स्वीकार कर उनकी अर्चना, पूजन एवं स्मरण करना चाहिये। गुरु में ही ईश्वर समाहित है। किसी चिन्तक ने गुरु के संदर्भ में कहा भी हैः-

गुरु ही ब्रह्म, गुरु ही वेद ग्रंथ,
गुरु में सर्वस्व, गुरु ही सत्यार्थ।।

गुरु की सेवा में रहने के पश्चात् आपको देवालयों में जाकर विग्रहों के समक्ष याचना नहीं करनी है। न कर्मकाण्ड के मार्ग पर चल कर अनुष्ठानादिक करने हैं, न मंत्रोच्चारण के स्वरों के साथ जपादिक कार्य करने है।

आपको घोर तपस्या का परिश्रम नहीं करना है और नहीं ब्रह्म सूत्र के भाव्यो को पढ़ना है क्योंकि गुरु ने सभी शास्त्रों का सार प्रवचन में कह दिया है। यही प्रवचन ज्ञान का भण्डार है। न तीर्थों पर घूमने की आवश्यकता, न यज्ञादिक कार्यों की आवश्यकता केवल गुरुजन वचन मात्र ही आपके

लिए अमृत जल है। गुरु के बताये हुए मार्ग का अनुसरण करें। सभी अतर्द्वन्द्वों से मुक्ति मिल जायेगी और आपकी श्रद्धा फलवती होकर मानस में शान्ति ओर तृप्ति देगी।

मैं क्या जानूँ मीमांसा-वेदान्त वचन।
जब वेद बने गुरु-मुख के वचन।।

साथ ही कहा गया है कि दर्शन शास्त्र गुरु मुख में विद्यमान है। अन्य शास्त्रों के पठन-पाठन की आवश्यकता ही नहीं है मैं वेदान्त के रहस्य को क्या समझ, मीमांसा के वितण्ड्रवाद में क्यों उलझूँ, योग शास्त्र वा व्यायाम क्यों करें, पतंजलि दर्शन को समझ कर क्या करूंगा। ये सभी मार्ग हैं। सभी का अनुसरण करने पर उलझन के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। अतः जीवन दर्शन को समझने के लिए गुरुमुख का वचन ही सम्पूर्ण दर्शन है। जीवन-मृत्यु का ज्ञान है। जीवन में जब जन्म-मरण के रहस्य को समझ लिया तो वृहद् ग्रंथों के अध्यायों के अध्ययन से अर्थ नहीं है। गुरुदेव ने एक ही शब्द में समझा दिया श्रद्धा और समर्पण में ईश्वर है। अतः गुरु के वचन का पालन करना ही हमारे लिए कल्याण कारण है। महामना तुलसीदास ने भी इसी वाक्य को बोध की दृष्टि से कहा है -

कलियुग जोग न जग्य न ज्ञाना। एक आधार राम गुण गाना।।

यह समय कलियुग का है। कलिकाल भौतिकता से परिपूर्ण है। सर्वत्र ऐश्वर्य और विलासिता का साम्राज्य है। इस युग में मानवता के आयाम परिवर्तित हो चुके हैं। हर मानव स्वयं की पूर्ति के लिए संकल्पशील है। परहित की कामना का जन्म ही दुर्लभ है। आम आदमी येन-केन-प्रकारेण अपने सुख के लिए भाग दौड़ रहा है। अपने कार्यों में लिप्त है। असत्य आश्रय प्राप्त कर मिथ्या व्यवहार के द्वारा लोगों से वचना कर संचय एक करने में लगा हुआ है। जब माता-पिता के प्रति ही दायित्व निर्वाह की भावना नहीं है तब भला ईश्वर के प्रति भावना का उदय कैसे हो सकता है? यही कारण है कि मनुष्य सब कुछ पाकर भी असंतुष्ट सा अनुभव करता है। समृद्धि ही संत्रास का कारण बन जाती है। शंकाएं संशय के शूल बनकर चुभने लगती है। मानव मन का विश्वास डगमगाने लगता है। तब अशान्त मन हो गुरु की शरण में जाना चाहता है। गुरुदेव ईश्वर का स्मरण बताते हैं। इसके माध्यम से ही जीवन लक्ष्य सफल हो सकता है। गुरु ही ईश्वर तक पहुँचा सकता है -

गुरु विन राम को, किण विध पहचाना।
गुरु के ज्ञान ते, ब्रह्म रूप सब जाना।।

गुरुदेव सर्व व्यापक हैं। पूर्ण सामर्थ्य है। गुरुदेव ही ऐसे साधन हैं जो सहज मार्ग से ईश्वर के दर्शन करा सकते हैं। अन्य सभी साधन विरल हैं, लम्बी अवधि के प्रयास हैं। आत्मा और परमात्मा के मध्य विशाल व गहरा सागर है। गुरु ही सेतु का स्वरूप धारण कर साधना के माध्यम से शिष्य को उस पार ले जाकर श्रद्धा और समर्पण का भाव पढ़ाकर अर्पण की शिक्षा देता है तब ईश्वर का सामीप्य प्राप्त होता है। यदि गुरुदेव की कृपा नहीं हो तो समर्पण के भाव ही उदित नहीं होंगे। गुरु

कृपा के लिए किसी राजनैतिक दबाव या अर्थ के सन्दूक काम नहीं करते। गुरु कृपा तो सहज आशीर्वाद है जो शिष्य के सदाचारपूर्ण तथा सेवा के कारण गुरु कृपा सहज ही प्राप्त हो जाता है। गुरुदेव समदर्शी हैं, उनका किसी के प्रति विशेष आग्रह अथवा पक्षपात नहीं होता है। शिष्य की अगाध श्रद्धा के वशीभूत गुरु ईश्वर के प्रति भक्ति का उदय कराते हैं। ईश्वर प्राप्ति के लिए गुरु का नाम स्मरण रहना ही पर्याप्त है। किसी दर्शनवेता ने लिखा है -

गुरुर्नाम केवलम्

केवल गुरु नाम के संकीर्तन से ही शिष्य याथापोह के दलदल से निकलकर भवसागर को प्राप्त कर सकता है। मानव के चारों ओर मोह, लोभ, माया, क्रोध आदि शत्रु उसे विचलित करने के लिए हमेशा प्रयत्न करते रहते हैं। व्यक्ति का मोह सहज रूप से नहीं टूटता है। जब वह मोह नहीं छोड़ पायेगा तब तक उसका मन निर्मल नहीं होगा। जब तक मन में विकृतियाँ रहेंगी तब भला वह सुकृति मार्ग अनुसरण कैसे कर सकता है। विकृतियों के साथ किया हुआ पुण्य कार्य भी पाप की संज्ञा में आ जाता है। तप, तीर्थ, दान, पुण्य, यज्ञ, अनुष्ठान करते समय भी मन विकार युक्त रहता है। आकांक्षाए और लालसाएँ नाचती रहती हैं तब भला पुण्य के मार्ग का अनुसरण कैसे किया जा सकता है? तनिक सी बात पर क्रोध करने पर भी इन्द्रिय निग्रह की स्थिति समाप्त हो जाती है। इन्द्रिय विकार आने पर महापुण्य भी विनष्ट हो जाता है। मन से सात्विक विचारों की उपस्थिति से सतोगुणी भावना का उदय होता है। व्यक्ति के हृदय से तामसीवृतियों का विनाश होता है। मन को निर्मल करने के लिए किसी साबुन की आवश्यकता नहीं है न किसी प्रकार का कैमिकल ही काम आ सकता है। गुरु के सानिध्य में पहुँचकर श्रद्धा सहित समर्पण करने पर मन की वृतियों का निग्रह होता है तथा विमलता का समावेष आता है। निर्मल हृदय गुरु के सानिध्य में बैठकर ईश्वर को पाता है और ईश्वर के प्रति भक्तिमय हो जाता है। किसी ने सत्य ही कहा है -

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धीरअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।

गुरु सेवा में ही स्वर्ग का सुख है। गुरु की सेवा करने पर मन को शान्ति मिलती है, कष्टों से मुक्ति मिलती है, विफलताएं दूर भागती हैं, मानव सामन्जस्य और सहयोग से जीवन जीने लगता है। उदार इन्द्रियों के उदय होने पर मानव को समाज में सम्मान मिलता है तथा उसकी आर्थिक वृतियों को बल मिलता है। वह अपनी साधना के पथ पर चलता हुआ सिद्धि की ओर अग्रसर होता है। जो व्यक्ति साधना में असफल होते हैं वहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि शिष्य की भावना में कोई विकार है। जब शिष्य के मन में विकार का जन्म हो जाये या अहं की जागृति हो जाये तो वह शिष्य के योग्य नहीं रहता है। क्योंकि अहं विनाश का कारण है। स्व का परित्याग कर परहित के लिए जीना ही शिष्य का परम धर्म है। इस मार्ग पर चलते हुए वह गुरु कृपा से ईश्वर में तन्मय हो जाता है।

परमाणु का अणुपिण्ड में समावेश हो जाता है।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को ही गुरु दिवस माना गया है। यह दिन चातुर्मास में आता है। गुरुजन इस अवधि में पर्यटन नहीं करते हैं, एक ही सुनिश्चित स्थान को अपना साधना-केन्द्र बना कर अपनी ऊर्जा का संचय करते हैं, सदुपदेष पूर्ण प्रवचन देकर जिज्ञासुओं की ज्ञान-पिपासा को अमृत प्रदान करते है। इसी दिन दूर व अति दूर से भी शिष्यगण गुरु-चरणों में प्रणाम कर आशीर्वाद ग्रहण करने के लिए आते हैं। इस अवसर पर सभी शिष्य परस्पर मिल भी लेते हैं। यह श्रद्धा का दिवस है। गुरु के चरणों में समर्पित होकर जीवन सफल होने की याचना करता हुआ आशीर्वाद प्राप्त करता है। ''एक साधे सब सधे'' के अनुसार जीवन में किसी एक गुरु को ही स्वीकारना चाहिये। अनेक गुरुओं को स्वीकारने से किसी का भी आशीर्वाद सफल नहीं होता है। कहा भी गया है कि ''सात मामाओं का भानजा भूखा ही सोता है।'' अतः एक ही गुरु के निर्देशन में मार्ग का अनुसरण करना लाभकारी सिद्ध होता है। गुरु के सन्निध्य में निर्मल मन से स्थान ग्रहण करें। प्रत्येक शिष्य के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

1. मन में श्रद्धा होनी चाहिये।
2. गुरु की निन्दा न करें।
3. मन में शुचिता हो।
4. किसी भी लाभ लालच की भावना न हो।
5. गुरु की आज्ञा सर्वोपरि है।
6. गुरु - निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करें।
7. चमत्कार की अपेक्षा न करें।
8. मन में छिपाकर बात न करें।
9. सेवा और समर्पण से सब कुछ प्राप्त हो सकता है।
10. मंत्र-दीक्षा विधिवत् प्राप्त करें।

जब शिष्यत्व ग्रहण कर ले तो गुरु-निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करते हुए शिष्य

सर्व-बाधाओं से मुक्ति पा कर अपने जीवन को सुखमय व्यतीत करता है। गुरू-कृपा सभी शिष्यों पर होती है। गुरु में समभाव होता है, किसी के प्रति पक्षपात नहीं होता है। गुरु का जीवन आदर्श निष्ट होता है। प्रत्येक प्राणि-मात्र के प्रति उदार दृष्टि और सदाशयता होती है। सभी प्राणियों का सहयोग करना ही स्वभाव होता है। समाज के हित कार्य करना, भक्ति के माध्यम से सत्संग की ओर प्रेरित कर मुक्ति मार्ग की ओर प्रवृत्त करना है। परोपकार की भावना ही जीवन की साधना है, शिष्यों को दुविधाओं से निकाल कर निश्चय की ओर प्रेरित करना ही धर्म है। गुरुजन किसी स्वार्थवश किसी की सहायता नहीं करते हैं। रंक से राजा तक एकाग्र भावना रहती है।

गुरु ईश्वरतुल्य है, उनकी पूजा अपने संरक्षक की पूजा है। एक दिन की पूजन-अर्चना से वर्षभर आशीर्वाद मिलता है। इस दिन श्रद्धा-सहित गुरु के प्रति पूजा-भाव रखना चाहिये। सामर्थ्य के अनुसार तिलक, यज्ञोपवीत एवं द्रव्यादिक दक्षिणास्वरूप अर्पित करना चाहिये। अब यहाँ प्रश्न उपस्थित होता है - ''दक्षिणा क्यों ? इसका उत्तर यही है कि गुरु आपसे कुछ भी नहीं कहता है। अपनी कृपा का पारिश्रमिक नहीं माँग रहा और न ही स्वार्थवश दक्षिणा ग्रहण कर रहा है। आप द्वारा अर्पित द्रव्य परहित के ही काम आ रहा है। गुरु इस दक्षिणा की राशि को परोपकार में लगा कर प्राणि-मात्र की रक्षा कर रहा है। एक दिन का अर्पण आप ही लोगों के काम आ रहा है। दक्षिणा के प्रति बाध्यता नहीं है, यह तो श्रद्धा और समर्पण का विषय है। इसका पुण्य भी आपकी के खाते में जा रहा है। इस पुण्य का फल आपको ब्याज सहित मिल रहा है। अतः गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पुण्य अर्जित करने में लाभ ही लाभ है। आपके द्वारा अर्पित एक-एक कण का सदुपयोग हो रहा है और आपकी पुण्य राशि में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

गुरु-पूर्णिमा के अवसर पर यथास्थान जाकर गुरु के प्रति सद्भाव, श्रद्धा और सेवाभाव प्रकट करते हुए अपने समर्पण को अर्पित करना जीवन के लिए श्रेयस्कर है। प्राचीन काल से कृषिकुल की यह परम्परा अक्षुण्ण रूप से चलती आ रही है। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध पवित्र बंधन है। ईश्वर की भांति गुरु अपने शिष्यों का सदैव ध्यान रखते हैं।

विश्वं वसुधैव कुटुम्बकम्

सन्त लोगों के लिए यह सम्पूर्ण संसार ही परिवार है। विश्व का प्रत्येक प्राणी उनके परिवार का सदस्य है। उनका अपना निजी परिवार नहीं होता है, यदि होता है तो समाज ही प्राथमिकता है। किसी एक समुदाय या व्यक्ति -विशेष के प्रति उनका आत्मीय भाव नहीं होता है अपितु सर्वभावेन समभाव होता है। सभी को समान दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि स्व के अभाव में पर के प्रति आत्मभाव की सत्ता रहती है। पर-हित का संकल्प ही कर्म है और इस कर्म में पक्षपात रहता ही नहीं। दूसरों की सहायता करना, पर पीड़ा का अनुभव करना, असहाय लोगों की सेवा करना, सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना ही जीवन का ध्येय रहता है। गुरु जितेन्द्रिय होता है, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और ईर्ष्या का स्पर्श नहीं होता है। सच्चे गुरु को किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति मोह नहीं होता है, आसक्ति विलुप्त हो जाती है। आसक्ति रहित होने पर लोभ विनष्ट हो जाता है। जब लोभ नहीं रहता है तो काम की जागृति ही नहीं होती है। इच्छा शून्य होने पर विकार का जन्म नहीं होता है तो क्रोध का उदय ही नहीं होता है। अपने कर्म को कर्त्तव्य मान लेता है तो अहं की जागृति नहीं होती है और अन्तर्मुखी तथा संतुष्ट होने पर ईर्ष्या रहती ही नहीं। अतः गुरु इन विकृतियों की समाप्ति पर बोधि-तत्व को ग्रहण कर लेता है। वह साधन के शिखर पर पहुँच कर भी सभी के साथ आत्मीय भाव से जीता है, अपने शिष्यों को सही मार्ग पर प्रेरित करता है। ऐसे गुरु में विश्व समाहित है। विश्व के प्रति मंगल-

कामना ही साधना है, इसी संकल्प के साथ ईश्वरीय साक्षात्कार कराने में समर्थ होता है।

गुरु का आशीर्वाद

हम भौतिकवादी सांसारिक लोग गुरु की शरण में पहुँचकर अयाचित याचना करते हैं। कोई भी भक्त ईश्वरीय ज्ञान अथवा मुक्ति का मार्ग नहीं चाहता है। कैवल्य की कामना किसी को भी नहीं है। जन्म के लक्ष्य और सार्थकता के निकट जाना ही नहीं चाहता है। कोई भक्त निवेदन करता है कि ''मेरे पुत्र का विवाह हो जाय।'' किसी की कामना है कि - ''मैं पौत्र के दर्शन कर लूँ।'' अन्य की भावना है कि ''भौतिकता के सभी साधन मिल जाये तथा अपार सम्पत्ति का मालिक बन जाऊँ।'' यह भूल जाता है कि जो भाग्य में लिखा है, उससे अधिक कुछ भी नहीं मिल सकता है। गुरु ईश्वरीय शक्ति का विरोध नहीं चाहता है, वह नैसर्गिक अवदान को रोक नहीं सकता है, वह विधाता के लेख को बदलना नहीं चाहता है, तब भला ऐसे कैसे आशीर्वाद दे सकता है? गुरु की साधना का प्रथम मंत्र यही है कि ''प्रत्येक शिष्य मानवता को ग्रहण करे।''

मनुष्य जन्म लेना ही मानवता नहीं है। जिसके भीतर दानवीय और पशुता की वृत्तियाँ न हो वही श्रेष्ठ मानव कहलाने योग्य है। मानव का मन निर्मल होता है, किसी भी भाव के प्रति विकार नहीं होता है न किसी से विरोध होता है और नहीं शत्रुता होती है। सभी के साथ अपनापन होना ही मानवता की पहचान है। जो केवल स्वयं के लिए जीये, अपने स्वार्थ की पूर्ति करने में ही सुख की अनुभूति करे, वह मानव के हित अथवा कल्याण के प्रति समर्पित होता हैं, वह स्व के अतिरिक्त पर-हित-चिन्तन में भी लगा रहता है। गुरु जन भी अपने शिष्यों को यही संदेश देते हैं कि सभी दुःख दूर करने के लिए स्वयं को अर्पित कर दो। मानव बनो। मानवता ही सर्वोपरि है, मानवीय गुणों को आत्मसात् करने पर मानव अपने लक्ष्य को सहज रूप से पा सकता है।

गुरुजन अपने शिष्यों की नैतिकता का परीक्षण करते हैं। शिष्यों के आहार-विहार के प्रति चिन्तन करते हुए सम्यक् आहार का निर्देश करते हैं। यथा आहारः तथैव जीवनम्। यह शरीर प्राणमय है, अन्न के अनुसार ही प्राणतत्व के संस्कार बनते हैं।

मानवीय गुरु ही धर्म का सोपान है, मुक्ति - मार्ग का द्वार है, इसी पथ से गुरु की छाया में चलकर ब्रह्मत्व की प्राप्ति की जाती है। मानव को अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने चाहिये। पंछियों के घर बसे, तपन से मुक्ति मिले, वृष्टिजल से तृप्ति हो और आहार की व्यवस्था हो। सभी प्राणियों को शुद्ध वायु मिले। स्थान-स्थान पर विश्राम स्थल बनवाने चाहिये। अधिक से अधिक जल के भंडार स्थापित किये जायें। सत्संग के केन्द्र स्थापित किये जायें। प्राचीन धरोहर की रक्षा कर सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करनी चाहिये। आहार सात्विक हो, मांसाहार भी हिंसा की श्रेणी में आता है। वृद्धि और व्यवहार में तामसी गुण का प्रभाव आता है, यह मानवता के विपरीत है। तामसी वृत्ति के कारण क्रोध की उत्पत्ति होती है,क्रोध विनाश और पतन का कारण है। अतः गुरु देव के निर्देषानुसार आहार-

व्यवहार का सम्यक् पालन करना चाहिये।

सत्यं वद

गुरुदेव का यही कथन है कि जीवन में सत्य का पालन करना सबसे बड़ा तप है। सत्य का तप ही तपस्या है। किसी भी स्वार्थवश सत्य का परित्याग जघन्य पाप है। संभव है, सत्य के आचरण से आपको हानि उठानी पड़े, किन्तु आप कभी भी आत्मदुर्बल नहीं हो सकते हैं। सत्य सदैव विजयी होता है। सत्य भाषण से निरपराधों की रक्षा होती है, आत्मशुद्धि होती है, दृढ़ता आती है, संकल्प शक्ति को बल मिलता है तथा सत्य के सहारे ईश्वरत्व तक पहुँच जा सकता है।

धर्मं चर

गुरुदेव का यह निर्देष है कि प्रत्येक मानव को धर्म के मार्ग पर चलना चाहिये। कर्त्तव्य व अकर्त्तव्य का विवेक से निर्णय कर सही मार्ग का अनुसरण करना ही धर्म है। धर्म में धारणा होती है, और यही धारणा जीवन को दिशा देने में सक्षम है।धर्म से तात्पर्य यह नहीं है कि - पीताम्बरी धारण करें या गेरुआ वस्त्र धारण करें। ललाट पर त्रिपुण्ड या रोली का तिलक कर अपना प्रदर्शन करें। गले में तुलसी माला या रूद्राक्ष धारण कर आडम्बर को प्रकट करें। अग्नि जला कर तपस्या का अभिनय करना, अनिच्छा से जप करना आदि धर्म नहीं अपितु मिथ्या प्रदर्शन है। पर-हित साधना ही धर्म है।

आचार्य् देवो भव

वैदिक काल से ही गुरु की गरिमा का पूजन होता रहा है। 'आचार्य देवो भव' कह कर गुरु को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है। माता-पिता से भी अधिक 'आचार्य' को सम्मान दिया है। आर्य-संस्कृति में गुरु-कुल परम्परा का विकास हुआ। तभी से आजतक गुरु-पथ का क्रम चलता आ रहा है। सनातन युग की पद्धति का अनुसरण चल रहा है। आज गुरु की गरिमा यथावत है किन्तु इनसे चमत्कार की अपेक्षा की जाने लगी है, जबकि गुरु को सर्वशक्ति मान सिद्ध किया गया है -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः, साक्षाद् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरुदेव को सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के अधिष्ठाता ब्रह्मा, विष्णु और शिव से भी अधिक श्रद्धा देकर आदि पुरुष ब्रह्म से स्वरूप में प्रतिष्ठित किया गया है, अर्थात् - सृजन, पोषण और संहार की शक्तियों से अधिक सशक्त आराध्य गुरु है, जो अशक्य को भी शक्य बनाने का सामर्थ्य रखता है। गुरु प्रातः स्मरणीय एवं परम आराध्य है। भक्त आचार्य ने गुरु के सामर्थ्य को व्यक्त किया है -

चिन्तासन्तानहन्तारो, यत्पादाम्बुज रेणवः।
तरमान्निजाचार्याम, प्रण मामिमुहुर्मुहुः।।

गुरु आपकी महकीय कृपा से अपने शिष्यों की मानसिक एवं आध्यात्मिक चिन्ताओं के समूह

को नष्ट कर देता है। शिष्य गण आचार्य प्रबर तेजस्वी गुरुदेव के पदारविधों में श्रद्धा के साथ स्मरण एवं नमन कर उनके पैरों के नीचे की रज लगाने मात्र से कष्टमुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। अतः अपने आचार्यों के प्रति सदैव विनम्र भाव रखते हुए नमन करके सर्व-बाधाओं से मुक्त हो जाता है। गुरु की अपार शक्ति है -

अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञमनरनषलाकया,
चक्षुरून्मीलितोतेन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

गुरु शरणागत शिष्य को स्वीकार कर, उसके लिए महनीय कार्य करता है। मानव माया के दुष्चक्र में संक्षिप्त हो कर, भय, कुण्ठा, त्रासदी, अनास्था आदि से ग्रस्त होकर मोह से बंधा रहता है, जिसके फलस्वरूप वह अज्ञान के गहन अंधकार में निमग्न रहता है। अपने जीवन के मूल लक्ष्य में भटक जाता है। भोग-विलास और भौतिक दायित्वों के दलदल में फंसा रहकर सूरज की किरण भी नहीं देख पाता है। चारों ओर निबिड अंधकार में डूबा रहता है। गुरुकृपा ही उसे प्रकाश की किरण दिखाती है। मिथ्या से सत्य की ओर, असद् से सद् की ओर, मृत्यु से अमृतत्व की ओर प्रेरित करता है। वस्तुतः गुरु के आशीर्वाद के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है।

गुरु-शरणम्

आदि बाह्य प्रदर्शन मात्र से आप गुरु-कृपा की कामना करते हैं तो यह प्रयत्न अनागलस्तन की तरह व्यर्थ है। अपने मूल्यवान समय को नष्ट करना है। मानव की प्रबल इच्छा ही गुरु की ओर प्रेरित करती है, यह इच्छा स्वतः होनी चाहिये। दूसरों से प्रेरित इच्छा प्रबल नहीं होती है। प्रबल इच्छा ही संकल्प का निर्माण करती है। संकल्पसिद्धि गुरु के प्रति समर्पणभाव की जागृति देती है। समर्पण के पश्चात् शिष्य का अहम् स्वतः विलुप्त होता है और इन्द्रियाँ सम्यक् आचरण करने लगती हैं। आप भयमुक्त हो कर संघर्षजयी बन जाते हैं। अब आपकी अपनी कोई समस्या या चिन्ता नहीं है। समर्पण के पश्चात् गुरु का दायित्व है कि वे आपकी रक्षा करें और आपदाओं से मुक्त करें। मनसा, वाचा और कर्मका समर्पित होना ही समर्पण है। गुरु की कृपा से -

भक्ति बढ़े, भुक्ति कटे, युक्ति बने, मुक्ति मिले।
गुरु कृपा से कुसुम खिले, सातों ही सब सुख होय।।

गुरु के आशीर्वाद से सब कुछ सम्भव है। गुरुदेव सभी आसक्तियों से युक्त करा, गृहस्थ जीवन जीने का साथ नारायक का नाम संकीर्तन कराते हुए ब्रह्म की कृपा कराने में सक्षम हैं -

नाम निरंजक नर नारायण। रसना सिमरन पाप बिलायण।
नारायण कहते नर बन जाई।नारायण सेव सकल फल पाई।।

चिन्तामुक्ति मंत्र

पूज्य गुरुदेव अपने शिष्य को विशुद्ध मुहुर्त में विधिवत् दीक्षा देकर चिन्ता मुक्ति मंत्र

प्रदान करते हैं। शिष्य को बतलाया जाता है कि नियत समय पर नियमित रूप से शुद्ध उच्चारण के साथ विधि-विधान से गुरु-दीक्षत मंत्र का जाप करना मंगलमय होता है । अपने भवन के ईशान कोण में ऊनी अथवा डाभ का आसन बिछाकर नियत समय पर बैठना चाहिये । जल से भरा हुआ पात्र सामने रखना चाहिये एवं घृत का दीपक जलाना चाहिये । अपने आराध्य गुरुदेव को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद ग्रहण कर, गायत्री मंत्र के साथ प्राणायाम करने के पश्चात् ओंकार युक्त गुरु मंत्र का जप करें । जप की समाप्ति के बाद गुरुदेव का पुनः ध्यान करते हुए अपनी त्रुटियों के लिए क्षमा-याचना करना उपयुक्त होता है । जल के पात्र से आचमन ग्रहण कर किसी वृक्ष के नीचे जल का विसर्जन करना समीचीन है । इस उपासना के पश्चात् गुरु से करबद्ध निवेदन करना चाहिये कि कर्त्तव्य के मार्ग पर निकल रहा हूँ, मेरे मार्ग में मेरे हाथ से कोई अशुभ कार्य न हो, पर-पीड़ा का अवसर न मिले, किसी की आत्मा को कष्ट न हो । मुझे दुर्विचारों से बचाते रहना, मैं सत्य के साथ सन्मार्ग पर चलता रहूँ । आपका आशीर्वाद मेरे साथ सदैव रहे । गुरु दीक्षित मंत्र आपके लिए अमृत-औषधि तथा कवच के रूप में सदा साथ रहेगा। हर बाधाओं से मुक्त होकर अपने कर्त्तव्य को पूर्ण कर सकेंगे।

प्रारब्धवश

कर्म प्रधान है या प्रारब्ध? प्रारब्ध में जो लिखा है, वही तो होगा। भवितव्यता अवश्यम्भावी है, पुनः कर्म की विवेचना और इन सदुपदेषों को सुनने में, गुरु का शिष्य बनना और उनकी आज्ञा का पालन करना आदि प्रपंचों की क्या आवश्यकता है व गुरु के सानिध्य में बैठकर समय गंवाना कहाँ की समझदारी है? रिश्तों की क्या कमी है? दादा-दादी, पिता-माता, बड़े भाई-बहिन आदि सभी तो अपने दायित्व का ज्ञापन करते हुए अनुशासन का पाठ पढ़ाते हैं, बोझिल करते हैं, फिर गुरु का अतिरिक्त भार क्यों ढोया जाय? प्रारब्ध से सब कुछ मिलता है किन्तु प्रारब्ध का निर्माण भी धर्मवाद पर ही निर्भर है। हम विगत जन्म में जो कर्म करके आये हैं, उनका फल हमें इस जन्म में मिल रहा है, इसी का नाम भाग्य अथवा प्रारब्ध है। यदि इस जन्म में शुभ कर्म नहीं करेंगे तो अगले जन्म में शुभ प्रारब्ध की प्राप्त कैसे होगी। गुरुदेव ही तो अपने शिष्यों को शुभ कार्यों के लिए प्रति प्रेरित करते हैं। गुरु तो वह केवट है जो आपको झंझावातों और तूफानों से निकाल कर उस पार ले जाता है, अन्यथा आपकी नौका कभी भी भंवर में फँस कर डूब सकती है। न आपका अस्तित्व रहेगा और न नौका का ठिकाना ।

आपके ग्रह अनुकूल है। आपके जन्माक्षर में गज- केसरी? 'मालव्य' एवं श्रीनाथ योग भी हैं, फिर भी आप ज्योतिर्विद् के पास आकर अपने कष्टों की कथा सुनाकर उपाय या समाधान जानना चाहते हैं? यह आपकी मूर्खता या समय खोना मात्र है। जब भाग्य श्रेष्ठ है तो आप घर पर शयन करते रहे, किसी भी प्रकार के कर्म की आवश्यकता नहीं स्वतः ही सभी कार्य सिद्ध होते जायेंगे।

आपका यह भ्रम है, मिथ्या धारण है, कर्त्तव्य के लिए कर्म तो करना ही होगा, तभी जीवन सार्थक हो सकता है अन्यथा आलसी अथवा निराश होकर बिस्तर पर पड़े रह कर कराहते रहेंगे। भाग्य भी कर्मयोगी का ही साथ देता है। कर्म के अभाव में भाग्यशाली भी भाग्यहीन हो जाता है, अपितु आपके संचित कर्मों का पुण्य भी विनष्ट होने लगता है पुरुषार्थी गुरु के निर्देशानुसार चलता हुआ भाग्य का निर्माण कर लेता है। 'हितोपदेष' में उचित ही कहा है -

''सुप्तस्य सिंहस्य मुखे न प्रविषन्ति मृगाः।।''

मानव ही नहीं, हर प्राणी को यत्न करना होता है। बिना कर्म के कोई युक्ति, भुक्ति और मुक्ति नहीं है। मानव-जन्म की सार्थकता ही तभी है, जब वह अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहे। कोई भी व्यक्ति केवल भाग्य के आश्रय नहीं जी सकता है। चेतन को तो सक्रिय होना ही होता है, निष्क्रियता तो जड़ता है, जड़ का जीवन नहीं है। जीवन में कर्म सिद्धान्त की अनुपालना तो गुरु के उपदेश और प्रवचन पर ही निर्भर है। गुरुदेव में वह क्षमता और सामर्थ्य है, जो जीवन के सत्य धर्म की व्याख्या कर मानव को अपने लक्ष्य की ओर गमन करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। गुरु अपने शिष्य का कभी अहित नहीं चाहते हैं अपितु हित-सम्पादन कर नरत्व को समझाते हुए जन्म-मरण के भयावही क्लेशों से दूर करते हैं। गुरु के प्रति श्रद्धा रहने पर -

गुरु-ज्ञान की गरिमा, गुरु गाथा है, गुरु साक्षी बन कर कर्म बताता है।
जो जन गुरु वचन भंग कर जीते, वे अमृत प्याला तज, हलाहल पीते।।

गुरुपद वही प्राप्त करता है, जो ज्ञान का संचय प्राप्त कर लेता है। ग्रंथों के अध्ययन, ऋचा अथवा श्लोकों के रटने से कोई गुरु नहीं हो सकता है। अपनी साधना से जिसके भीतर से अज्ञान का अंधकार कट जाता है, जिसके अन्तर्मन में प्रकाश-पुंज फैल जाता है, वह अपना कल्याण करता हुआ जग-कल्याण करता है। गुरु ही आपके कर्मों का साक्षी बनकर आपकी वृत्तियों का विवेचन करता है तथा ईश्वर के समक्ष तर्क प्रस्तुत कर आपका सत्यपक्ष रखता है, जो गुरु के उपदेशों की अवहेलना करते हैं, वे अभागे अमृत-पात्र का त्याग कर विष का प्याला पीते हैं, और नाना-योनियों में भटकते रहते हैं। योग्य शिष्य की यही धारणा होती है -

गुरु-पद पंकज, मैं नित ध्याऊँ
माया-मद से विरत, मुक्तिपाऊँ।।

सच्चा शिष्य वही है जो सदैव गुरु-चरणों में श्रद्धानत रहता हुआ लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। गुरु के वचन विश्वास करना शुभफलप्रद है -

''गुरव के वचन प्रतीति न जेही।
स्पने हुँ सुगम न सुख सिधि तेही।।''

जो लोग अपने गुरु के प्रति निष्ठा रखते हैं, आदर्शवाद के पक्षपाती हैं, वे अपने परम आराध्य

गुरुदेव के वचनों का अक्षरषः पालन करते हैं, वे विश्वास के साथ जीवन जीते हुए सुखद क्षणों की अनुभूति कर लक्ष्य की आगे अग्रसर होते हैं। जो गुरु के प्रति आस्था नहीं रखते हैं, गुरु के प्रति विश्वास नहीं हैं, वे भ्रान्तजन हैं। ऐसे लोग संशय में ही जीवन जीते हैं, उन्हें स्वप्न में भी सुख का आभास नहीं हो सकता है, सिद्धि की तो कल्पना ही नहीं करनी चाहिये। वे अपनी महत्वकांक्षाओं के कुचक्र में फँसकर अपवित्र कार्य करते रहते हैं तथा कुण्ठाग्रस्त होकर संत्रास में जीते रहते हैं। गुरु-भक्ति ही सुख की कुंजी है। बिन गुरु के ज्ञान संभव नहीं है, ज्ञान ही अंधकार को काटता है और अमृत-पथ का मार्ग बताता है। महाभारत के कुरूक्षेत्र में श्रीकृष्ण अपने शिष्य अर्जुन को सहज रूप में बताते हैं -

ये भजन्ति तु यां भक्त्या मयि ते तेषु चाषयहम्।।

जो लोग श्रद्धा और समर्पण के साथ मेरी भक्ति में रहते हैं मैं उन लोगों में रहता हूँ। जो मेरे प्रति शरणागत होकर अर्पित होते हैं, मैं उनसे कभी भिन्न नहीं हो सकता हूँ। सदैव उनके भीतर रह कर उनकी सहायता करता रहता हूँ। उनके सुख-दुःख का ध्यान रखता हूँ, उन्हें संवार से बचाना मेरा ध्येय है, क्योंकि वे मेरे अपने हैं।

गुरार्वेचनममृतम्

गुरुजन कभी भी अनर्गल बातें नहीं करते हैं। किसी की निन्दा करना, उपहास करना, व्यंगात्मक शब्दों का प्रयोग उनकी शैली में नहीं होता है। उनकी भाषा सहज, सन्तुलित और सांस्कृतिक होती है। यदा-कदा उदारहरणों में भ्राम्यत्व आ जाता है, वह आप लोगों को समझाने के लिए होता है। पारीष्कृत शब्द और प्रतीकात्मक शैली आम आदमी के लिए सुगम्य नहीं है। बौद्धिक चेतना के लिए तो सुगम्य शब्द भी सुबोध होते है। किन्तु आम आदमी को बोझिल सी लगती है और वह तात्पर्य वृत्ति को नहीं समझ पाता है। अतः गुरु के वचन का आदर करना चाहिये, वह अमृत तुल्य होता है।

सेवा धर्ममूलम्

सेवा ही साधना का सच्चा मार्ग है। नाना धर्माचार्यों के वितण्डावाद से हटकर सेवा-व्रत को धर्म का मूल मानना ही मंगलमय है। गुरु जन सेवा की ही साधना बताकर सिद्धि की सफलता दिलाते हैं। शिष्य को प्रथम पाठ के रूप में सेवा की परिभाषा समझाते हैं। हर व्रत कठिन होता है किन्तु सेवाव्रत सहज और सुबोध होता है। गुरुजन की सेवा-सुश्रूषा से सफलता मिलती है। आम आदमी से लेकर भगवान तक सेवा ही मूलमंत्र है। सेवा में - इन्द्रियविग्रह और समर्पण की भावना विद्यमान है। सेवा-व्रत जितना सरल है उतना ही विरल भी है। सेवा- क्रम में नियमितता और नीयत समय का संविधान है। तनिक सी भूल भी सेवाव्रत को भंग कर सकते हैं। क्षणिक आवेष भी सेवा के मार्ग से भटका देता है। सेवा में संकल्प का समावेश है। भगवान ऐसे सेवकों के संदर्भ में सार समझाते हैं -

अन्तकालेच भामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्राप्यति स मरूयै याति नास्त्यय संषयः।।
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तं तमेवैति कौन्तेय सदा तदावभावितः।।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यार्पित मनो बुद्धिर्ममैवैष्यस्य सर्वम्।।

प्राणी का अन्तकाल जीवन की इति है। अन्त में जो प्राणी मेरा स्मरण करता हुआ शरीर का परित्याग करता है, वह आत्मा गुरु में ही समाहित हो जाता है। जिसकी रसना पर मेरा स्मरण नहीं है, वह मुझे नहीं प्राप्त कर सकता है, नाना योनियों में भटकता हुआ बार-बार जन्म-मरण का कष्ट पाता रहता है। सेवाव्रती इस संत्रास से सुरक्षित रहता है। सेवा-व्रत आसि-धार पर चलने जैसा है। तनिक सी असावधानी व्रत भंग कर सकती है और मानव अपराध का पात्र बन जाता है। कहा भी गया है कि

सेवा-व्रत असि-धार ते कठोर है।

सेवा की साधना में संयम का होना अनिवार्य है। संयम, साहस और सामर्थ्य से सेवाव्रत निभ सकता है। सेवा-धर्म वह साधना का मार्ग है, जहाँ 'स्व' का कोई अस्तित्व नहीं है। स्व सुख की उपेक्षा ही सेवाव्रत की सफलता है। यदि संयम नहीं होता है तो सेवाव्रत की साधना को स्वीकार ही नहीं करना चाहिये। जो मानव संयम को पा लेता है, उसके पास सातों सिद्धियाँ स्वतः आ जाती हैं, वह स्वयं साधु या तत्पुरुष की संज्ञा प्राप्त कर लेता है।

संयम की साधना में निरोध की शक्ति चाहिये। बाधाएँ संकल्प से टकराती हैं और साधक साहस का त्याग कर निराशा की ओर पलायन करता है। अतः दृढ़ता होना अनिवार्य है। सेवा-साधना में परीक्षण भी होते है। आर्य संस्कृति में ऐसे अनेक उदाहरण पढ़ने को मिलते हैं जब गुरुजन ने शिष्यों की कठोर परीक्षा ली है। उपनिषदों में भी ऐसे अध्याय को सदैव आशीर्वचव देते हैं किन्तु आदेश की अवहेलना पर कुपित हो श्राप से संतप्त भी कर देते हैं। अतः व्रत में गुरु-वचन को मन से स्वीकारना चाहिये। प्रत्येक शिष्य के मानस में मीरां की भावना रहनी चाहिये। किसी ने गुरु की प्रार्थना में कहा है -

गुरु शरणम्, गुरु शरणम्,गुरु शरणम्,गुरु शरणम्
गुरु शरणम्, गुरु शरणम्,गुरु शरणम्,गुरु शरणम्
तू ही ब्रह्मा, तू ही विष्णु तू ही शिव, तू ही परब्रह्म।
गुरु शरणम्।भला जो हूँ, मैं तेरा हूँ, मैं तेरा हूँ, गुरु शरणम्।

न तपबल है, न जपबल है, ना बाहूबल है, मैं निर्बल हूँ, गुरु शरणम्।
मैं पापी हूँ, मैं कामी हूँ, मैं जो कुछ भी हूँ, तेरा हूँ, गुरु शरणम्।

गुरु की सेवा भी पूजन, आराधना एवं साधना है। यह सेवा पूर्ण समर्पण की भावना से सम्भव है जो शिष्य इस साधना को सफलताा के साथ सम्पन्न कर लेते हैं वे गुरु की कृपा के पात्र बनकर सिद्ध हो जाते हैं। गुरु जन उन्हें अपनी शरण में लेकर सदैव उनकी रक्षा करते हैं तथा जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति तक पहुँचा देते हैं। गुरु की सेवा ही परम तप है, ईश्वर का सान्निध्य है तथा सांसारिक बन्धनों से मुक्ति का मार्ग है। अतः गुरु-पूर्णिमा के अवसर पर श्रद्धा के साथ सन्मार्ग और सेवा का संकल्प लेकर शिष्यत्व को सिद्ध करना चाहिये।

पाप-पुण्य का अन्तर

गुरुदेव शुभाशुभ, पाप-पुण्य, धर्माधर्म तथा सद्-असद् के अन्तर की परिभाषा बताते हैं। आपकी रूचि, वृत्ति अथवा इच्छा पाप-पुण्य की संज्ञा नहीं दे सकते हैं। आप अपनी व्याख्या नहीं थोप सकते हैं। कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का भेद तो गुरुजन ही कर सकते हैं। आप किसी के यहाँ डाका डालकर, चोरी कर, लूट कर, हत्या कर, अविश्वास कर अपना कार्य कर, अपने आपको सन्तुष्ट नहीं मान सकते। पर पीड़ा से धनार्जन कर मंदिर, आश्रम, धर्मशाला, विद्यालय आदि की स्थापना से पुण्यवान् नहीं हो सकते। आप अपना पक्ष रखेंगे कि यह धन परिश्रम से अर्जित किया है। आप भूल रहे हैं कि यह पाप की कमाई है, अधर्म से अर्जित धन है, इसकी पृष्ठभूमि में हिंसा, असत्य, अविश्वास है। पर-पीड़न सबसे बड़ा पाप है और ऐसे धन से धर्म, दान आदि करना आपको किसी प्रकार का शुभ फल नहीं देने वाला है। सद्कर्म की ओर प्रेरित होना ही धर्म है और असद् कर्म में लगना असद् है। चापलूस और स्वार्थी लोग आपके कार्यों की प्रशंसा कर सकते हैं, आम आदमी नहीं। ईश्वर तो आपको कभी क्षमा नहीं कर सकता है अपितु आपके अपराधों का दण्ड देकर रहेगा।

किस कार्य में आपकी प्रवृत्ति हो और किस कार्य से निवृत्ति हो, यह आपको गुरुदेव ही मार्ग बता सकते हैं। पाप से कमाया धन गुरुजन भी स्वीकार नहीं करते। गुरु लोग तो नैतिकता के पक्षधर हैं। नैतिक सूत्रों की पालना का आदेश देते हैं, परोपकार व पर-हित के लिए प्रेरित करते हैं। उनका आदर्श यही है कि सत्य का पालन करते हुए अपने दायित्वों के निर्वहन के लिए अर्जन करो। अध्यवसाय अथवा व्यवसाय के माध्यम से धन कमा कर कर्तव्यों की पूर्ति करो और शेष धन को शुभ-कर्मों के लिए अर्पित करो। यही संदेश सदाचार की शिक्षा देता है, गुरु ही नैतिक मूल्यों से परिचय कराता है गुरु ही सामाजिक आदर्शों की प्रतिष्ठा कराता है। गुरुजन युग बोध की उपेक्षा तो नहीं करते है किन्तु दिशाबोध के सफल शिक्षक हैं। गुरुजन ही आपके कर्मों को पाप-पुण्य में विभाजित कर सत्यमार्ग का दर्शन कराते हैं। अतः गुरु के निर्देषों का पालन ही धर्म अथवा पुण्य है।

गुरु शिष्य का सम्बन्ध

वैदिक काल से ही गुरु शिष्य के मध्य अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है। जैसे जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ अग्नि है। इसी तरह जहाँ-जहाँ गुरु है वहाँ-वहाँ शिष्य भी है। आदिकाल से ही ज्ञान और शिक्षा का आदान-प्रदान होता रहा है और गुरु के द्वारा दी गयी शिक्षा ही अविरल रूप से चली आ रही है। गुरु ने ही पृथ्वी, अंतरिक्ष और सागर का ज्ञान कराया। गुरु ने कहीं अपने शिष्य को खगोल का ज्ञान कराया। महर्षियों ने कठोर तपस्या करके अदृष्यज्ञान को दृष्यमान बनाया। यह विज्ञान का समय नहीं था अपितु ज्ञान की पराकाष्ठा थी। गुरु निरन्तर शिष्यों को ज्ञान प्रदान करते रहे और यह परम्परा आज तक जीवित है। इसीलिए कहा गया है - गुरु बिन ज्ञान नहीं। इस युग में पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु गुरु के बिना मूल रहस्य को समझा नहीं जा सकता है। जल की गहराई का अंदाजा सिर्फ केवट को ही है अर्थात् जल में कितनी गहराई है, उस पार जाने के लिए नौका का संचालन कैसे किया जाए? बिना केवट के कोई भी यात्री नौका सहित जलमग्न हो सकता है किन्तु केवट यात्री को उस पार तक सफलता से पहुँचा देता है। आम आदमी को यह ज्ञान नहीं है कि उस पार क्या है, किन्तु केवट भलीभाँति जानता है कि किस पथ से उस पार तक पहुँचा जा सकता है। ऐसे ही गुरु भी यह जानता है कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग क्या है, ईश्वर कहाँ है और कैसा है, ईश्वर कैसे मिल सकता है। अतः गुरुभक्ति ही उस पार तक पहुँचने का सहीमार्ग है। गौतम बुद्ध ने घोर तपस्या की किन्तु आम्रपाली ने सही मार्ग बताया और जन्म-मरण के रहस्य को समझ सके। महावीर स्वामी निर्वस्त्र होकर घूमते रहे। घोर तपस्या के चक्रव्यूह में फँसते रहे किन्तु आत्मज्ञान नहीं प्राप्त कर सके। गुरु के निर्देष पर ही आत्मज्ञान को समझ पाये। पाँच वर्षीय शिष्य नचिकेता अपने गुरु के श्राप से यमलोक पहुँच गया। वहाँ यमराज के दर्शन करने पर भी प्रतिशोध की भावना का उदय नहीं हुआ। अपितु अपने क्रोधी पिता के विचारों को परिष्कृत करने के लिए वरदान माँगा और मृत्यु के रहस्य को जानने का प्रयत्न किया। यमराज ने अनेक लोभ के जाल फैलाकर नचिकेता को बस में करने का प्रयास किया। किन्तु उसने भक्ति मार्ग का परित्याग नहीं किया और सत्य को जानकर रहा । गुरु-भक्ति से सब कुछ सम्भव है ।

गुरु स्मरणं सर्मर्थ साधनम्

गुरु पूजन विधान

गुरु-पूर्णिमा के दिन सर्वत्र गुरू-पूजन की सनातन परम्परा का क्रम चलता रहता है। शिष्यगण पूजा केन्द्र में पहुँच कर अपनी श्रद्धा-भक्ति के अनुसार गुरुदेव को प्रणाम कर जल, दुग्ध, पंचामृत आदि से अभिषेक कर ईश्वर से गुरु के लिए दीर्घायु की कामना करते हैं। अनेक केन्द्रों पर वेद-पाठ के साथ अभिषेक-विधान सम्पन्न होता है। नवीन धोती और दुपट्टा धारण कराने के पश्चात् केसर-रोली का तिलक करते हैं। आर्य-परम्परा के अनुसार दक्षिणा चरण के अंगुष्ठ की अर्चना करते हैं। अंगुष्ठ भाव के जल से स्वयं को पवित्र कर आचमन ग्रहण करना ही गुरु -अर्चना का प्रसाद स्वीकारते हैं। श्रीफल पर यज्ञोपवीत रख कर गुरुत्व के प्रति अपनी संकल्प-शक्ति को अर्पित मिष्ठान्न-फलादि के साथ सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा अर्पित करते हैं। अर्पण के समय उनके भीतर अहंकार अथवा प्रदर्शन की भावना नहीं होती, अपितु विनम्र सेवाव्रत का नियम होता है। गुरुदेव के चरणों में प्रणाम कर श्रद्धांजलि अर्पित कर गुरु-कृपा की कामना करते हुए आशीर्वाद चाहते हैं। यही दिवस गुरू-शिष्य के अगाध प्रेम का दृष्य है। जहाँ श्रद्धा और कृपा का पारस्परिक सम्बन्ध दिखाई देता है। गुरुजन भी शिष्यों के संरक्षक बन कर यथासमय आशीर्वाद देने के लिए प्रस्तुत रहते हैं। महान् त्यागी उदारचेता गुरु भी अपने शिष्यों द्वारा अर्पित सामग्री को स्वीकार कर उन्हें निराश नहीं करता है। आदिकाल से चली आ रही इस परम्परा का सम्बन्ध ज्ञान और कृपा से है। जो कोई किसी को ज्ञान देता है, वही क्षण गुरु - शिष्य के सम्बन्ध का उदय होता है। दक्षिणा के समय गुरु का ध्यान उपहार की वस्तुओं पर नहीं जाता है, गुरु को तो प्रत्येक उपहार में समर्पण की गंध आती है। गुरु अपनी कृपा का सभी को आशीर्वचन देकर दीर्घायु, निरोगी, समृद्ध, सुखी और सद्कर्म पर चलने की कामना करते हैं -

"असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।।"

सभी सुखी रहें, नीरोगी हों सभी।
कोई भी दुःख दर्द न पावें कभी।।

लोक-कल्याण का चिन्तन करते हुए ऋषिजन विश्व को अपना संयुक्त परिवार मानकर सुखद भविष्य की कामना करते हैं। प्रत्येक मानव सूर्य का तेज लेकर चाँदनी रात में अमृतत्व को पाकर गुरुज्ञान से सद्कर्म में लगा रहे। मेरा राष्ट्र समृद्ध, शक्तिशाली और शमन का केन्द्र बना रहे। मानवता को पाठ पढ़ाना, उसे नैतिक मूल्यों को समझाकर, जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति दिलाना ही गुरुदेव का अधिकारिक कर्त्तव्य है। गुरु के यहाँ तो यही शिलालेख है -

यत्र यत्रः धर्मो ततस्ततः जयः।

जहाँ-जहाँ धर्म की स्थापना है, वहाँ-वहाँ सर्वत्र विजय ही विजय है।

परमपूज्य गुरुचरण

गुरु के प्रति श्रद्धा और समर्पण सुख-सागर है। गुरु-पद पर आसीन होने के लिए कठोर नियमों का पालन करना होता है। संयमी, दृढ़व्रती, साधक, सहिष्णु, सभी की सुनने वाला, आश्वस्त करना, पर-हित तत्परी ही इस पद के योग्य होता है। सम्प्रति आचार्यजी में इन गुणों का समावेष है। गुरु के प्रति श्रद्धा स्वतः जागृत होती है। यथा -

''दुःखविषादहन्तारं शोकसंतापहाकम्।
दिव्यज्ञानप्रदातारं गुरुवरं नमाम्यहम्।।
भव्यभाग्यविधारं ज्ञान-विज्ञानधारकम्।
क्षमाधारं गुणाकारं प्रेमनिधिं नमाम्यहम्।।''

गुरु के प्रति निष्ठा रखते हुय किसी चिन्तक ने इस प्रकार भाव व्यक्त किये हैं -

''हे मेरे अनन्य संरक्षक!
सत्य-धन के उपासक!
संस्कृति के सबल पोषक!
मेरे आराध्य देव!
सद् मार्ग के प्रवर्तक!
आपके चरण-कमलों की पराग
मेरे भाल पर सदा अंकित रहे,
आपका वरद हस्त
मेरे शिर पर हमेशा रहे।
मैं झंझावातों से टकराऊँ
या मानस की लहरों पर
रास रचाऊँ,
आपकी छाया में रहकर,
पगडंडी पर चलता जाऊँ।
हर पल मेरे नयनों में
आपका ही प्रतिबिम्ब हो!
मेरे कानों में
'गुरु स्मरणम्' के गीत गूँजे,
मेरे अधरों पर
आपके ही नाम की धुन हो,
फिर कैसा भी संग्राम हो
विजय का ध्वज
आपके ही चरण-कमलों में होगा।
पथ सरल हो या विरल
अद्रि का आरोह
या सागर की गहराई,
आपके आदर्श के बल पर
ज्ञान की ज्योति जलाकर
प्रकाश-पथ पर बढ़ रहा हूँ।
हे कृपा सागर!
मुझ निशलम्ब के अवलम्ब देना,
साहस, शक्ति, सत्य का सम्बल देना।

गुरुजन सन्मार्ग की ओर प्रेरित कर सद्-धर्म पर चलने का उपदेश देते हैं। गुरु-गरिमा के संदर्भ में सदैव गुणगान होते रहते हैं। किसी कवि ने कहा है -

श्रीमन्तं साधनाश्रांतं, अन्धकारध्वान्तं गुरूम्।
ज्ञानवन्तं प्रभाकान्तं, नौमि दयाविभान्तम्।
शान्तं शुभ्रं तपोतप्तं, दान्तं वेदान्ततत्परम्,
प्रणभामो वयं सर्वे, नितान्तं स्नेहपालकम्।।

गुरु आपको आदर्शनिष्ठ बनाकर मुक्ति के मार्ग की ओर ले जाता है तो शिष्य के लिए कुछ आवश्यक नियम हैं, जिनका पालन करना चाहिये -

1. गुरुदेव का आसन उच्च स्थान पर हो, उनके पास में बराबर न बैठे।
2. गुरुदेव के आसन पर शिष्य को नहीं बैठना चाहिये।
3. गुरु के समक्ष पग फैलाकर नहीं बैठना चाहिये, और न ही शयन करना चाहिये।
4. गुरु के समक्ष आंगन में आसन पर बैठना चाहिये।
5. गुरु के समक्ष मादक द्रव्यों का कभी भी सेवन नहीं करना चाहिये।
6. गुरु के समक्ष अनर्गल बातें न करें। अपषब्द न बोलें। न किसी की निन्दा करें और न आक्रोष प्रकट करें।
7. गुरु के समक्ष अपने सामर्थ्य एवं अहंकार प्रकट न करें।
8. गुरु की आज्ञा का कभी भी उल्लंघन न करें। उनके आदेश का पालन करना चाहिये।
9. शिष्य अपने पांडित्य-ज्ञान और प्रतिभा-चातुर्य का प्रदर्शन न करें।
10. गुरुदेव के समक्ष कभी भी निराश होकर क्रोध प्रकट न कीजिये।
11. गुरु को उपदेश अथवा परामर्श देने का साहस न करें, क्योंकि गुरुदेव अपने-आप में पूर्ण हैं।
12. गुरु के समक्ष अन्य शिष्यों के स्वभाव एवं मनोवृत्तियों का विश्लेषण एवं आलोचना न करें।
13. गुरुजन के द्वारा क्रोध किये जाने पर भी अपना संयम बनाये रखें। कभी भी गुरुजन अपने शिष्यों की परीक्षा ले लेते हैं।
14. सदैव श्रद्धा बनाये रखें तथा विचार और व्यवहार में विनम्रता बनाये रखें।
15. गुरु के समक्ष 'स्व' के भाव के प्रकट न करें अपितु समर्पण की भावना रखें।

16. सदैव सात्विक भोजन ही करें। निद्रा व आलस्य का परित्याग करें।
17. सत्यव्रत का पूर्णतया पालन करना चाहिये।
18. प्रातः संध्या, देवनमस्कार, गुरू-पूजन तथा जपादिक अवश्य करें।
19. जितेन्द्रियता के साथ साधना करते रहें।
20. कर्म में लिप्त रहो, फल की अभिलाषा न करें।
21. नियमित रूप से गुरु चरणों में प्रणाम करें।

''ब्रह्मस्वरूपदेवेषं भवसागरतारकम्।
नौमि सदा महाप्राज्ञं चित्तान्धकारहारकम्।।''

''ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानदेवाय गुरवे नमः'' मंत्र का जप कर सन्तुष्टि प्राप्त करना श्रेयस्कर है। गुरुदेव का ध्यान, जप, स्मरण-मान से शिष्य भीषण कष्ट से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। कुछ लोग इसे भ्रांति मानते हैं किन्तु आत्मिक रूप से स्मरण किया जाये तो ऐसे भी उदाहरण देखने और सुनने को मिलते हैं, जो चमत्कार के नाम से जाने जाते हैं। इस चमत्कार और सत्य को कुछ लोग संयोग और भाग्य नाम दे देते हैं किन्तु जिसके साथ यह घटना घटित होती है, वह इस सत्य से पूर्ण परिचित होता है, जो जीवन में हर क्षण 'गुरु शरणम्' का जप करता रहता है। परमपूज्य महाराजश्री सुदर्शनाचार्यजी के संदर्भ में ऐसी चमत्कारिक घटनाएँ सुनने को मिलती रही हैं। वे सभी शिष्य भाव-विह्वल होकर उन घटनाओं का जिक्र करते हुए गुरु-चरणों में नत-वंदन करते हैं। आज भी भक्त आश्रम में निरन्तर आते हैं और समाधि के समक्ष खड़े होकर अश्रु बहाते रहते हैं। गुरु सेवा आस्था और विश्वास का विषय है।

गुरु-पूर्णिमा के पावन-पुण्य पर महाराज के प्रति श्रद्धा सहित पूजन कर प्रार्थना करनी चाहिये जिससे पूर्ण आशीर्वाद मिल सके -

विद्यावारिधि! ज्ञाननिधि!

जय, जय, जय गुरुदेवा!
जय गुरुदेवा, जय गुरुदेवा!
पद-पंकज धोऊँ, शीष नवाऊँ
गरिमा गुण गाऊँ, जय गुरुदेवा!
विद्यावारिधि -
सत्संग करूँ, अर्पण भी करूँ
तन-मन की सेवा, जय गुरुदेवा।

विद्यावारिधि
पुष्प चढ़ाऊँ, शाल उढ़ाऊँ
लेकर सातूं मेवा, जय गुरुदेवा।
विद्यावारिधि
तपोनिधि! संताषिरोमणि!
कृपा ते मुक्ति पावां जयगुरुदेवा।
विद्यावारिधि।

------:::-------

...tc ls 'k rsjh vk;k

गुरु के दरवाजे जो भी आया झोली भर कर लौटा, जब भी दर्द के समय पुकारा गुरुदेव दवा बनकर खड़े नजर आए। आंसू आए तो साक्षात गुरु आंखें पौंछने चले आए। सांसारिक संकटों ने सताया तो गुरु ने हाथ पकड़ा और तार दिया। पूज्य गुरु देव स्वामी सुदर्शनाचार्य और अब स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य की कृपा के चमत्कारिक अनुभवों को लाखों गुरु भक्तों ने महसूस किया है। प्रस्तुत हैं उन्हीं में से थोड़े अनुभव जिन्होंने कृपा पाने वालों की जिंदगी बदल दी।

॥ श्री सद्गुरुदेवाय नमः ॥

यूं तो हमारे परिवार पर पूज्य गुरुजी की कृपा वर्षों से है। पिताजी पं.टेकचंद शर्मा, पूर्व एमएलए सालों से पूज्य गुरुजी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी का सान्निध्य प्राप्त करते रहे हैं और मैं भी सालों से महाराज श्री की सेवा में हूँ। लेकिन गुरुजी की ताजा कृपा हमारे परिवार के लिए चमत्कार बन कर आई। उत्तराखंड चारधाम यात्रा में 17 जून 2013 को आई आपदा में पूज्य गुरुजी स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी ने परिवार के सभी सदस्यों को न सिर्फ सुरक्षित बचाया बल्कि आपदा के दौरान जहां दूसरे लोग अन्न के एक-एक दाने के लिए मौहताज थे हमें न तो भोजन की कोई परेशानी हुई और न ही ठहरने की। गुरुजी पूरे समय सूक्ष्मशरीर में हमारा मार्ग दर्शन कर रहे थे। हम जब गुरुजी से चारधाम यात्रा के लिए आज्ञा लेने आए थे तो पूज्य गुरु जी ने यह कहकर हमें वहां जाने से रोका था कि यहीं चार धाम हैं, वहां जाकर क्या करोगे। हम गुरुजी के उस संकेत को नहीं समझ सके और यात्रा शुरू कर दी। हम सोनप्रयाग में जिस होटल में ठहरे थे मन बेचैन हुआ और मैंने परिवार को तुरंत आगे बढ़ने के लिए कहा। तेज बारिश के दौरान परिवार के इनकार के बावजूद हमने तुरंत वह होटल छोड़ दिया और हम रोड पर आ गए अभी डेढ़ दो किलोमीटर ही चले थे कि छह वाहनों के आगे ही पहाड़ खिसक गया। पीछे भी जाम लग गया। धीरे-धीरे खबर आम होती गई कि प्रलय आ गई है और हम उसमें बुरी तरह फँस चुके थे। गुप्तकाशी का पुल टूट चुका था। हमें पता चला कि सोनप्रयाग के जिस होटल में ठहरे थे उसकी पार्किंग बह गई है। तब हमें महसूस हुआ कि क्यों गुरुजी ने अपने साक्षात् संदेशों के माध्यम से हमें उस हादसे से बचाया। दो दिन बाद जब हम फाटा पहुंचे तो वहाँ भी जाम लगा हुआ था। वहाँ खाने की बड़ी किल्लत थी। लेकिन गुरुजी की कृपा से हमें न सिर्फ तुरंत रोटियाँ मिलीं बल्कि रुकने के लिए भी बेहद सुंदर व सुविधाजनक स्थान मिला। रात भर बादल गरज रहे थे। मैंने गुरुजी से प्रार्थना लगाई कि इंद्र देव को आदेश दो वरना पता नहीं कितनी जानें और जाएंगी। जैसे ही प्रार्थना खत्म हुई ऐसा लगा जैसे किसी ने छतरी तान दी। गुरुजी की कृपा को प्रणाम कर अगले दिन वहां कुछ अन्य लोगों के साथ चंदा कर हमने भंडारा शुरू किया बाद में ग्रामीणों ने आकर उसे संभाल लिया। डेढ़ दिन के बाद रास्ता खुला और हम टीहरी-चंबा होते हुए ऋषिकेश पहुंचे। तो रास्ते भर हमने लोगों को बिलखते हुए देखा। उनके परिवारों के कई-कई सदस्य इस आपदा की भेंट चढ़ चुके थे, लेकिन गुरुजी की कृपा से हमें कोई खतरा नहीं हुआ और हम दिल्ली वापस आ गए।

ज्ञानेंद्र शर्मा, फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली

● ● ● ● ●

मुझे जब भी मंच पर बोलने का मौका मिला है मैंने खुलकर अपने जीवन में आई चमत्कारिक घटनाओं का वर्णन किया है। यहां तक कि जब मैं हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के समय 2007 में आश्रम लेकर आया, मैंने उनसे भी और मंच पर भी इन घटनाओं का जिक्र किया था। यहां मैं एक घटना के बारे में कहूंगा।

मेरे भाई कनेडा में रहते हैं। मेरी माता जी उनके पास गई हुई थीं। वहां पर वह इतनी बीमार हो गईं कि डॉक्टरों ने स्पष्ट कह दिया कि वह चार-पांच दिन से अधिक जीवित नहीं रह सकतीं। उस स्थिति में हम माता जी को भारत नहीं ला सकते थे। मैं बहुत अधिक परेशान था। इस परेशानी की स्थिति में मैं श्री गुरु महाराज जी के पास गया और उनसे प्रार्थना की कि मेरी मां इस काबिल हो जाये कि मैं उन्हें भारत ले आऊं। श्री गुरु महाराज ने कहा कि इसमें वह क्या कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि जो भाग्य में है वही होगा। मैंने श्री गुरु महाराज से सविनय प्रार्थना की कि आप भाग्य को बदलने में सक्षम हैं। इस पर श्री गुरु महाराज ने कहा कि यदि तुम्हारा इतना विश्वास है तो तुम्हारी माता जी 5 वर्ष और जीयेंगी। तुम दिल भर कर उनकी सेवा करो। उन्होंने मुझे कहा कि तुम कनेडा जाओ और अपनी माता जी को भारत ले आओ। कोई समस्या नही आयेगी। मैं माता जी को भारत ले आया और पूरे 5 वर्ष उनकी सेवा की। निःसन्देह श्री गुरु महाराज परमात्मा के ही स्वरूप थे। आज भी उनका सूक्ष्म स्वरूप हमारी रक्षा कर रहा है।

-

ए. सी. चौधरी,
पूर्व मंत्री, हरियाणा सरकार।

● ● ● ● ●

सन् 1994 में जब मैं फरीदाबाद में कार्यरत था तो सिद्धदाता आश्रम में गुरुजी के सम्पर्क में आने का मौका मिला। उसके बाद मेरी तथा मेरे परिवार की आस्था बढ़ती गई।

सन् 1995 में मेरा बेटा आशीष इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिले के टेस्ट से पहले गुरुजी का आशीर्वाद लेने गया तो उन्होंने कहा कि काम जरूर बनेगा। रिजल्ट वाले दिन काफी निराशा हाथ लगी। इसके बारे में जब गुरुजी को बताया तो उन्होंने यही कहा कि काम जरूर ही बनेगा। थोड़ी देर में यह खबर आई कि कंप्यूटर की गलती से रिजल्ट ठीक नहीं आया और ठीक रिजल्ट आने पर बेटे की अच्छी पोज़ीशन बनी। आज वह गुरुजी की कृपा से अमेरिका में नौकरी कर रहा है तथा आश्रम में पूरी आस्था रखता है। गुरुजी के आदेशानुसार मैंने 1998 में सैक्टर 21 सी में मकान बनाने के लिए प्लॉट लिया क्योंकि यह आश्रम के नजदीक पड़ता था। मकान बनाने पर

काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा, पर गुरुजी की कृपा से मकान बन गया। जिसमें रिटायरमैन्ट के बाद मैं सपरिवार रह रहा हूं।

गोविन्द राज मेहता,
पूर्व निदेशक, दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम।

● ● ● ● ●

1998 में एक स्कूल के समारोह में मेयर साहब को आमंत्रित किया हुआ था। किसी कारण मेयर महोदय समारोह में शामिल नहीं हो सके। जैसे ही मैं समारोह में पहुंचा तो श्री गुरु महाराज ने मुझे कहा आइये मेयर साहब। मैं चौंका। मेयर साहब तो आये ही नहीं। फिर श्री गुरु महाराज बोले- अरे हमारे मेयर तो आप ही हैं। देखिये उनकी कृपा से कुछ समय के बाद ही मैं सीनियर डिप्टी मेयर बन गया। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं कभी सीनियर डिप्टी मेयर बन सकता हूं। यह श्री गुरु महाराज का ही करिश्मा था। विरोधी पार्टी ने मेरे विरुद्ध हाई कोर्ट में केस डाल दिया। हर बार मेरा कभी 150 वां नम्बर होता था तो कभी 175वां। मैंने श्री गुरु महाराज से प्रार्थना की। श्री गुरु महाराज बोले कि चिंता न कर फैसला तुम्हारे हक में ही होगा। इस बार मैं हैरान हो गया कि मेरा केस तीसरे नम्बर पर था। इस बार जज भी नया था। मैं जब कोर्ट में खड़ा हुआ था तो मेरे कुछ कागज़ नीचे गिर गए। किसी ने वे कागज उठा कर मुझे दे दिये। मैंने उसका धन्यवाद किया। मेरे विरोधियों ने जो अपील मेरे खिलाफ डाली थी वह रिजेक्ट हो गई। मैं जब श्री गुरु महाराज जी से मिला तो गुरुजी ने मुझे बताया कि केस की सुनवाई के समय मैं वहीं कोर्ट में मौजूद था। तुम्हारे गिरे हुए कागज मैंने ही उठाकर तुम्हें दिये थे। सचमुच श्री गुरु महाराज अंतर्यामी थे। वे घट-घट की जानते थे। वे हर जगह मौजूद रहते थे और भक्तों की हर प्रकार से रक्षा करते हैं।

-

चौ. जिले सिंह
पूर्व सीनियर डिप्टी मेयर, फरीदाबाद।

● ● ● ● ●

आज से करीब दस साल पहले, मुझे परिवार सहित अपना निवास स्थान, अबू धाबी से दुबई बदलना पड़ा। मैंने एक घर दुबई में लिया, और उस घर में रहने का सामान पहले से ही मौजूद था। लेकिन यह घर सिर्फ दो महीने तक ही मिला था। यह घर मेरे बच्चों के

स्कूल से बहुत दूर था, बच्चों को आने जाने में तकरीबन 3 घंटे लग जाते थे। एक दिन मुझे स्कूल के करीब बहुत अच्छी कॉलोनी नज़र आई जिसमें बहुत सारे बंगले थे। कार्यालय से पूछताछ करने पर पता चला कि इन बंगलों के लिए 500 लोग पहले ही से इंतज़ार कर रहे हैं और तीन साल का समय लग सकता है। उस समय मैंने गुरुजी से बात की, तो उन्होंने कहा कोशिश करते रहो, तीन दिन तक काम हो जाएगा। इतनी लम्बी लाईन और कार्यालय की तरफ से कोई उम्मीद न होते हुए, ये बात बहुत असंभव लग रही थी। लेकिन ठीक 3 दिन बाद फोन आया, कि अपनी चैक बुक लेकर कार्यालय आ जाओ। वहाँ जाने पर जिन लोगों ने मुझे नज़र अंदाज़ किया था, और घर न देने की बात की थी, वो अब बहुत अच्छी तरह से पेश आ रहे थे। मुझसे हंसी-ख़ुशी कागज़ात पर हस्ताक्षर करवा रहे थे। इस तरह मुझे एक अच्छा घर मिला। ये अनुभव मेरे लिए किसी करिश्मे से कम नहीं हैं। ये महान कार्य गुरु जी की कृपा से ही संभव हो सका।

हेमंत जेठवानी
जनरल मैनेजर यू.ए.ई.
अरब अफ्रीकन इंटरनेशनल बैंक
दुबई- यू.ए.ई.

● ● ● ● ●

हम सन् 1995 से श्री सिद्धदाता आश्रम में आ रहे हैं। शुरुआत में हम गुरुजी से अपने पारिवारिक काम व अपने व्यापार सम्बन्धी काम के संदर्भ में मिले थे। श्री गुरु महाराज ने हमें आदेश दिया कि आप आश्रम आते रहिए, आपके सिर पर हमेशा मेरा हाथ रहेगा। मेरी सेहत ठीक नहीं रहती थी। चार-पांच बार हम आश्रम आये तो मेरी सेहत में सुधार आने लगा एवं हमारे व्यापार में भी वृद्धि होने लगी। सन् 1998 में मेरे बेटे के लिए मैंने गुरुजी से प्रार्थना की कि इसका एडमिशन आई.आई.टी में करवा दो। गुरुजी ने कहा कि आई.आई.टी में एडमिशन बड़ा मुश्किल है। कुछ देर पश्चात् गुरुजी बोले कि इसका आई.आई.टी में एडमिशन हो जायेगा। लेकिन बाहर होगा। मेरे बेटे का एडमिशन हो गया। गुरुजी के दर्शन करने से पहले मेरे पति शराब, मांस का सेवन भी करते थे। एक दिन गुरुजी मेरे घर पति के सामने प्रत्यक्ष रूप में आये और आदेश दिया कि आप सांसारिक भोग विलास को छोड़कर आध्यात्मिकवाद से जुड़ो। आपको संसार का हर सुख प्राप्त होगा। मेरे पति ने उसी दिन से सारी बुरी आदतों का त्याग कर दिया। अब हम सुख शांति से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हम दोनों पति और पत्नी गुरुजी के चमत्कारों का जितना वर्णन करें उतना कम है। हमारे दोनों बच्चों को गुरुजी महाराज ने अमेरिका में बहुत अच्छी पोस्ट पर

सैट किया हुआ है। वह जब भी अमेरिका से दिल्ली आते हैं तो आश्रम में दर्शनों के लिए जरुर आते हैं। गुरुजी ने हमसे व आनेवाले भक्तों से जो भी कहा वह काम होकर ही रहा।

- अंजला गौड़ पत्नी डॉ. अरविन्द कुमार गौड़, मूलचन्द अस्पताल, दिल्ली

● ● ● ● ●

स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज जबसे फरीदाबाद आये हैं तभी से मैं उनका पारिवारिक डॉक्टर हूं। मैंने अनेक बार ऐसा अनुभव किया है कि श्री गुरु महाराज सर्वज्ञ और सर्वव्यापक थे। असंभव को संभव करने की शक्ति उनमें थी। वे परम दयालु संत थे। जब श्री गुरु महाराज फरीदाबाद आये लगभग उसी समय की बात है कि वे एक डॉक्टर चौहान नाम के व्यक्ति को मेरे पास लाये। वह डॉक्टर कैंसर का मरीज था जिसको पांच-छह महीने का अल्टीमेटम दे दिया गया था। श्री गुरु महाराज ने मुझसे कहा कि उसे मैं ग्लूकोज़ चढ़ा दूं। मैंने ग्लूकोज चढ़ा दिया और कोई दूसरी दवाई उसको नहीं दी गई। वह व्यक्ति पूर्ण रूप से ठीक हो गया। मैंने जीवन में पहली बार ऐसा चमत्कार देखा। उसके बाद तो जिस मरीज़ को दवाईयों का असर नहीं होता था मैं उसे गुरु महाराज के पास भेज देता था। बिना किसी दवाई के वे बिल्कुल ठीक हो जाते थे। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि श्री गुरु महाराज स्वामी सुदर्शनाचार्य जी एक पूर्ण सिद्ध दयालु संत थे।

- डॉ. भूपिन्दर सिंह,
भूपिन्दर आई केयर सेंटर एण्ड नर्सिंग होम, सेक्टर-7, फरीदाबाद।

इसमें कोई संदेह नहीं कि वे पूर्ण ब्रह्म हैं। मैं जो भी कुछ हूं उनकी वजह से हूं। मेरा मेरा वजूद, मेरी हैसियत उन्हीं की कृपा का प्रसाद है।

सन् 1996-97 की बात है मेरा बेटा अर्जुन 14-15 वर्ष का था। वह अस्थमा का मरीज हो गया। मैंने डॉक्टर होने के नाते दवाई दी। उसका रिएक्शन हो गया। अब वह न तो कुछ खा सकता था और न ही कुछ पी सकता था। उसे सांस भी नहीं आ पा रही था। दवाई के रिएक्शन के कारण सारे शरीर पर फफोले से पड़ गए थे। हम सोच ही रहे थे कि क्या करें, कौन से अस्पताल जाएं। रात के 8-9 बज रहे थे। इतने में एक गुरु भाई आए और बोले गुरुजी के पास चलो। वो हमें गुरुजी के पास ले गए। गुरुजी जैसे हमारा ही इंतजार कर रहे थे। देखते ही हंसने लगे, बोले पहले ही आ जाना चाहिए था। कोई बात नहीं तुम्हारा पिता डॉक्टर है, लेकिन अब हमारा डॉक्टर इलाज करेगा। जाओ ठीक हो जाओगे।

हम वापस आ गए। गुरुजी की आपार कृपा से लड़का सुबह तक 90 प्रतिशत ठीक हो गया। खाने पीने लगा। फिर सुबह हम गुरुजी से मिले। कहने लगे सब ठीक हो जाएगा। सचमुच वह बिल्कुल ठीक हो गया। कोई दवाई नहीं दी और गुरु जी की कृपा से अब वह बिल्कुल ठीक है।

एक बार मैं अपने स्कूटर से निजामुद्दीन स्टेशन से तुगलकाबाद गांव जा रहा था। स्कूटर में कट-कट की आवाजें आने लगी। मन ही मन मैंने प्रार्थना की कि गुरुजी रात का समय है। कोई मिस्त्री भी नहीं मिलेगा। घर पहुंचना है, रास्ता भी बड़ा खराब था। गुरुजी ने घर पहुंचा दिया। सुबह मिस्त्री को बुलाकर लाया। उसने बताया कि पिछले पहिए के चारों बोल्ट निकल गए थे। मैं अपने बाबा की कृपा के कारण ही सही सलामत घर पहुंच सका था।

- डॉ. जीवन गोयल, गुरु हरिकिशन हॉस्पिटल, नई दिल्ली

● ● ● ● ●

जुलाई 1998 मैं पहली बार गुरु महाराज के चरणों में गया। 17 जून 1998 को छत से गिरने के कारण मेरी गर्दन की हड्डियां टूट गईं और शरीर पूरी तरह काम करना बन्द कर चुका था। मेडिकल और सफदरजंग में जांच कराने के बाद जीने की उम्मीद खत्म हो चुकी थी। मेरे साले के कहने पर मैं बाबा के दरबार पहुंचा। उस समय मैं रिजर्व बैंक में सेवारत् था। फिर भी सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा था। सबसे पहले गुरुजी ने मुझे जीवनदान दिया। जीवनदान के साथ-साथ सभी समस्याओं से मुक्त कर मुझे सेवा में लगा दिया। पहली बार गुरुजी की गद्दी पर मेरी पर्ची में मेरे मन के जो सवाल लिखे थे वही सवाल गुरुजी ने अपने सवाल खाते में लिखकर साथ में उनका निदान भी लिख दिया। उसके बाद मुझसे पूछा गया तो वही सवाल लिखे पाये गये। मेरे चार सवाल इस तरह थे।

मेरी बेटी का रिश्ता, गुरु चरण सेवा, सिर पर छत और रोजी-रोटी।

चारों सवालों का जवाब गुरुजी ने लिखा था। वे सभी समस्याएं हल हो चुकी हैं। 10-12-2000 को सुबह 4 बजे करीब गुरुजी ने दर्शन देते हुए मुझसे कहा कि आपने सेवा करने जाना है। 4 लोगों की मौत हो गई है और बाकी घायल हैं। बैंक से पैसे निकाल कर लाने हैं। मैंने यह बात घर में सभी बच्चों को कही और हर जगह फोन करके पता किया तो कहीं से भी कोई अप्रिय समाचार नहीं मिला तो मैं गुरुजी की आज्ञानुसार 15000 रुपये बैंक से लेकर अपनी ड्यूटी से

छुट्टी ले ली। जब मुझे शाम 4 बजे तक कोई समाचार कहीं से नहीं मिला। तो मैंने गुरु दरबार में आकर अर्जी लगाई कि गुरुजी! मैं जाऊं, पलक झपकते ही गोपाल बाबा आये और मुझसे कहा मीना जी आप आज और इस समय कैसे आये? मैंने जवाब में कहा बाबा ने बुलाया है तो आ गये। अच्छा गांव जाना है, आप गांव जाओ। यह जवाब सुनते ही मैं गांव रवाना हो गया। वहां जाकर पूछने पर पता चला कि एक बारात बल्लभगढ़ गई है उसमें सभी जाति के लोग गये हैं। मुझे उसी समय शक हो गया तथा बेचैनी बनी रही। जैसे ही सुबह के 4 बजे एक लड़की की आवाज सुनकर मैं बाहर आ गया। उससे पूछा कि क्या बात है बेटे? तो जवाब मिला, हमारी बारात की बस दुर्घनाग्रस्त हो गयी है। उसने कहा कि न मालूम कितने आदमी मर चुके हैं और वहां कोई जाने वाला नहीं है। मैं इतना सुनकर गुरुजी के आदेशानुसार अपने चाचा के लड़के को साथ लेकर पलवल के लिए तुरंत चल दिया। कड़ी ठण्ड में मैं जब पलवल पहुंचा तो मैंने देखा कि गुरुजी ने मुझे जो घटना 24 घंटे पहले बताई थी वह हकीकत में मेरी आंखों के सामने आ चुकी थी। गुरु आज्ञानुसार मैंने वहां सेवा दी और सभी बारातियों के इलाज के खर्च का भुगतान भी किया।

- वैद्य सांवलिया राम मीणा, दिल्ली

मुझे वैकुण्ठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी के दर्शनों का सौभाग्य सन् मार्च 1982 में दिल्ली के कोटला में मन्दिर में मिला। मेरी पत्नी बीना सत्संगी को श्री गुरु महाराज का स्नेह पहले ही कई वर्षों से प्राप्त था। हमारी शादी को दो वर्ष बीतने के बाद भी कोई संतान नहीं हुई तो गुरुजी से अपनी समस्या रखी। गुरु महाराज ने कहा कि अभी तुम्हारी संतान होने पर रोक लगाई हुई है क्योंकि अभी ग्रह ठीक नहीं हैं। जब समय आयेगा तुम्हें संतान की प्राप्ति अवश्य होगी। सन् 1988 दिसम्बर में मेरी पत्नी ने गुरु महाराज से नाराजगी प्रकट की तो श्री महाराज ने कहा कि एक बार में ही दो संतानें देकर तुम्हारी चिंता हमेशा के लिये दूर कर दूंगा। सन् 1989 मार्च को मेरी पत्नी ने गर्भधारण किया। तीसरे महीने में अल्ट्रासाउंड कराने पर पता चला कि उसके गर्भ में दो बच्चे हैं। सन् 1989 सितम्बर 4 तारीख को दो बच्चों ने जन्म लिया। आज श्री गुरु महाराज जी की कृपा से बेटा आस्ट्रेलिया में है और बेटी दिल्ली कॉलेज से ग्रेजुएशन कर रही है।

सन् 1996 में गर्मियों की छुट्टियों में मैं अपने परिवार और एक मित्र श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी जी के परिवार के साथ गोवा गया था। तीन दिन हम सब ने मिल कर खूब आनन्द किया। चौथे

दिन जब हम बस में घूमने निकले तो मेरे मित्र के पेट में तीव्र दर्द उठा और हम उन्हें अस्पताल ले गये। डॉक्टरों ने इलाज के पश्चात् उनकी छुट्टी कर दी। हम जहां ठहरे हुए थे वहां लौट आये। रात को 2 बजे करीब उन्हें फिर दर्द उठा और उनके हाथ पांव ठंडे होने शुरु हो गये। प्रातः होते ही हम उन्हें अस्पताल ले गये तो डाक्टारों ने जांच के पश्चात् हमसे पूछा कि उन्हें क्या हुआ है, वह तो मर रहे हैं। मैं और उनकी पत्नी एकदम घबरा गये और मैं अपने घुटनों पर गिर कर श्री गुरु महाराज से प्रार्थना करने लगा कि हे श्री गुरु देव! मेरे मित्र की रक्षा करो और मेरा मित्र मेरे साथ ही सही-सलामत घर लौटना चाहिए। पर कुछ ही देर में डॉक्टरों ने मुझे अन्दर बुलाया और बताया कि श्री चौधरी साहब के प्राण निकल चुके हैं। हमें बहुत भारी सदमा लगा। अनेक परेशानियों का सामना करने के पश्चात् हम उनके मृतक शरीर को लेकर वापिस लौटे। श्री चौधरी के परिवार वालों ने विधि-विधान के साथ उनका क्रिया कर्म किया। मुझे श्री गुरु महाराज जी से शिकायत थी कि उन्होंने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी। कुछ दिनों के बाद मैं आश्रम आया। मैंने दुखद घटना का जिक्र श्री गुरु महाराज से किया और शिकायत की कि हे गुरु महाराज! आपने मेरी पुकार नहीं सुनी और मेरे मित्र के लिए कुछ नहीं किया। मेरी शिकायत सुनने के बाद श्री गुरु महाराज ने अपनी कॉपी जिस पर श्री गुरु महाराज रोज लिखते थे, मंगवाई। श्री गुरु महाराज जी ने उस तारीख का पन्ना खोला तो वहां पर पहले से ही लिखा हुआ था- भक्त सांगी की पुकार हमें बहुत देर से मिली। उस समय से पहले ही वह व्यक्ति प्राण त्याग चुका था। हम उसके लिये कुछ नहीं कर सके। मैं तो यह जानकर आश्चर्यचकित रह गया। गुरु जी बोले- तुम कैसे कहते हो कि हम भक्तों की पुकार नहीं सुनते। तुमने जब पुकारा उससे पूर्व ही तुम्हारे मित्र के प्राण जा चुके थे। इसलिए हम कुछ नहीं कर सके। मैंने श्री गुरु महाराज के चरणों में पड़कर क्षमा मांगी।

उस समय श्री गुरु महाराज जी ने कहा था- ''मैं हमेशा अपने भक्तों के साथ रहता हूं। यहां तक कि वे सोते हैं तो मैं उनका पहरा देता हूं, उनकी रक्षा करता हूं।'' ऐसे सद्गुरु देव के चरणों में शत् शत् प्रणाम करता हूं।

- गुरु प्रसाद सत्संगी, नई दिल्ली

● ● ● ● ●

मुझे अमरनाथ गुफा के दर्शन का सौभाग्य दो बार प्राप्त हुआ है। 1994 से पहले मैं श्रीमज्जगद्गुरु स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज को तन और मन से अपना गुरु मान चुका था। इस शरीर ने स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज को गुरु मानने के पश्चात् किसी अन्य साधु, संत, महात्मा, फकीर के आगे गुरु के नाते शीश नहीं झुकाया है।

मैंने गुरु महाराज जी से जुलाई 1994 में श्री अमरनाथ गुफा के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने तुरन्त अपनी सहमति प्रदान कर दी। इस यात्रा में अपने आश्रम से ही संबंधित श्री टी. डी. शर्मा जी (जिनका शरीर अब पंचतत्व में विलीन हो चुका है) अपनी धर्मपत्नी सहित साथ में थे। हमारा वाहन राम वन से पहलगांव के लिए काफिले के साथ सी.आर.पी. और बी.एस.एफ के जवानों के सरंक्षण में जा रहा था। किसी कारणवश रास्ते में काफिला (लगभग 200-250 वाहन) रुक गया। हमारे वाहन के समीप ही दो मुसलमान भाई खीरा बेच रहे थे। अपने साथियों के लिए उनसे खीरा लेकर जैसे ही मैंने अपनी गाड़ी में प्रवेश किया उन मुसलमान भाईयों ने गोलियां चला दीं जिससे दो यात्री स्वर्ग सिधार गए। मैंने इस घटना का विवरण वापस लौटकर श्री गुरु महाराज जी से किया। उन्होंने बताया कि तू तो मौत के मुंह में अपने आप ही चला गया था। यदि तुम्हें याद हो तो एक खीरा विक्रेता सिर खुजाने लगा और दूसरा बीड़ी पीने लगा था। उन्होंने सोचा यह कहां जायेगा, इसको पीछे मुड़ते ही गोलियों से भून देंगे। परन्तु मैं गुरुजी की कृपा से ही सुरक्षित रहा।गुरु महाराज जी ने मुझे याद दिलाया कि जब 1972 में मैं पहली बार श्री अमरनाथ गुफा के दर्शन हेतु गया था। पिस्सु घाटी पहलगांव से लगभग 16 कि. मी. की दूरी पर है। जहां से मैं घोड़े पर सवार होकर यात्रा से वापिस आ रहा था। रात बहुत ही अंधेरी और डरावनी थी। अचानक हुई रोशनी से घोड़े ने चौंक कर अगले पांव उठा लिए। यदि घोड़ा जमीन पर पांव रखता तो खाई में गिरकर निश्चित मौत होती। लेकिन तब भी गुरु महाराज ने बचा लिया।

मैंने श्री गुरु महाराज जी से कहा कि 1972 में तो मैंने किसी को गुरु नहीं बनाया था तो आपने सहायता क्यों की। गुरुजी ने बताया कि गुरुतत्व अपने शिष्य के लिए सदा सर्वत्र विराजमान रहता है।

\- डी. सी. तंवर, फरीदाबाद

यह 2000 की बात है । मैं, मेरी पत्नी और दोनों बेटियां रेवाड़ी से कार से फरीदाबाद आ रहे थे। सोहना के पास गाड़ी गर्म हो गई। मैंने गलती से कूलैंट की बजाय रेडियेटर में पानी डाल दिया। थोड़ी दूर पर ही गाड़ी रूक गई। साथ ही ढाबा था। वहां हमने देखा कि श्री गुरु महाराज जी जैसा कोई बाबा वहां बैठा हुआ है। उस बाबा ने हमें बताया कि रात का समय है और तुम्हारे साथ तीन महिलाएं है। इसलिए इस हालत में आगे जाना उचित नही। फिर वह एक ट्रक वाले के ट्रक में बैठ गये और मुझे भी अपने साथ बिठा लिया। शहर में से एक मैकेनिक लिया और मुझे कहा कि इंजन ऑयल भी ले लो। मैं मैकेनिक के साथ लौट आया। मैकेनिक ने मुझे बताया कि अगर यह गाड़ी एक आधा किलोमीटर और चलती तो इंजन पूरी तरह से बैठ जाता और

दस-बारह हजार रुपये का खर्चा आता। कार ठीक हो गई और यह श्री गुरु बाबा का ही चमत्कार था कि हम सकुशल घर पहुंच गये।

एक और घटना का जिक्र करना चाहूंगा। मेरे लड़के का नाम हर्ष है। उसका श्री गुरु महाराज पर विश्वास नहीं था। हमारा आश्रम जाना उसे पसन्द नहीं था। बी.ई. में दाखिले के लिए उसने कई जगह प्रार्थना पत्र भेजे पर किसी कॉलेज में उसको उसके मन मुताबिक विषय में दाखिला नहीं मिला। एक दिन उसे न जाने क्या हुआ कि वह जिद कर बैठा कि वह श्री गुरु महाराज से मिलने आश्रम जायेगा। मेरी पत्नी उसे आश्रम ले गई। हर्ष ने अपनी समस्या गुरुजी के समक्ष रखी। श्री गुरु महाराज बोले, चिंता न कर परसों लेटर आ जायेगा। ऐसा ही हुआ भी। उसे थापर इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला मिल गया। श्री गुरु महाराज तो साक्षात् भगवान ही थे। कितनी ही चमत्कारिक घटनाएं मेरे जीवन में घटी हैं। भले ही आज उनका पंचभौतिक शरीर नहीं है, पर उनका सूक्ष्म शरीर आज भी हमारी रक्षा उसी प्रकार कर रहा है। ऐसे परम सद्गुरु को कोटि-कोटि प्रणाम।

- ए. के. गुप्ता, मुख्य प्रबंधक, ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, भोपाल

● ● ● ● ●

अगस्त 1999 की बात है । मैं सीकरी से फतेहपुर अपने पोते का निमंत्रण देने के लिए जा रहा था। प्याला से आगे स्कूटर खड्डे में गिर गया। वहां जंगल था। मैं बुरी तरह से घायल हो गया। मेरे चार दांत टूट गये, हाथ टूट गया और खून बह रहा था। घबराहट में मैंने श्री गुरुदेव को याद किया। उसी समय एक गाड़ी वहां आई। वह गाड़ी वाला फौरन मुझे डॉक्टर के पास ले गया और इस तरह से मेरा बचाव हुआ। मैंने अपने मकान में एक दुकान किराये पर दी हुई थी। रात के 9 बजे के करीब हमारी दुकान के सामने दो शराबी लड़ रहे थे। वे रिक्शेवाले का किराया नहीं दे रहे थे। मैं ने उनको किराया देने के लिये कहा और किवाड़ बन्द करके घर आ गया। अचानक 11 बजे सौ-डेढ़ सौ आदमियों ने मेरे घर पर चढ़ाई कर दी। हुआ क्या था कि रिक्शा वाले के आदमियों ने शराबियों की पिटाई कर दी थी। मैंने उस समय गुरुदेव को याद किया कि हे गुरुदेव हमारी रक्षा करो। फौरन उसके बाद भीड़ में से एक व्यक्ति बोला- अरे यह तो शरीफ आदमी है। उसने लोगों को थाने जाने के लिए कहा और वे सभी लोग मेरे यहां से चले गये।

- कालीचरण गर्ग, इंस्पैक्टर, एमसीएफ, फरीदाबाद

● ● ● ● ●

स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज, संस्थापक, श्री सिद्धदाता आश्रम, वास्तव में स्वयंसिद्ध संत थे। उन्होंने अपनी दिव्य अनुभूतियों से सहस्त्र लोगों का कल्याण किया है। उनके मनसा, वाचा, कर्मणा में एकरूपता को कई बार स्वयं अनुभव किया है। मैं इस संस्था से 1992 से सम्पर्क में हूं। उस समय अपने विद्यापीठ में प्रवक्ता पद पर कार्यरत था। लेकिन उन्होंने मुझे प्राचार्य के रूप में सम्बोधन किया जिसके परिणाम स्वरूप 5 जून 1998 से प्राचार्य बन गया। उसमें आने वाली अनेक समस्याओं का निदान एक अद्वितीय अदृश्य शक्ति से सम्पन्न हुआ। मैं इसमें महाराज जी का आशीर्वाद एवं प्रेरणा मानता हूं क्योंकि उन शक्तियों से सामना करने की क्षमता मुझमें खोजने के बाद भी दिखाई नहीं देती है। अतः महाराज सिद्ध संत थे। उनकी वाणी भविष्य के लिए सार्थक रही है, इसमें कोई संदेह नहीं है। साथ ही कुछ वर्षों में ही इस निर्जन प्रदेश में भव्य दिव्यदेश का निर्माण कर दिया है। साथ ही उनके आशीर्वाद स्वरूप मन्दिर निर्माण के समय ग्यारह मन सोने की वर्षा हुई जिससे इनके 22 कलशों का निर्माण हुआ। उन्होंने अपने मुख से कई बार कहा कि शास्त्री जी, ये सभी आपके भाषण और श्लोक का परिणाम हुआ है। मैंने कहा कि आपकी सद् इच्छा एवं सिद्धत्व का प्रमाण है कि आप जैसा जहां चाहते हैं, वैसा कर सकते हैं और कर लेते हैं। लेकिन इन सभी का उत्तर वे मुस्कुराकर, मौन रहकर ही देते थे। वह चमत्कारी एवं अद्भुत कर्म करके जनमानस को सही राह पर लाए। उनके वचन आज भी मेरे हृदय में गूंज रहे हैं। मैं हृदय से उनका कृतज्ञ एवं आभारी हूं। जबसे मैं इस आश्रम से सम्बद्ध हुआ हूं तबसे जीवन में शान्ति एवं सुख का अनुभव हुआ है। अतः मैं हृदय से उनके चरणकमल में नतमस्तक हूं। अपनी प्रणामांजलि उनके पावन चरण कमल में समर्पित करता हूं।

- डॉ. गुंजेश्वर चौधरी, प्राचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग, संस्कृत महाविद्यालय

● ● ● ● ●

गुरुवर की कृपा का जितना वर्णन किया जाये उतना ही कम है। अर्थशास्त्र से एम.ए. करने के बाद चार वर्ष पी.एच.डी. के विषय में सोचता रहता कि कब रजिस्ट्रेशन होगा। कभी मेरे टॉपिक का चुनाव नहीं हो पाता था, तो कभी गाईड का। मैंने भरे मन से गुरुजी से प्रार्थना की और उनकी कृपा से मात्र बीस दिन की तैयारी में ही मेरा टॉपिक पास हो गया।गुरु जी की मेरे ऊपर ऐसी कृपा हुई कि जो काम चार वर्ष में नहीं हो पाया वह चार दिन में हो गया। मैंने यह महसूस किया है कि यदि सच्चे मन से गुरु का स्मरण किया जाये तो वह भक्त के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

- वीरेन्द्र शर्मा, खुरजा (बुलंदेन्दशहर)

● ● ● ● ●

मेरी पत्नी राजबाला शर्मा का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। वह रात को डर जाती था। कुछ न कुछ बुदबुदाने लगती था। काफी परेशान होकर डॉक्टरों को दिखाया और उनके सुझाव पर सीटी स्कैन व अन्य टेस्ट कराए। डॉक्टरों को लगता था कि कही कोई दिमागी बीमारी हो सकती है। लेकिन हर रिपोर्ट सही व दुरूस्त आने पर भी दिमागी परेशानी बढ़ती गई और सारा परिवार परेशान व दुखी रहने लगा।

डॉक्टर भूपेन्द्र सिंह के सुझाव पर मैं श्री सिद्धदाता आश्रम गया और वहां श्री रामेश्वर सिंह जी के सम्पर्क में आया। उनके माध्यम से गुरुजी से मिला। उन्होंने मेरी धर्मपत्नी राजबाला को देखा और मुझे बताया कि आप अपने पितरों के लिए कुछ नहीं करते हैं। आप न तो श्राद्धों में किसी ब्राह्मण को भोजन व दान करते हैं और न ही आप अमावस्या पर पितरों के लिए कोई दान-पुण्य करते हैं। उन्होनें यह साफ तौर पर बताया कि आपकी धर्मपत्नी को किसी भी प्रकार की कोई भी बीमारी नहीं है। इसलिए सभी मेडिकल रिपोर्ट सही व दुरुस्त आई हैं। इन्हें केवल पितृदोष है। उन्होंने यह भी बताया कि देवी-देवताओं के मानने से अधिक फल पितरों के मानने, उनके नाम पर दान- पुण्य करने व ब्राह्मण को भोजन कराने से प्राप्त होता है। उन्होंने यह भी बताया कि जिसके पितृ प्रसन्न हैं उन्हें इस प्रकार का कोई कष्ट नहीं होता। एक दिन तो बहुत आश्चर्यजनक घटना घटी। रात लगभग एक बजे मेरी पत्नी को उपरोक्त परेशानी हुई और एक क्षण ऐसा लगा कि वो अब नहीं बचेगी। तभी उन्होंने गुरु महाराज को पुकारा। पांच मिनट बाद ही उन्होंने कहा गुरु महाराज मेरे पास बैठे हैं और वह ठीक हो गई। मैं दूसरे दिन श्री सिद्धदाता आश्रम पहुंच गया। स्वयं गुरु महाराज ने कहा कि मेरा एक मिनट का रास्ता था, एक बजे पुकारा था। मैं एक-एक पर पहुंच गया था।

हमने तुरन्त गुरु महाराज के आदेश अनुसार श्राद्ध व हर अमावस्या को ब्राह्मण को भोजन व दान पुण्य करना प्रारंभ कर दिया। गुरु महाराज की कृपा से उसी दिन से मेरी धर्मपत्नी राजबाला शर्मा पितृदोष से मुक्त हो गई। उनको रसोली की भी परेशानी थी और डॉक्टर के मुताबिक ऑपरेशन तय था। ऑपरेशन से पहले मैं पत्नी सहित गुरु महाराज से मिला और उपरोक्त परेशानी का जिक्र किया। गुरुजी ने कहा कि एक बार दुबारा अल्ट्रासाउंड करा लें। आदेशानुसार अल्ट्रासाउंड कराया और आश्चर्य हुआ कि रिपोर्ट में किसी प्रकार की रसोली न थी। यह है गुरु कृपा। हृदय से मानने पर गुरु कृपा अवश्य प्राप्त होती है।

- के.डी. शर्मा, एडवोकेट, फरीदाबाद

● ● ● ● ●

सन् 1998 के शुरू की बात है। मैं अपने बड़े भाई श्री शिवराम पाराशर की बीमारी की वजह से काफी परेशान था। सारा परिवार मेरे बड़े भाई श्री शिवराम पाराशर का इलाज करवाते-करवाते थक चुका था। उनकी सेहत दिन पर दिन गिरती जा रही था।

हमने कई डॉक्टरों, वैद्यों, भक्तों, तान्त्रिकों से उनका इलाज करवाया लेकिन परिणाम वही शून्य ही रहा। हम उनकी जिन्दगी की आस छोड़ते जा रहे थे कि एक दिन मेरी माता जी को किसी ने बताया कि आप श्री सिद्धदाता आश्रम में क्यों नहीं जाते, आपके पड़ोस में ही है।

यह बात सुनने के बाद हम सभी लोग श्री सिद्धदाता आश्रम पहुंचे। हमको देखते ही श्री गुरु महाराज ने अप्रत्यक्ष रूप से कहा कि अब तक कहां भटक रहे थे। इसके (तुम्हारे भाई के) जाने में सिर्फ चालीस दिन का समय बचा है। लेकिन मेरी शरण में आये तो इसको जीवन दान दूंगा। हमने गुरु महाराज से प्रार्थना की तो हमें 11 हाजरी लगाने का आदेश हुआ। उस दौरान मेरा भाई भी आश्रम आने में आनाकानी करता था व हमें गलियां देता था। लेकिन हम जबरदस्ती उसको आश्रम लाये व हाजिरी पूरी करवाई। श्री गुरु महाराज के आशीर्वाद व कृपा से उसके बाद हमारे भाई पर दवाईयों का असर शुरू हो गया व कुछ ही महीने बाद वह पूर्ण स्वस्थ हो गये।

यह तो केवल पहले दिन का अनुभव मैं आपसे बांट रहा हूं अन्यथा अगर मैं अपने सारे अनुभव आपसे बांटू तो हो सकता है कि एक किताब मुझे ही लिखनी पड़ जाये। मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि ऐसा सद्गुरु इस धरा पर मिलना असम्भव है।

- सी.पी. पाराशर, एडवोकेट, फरीदाबाद।

● ● ● ● ●

मैं एक वकील हूं। फरीदाबाद डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में प्रैक्टिस कर रहा हूं। कई वर्ष पूर्व एक शाम अपनी कॉलोनी की दुकान पर गया तो वहां एक दिव्य संत का चित्र देखकर दुकानदार से उनके बारे में पूछा। दुकानदार ने आश्चर्यचकित होकर कहा आप इन गुरुजी को नहीं जानते। अपनी कॉलोनी के निकट ही तो इनका आश्रम है। फिर उस भाई ने गुरुजी की महिमा का जो वर्णन किया उसे सुनकर मेरे मन में स्वामी जी के दर्शन करने की लालसा बलवती हो उठी और मैंने उससे अनुरोध किया कि किसी दिन मुझे भी महात्मा जी के दर्शन कराने ले चलो।

उसके कुछ दिन पश्चात् एक रविवार को मैं सपरिवार एक पारिवारिक समारोह में जाने के लिए तैयार हुआ ही था कि वही बन्धु आये और कहने लगे वकील साहब, चलिए गुरुजी के दर्शन करा लाऊं। मैंने टालना चाहा परन्तु उसने बताया कि आज माह का प्रथम रविवार है। आश्रम

में सत्संग है, गुरुजी के दर्शन होंगे और उनके मधुर वचन भी सुनने को मिलेंगे। ऐसा अवसर आप न छोड़ें।

उसकी बातें सुनकर मैं केवल पांच मिनट के लिए आश्रम जाने और गुरु जी के दर्शन कर लौट आने की बात पर तैयार हो गया। मैंने सोचा आज दर्शन कर लेता हूं तथा फिर किसी दिन प्रवचन सुन लूंगा। अपनी पत्नी से पन्द्रह बीस मिनट में लौट आने को कहकर उन सज्जन के साथ आश्रम के लिए चल दिया। कॉलोनी से बाहर आते ही उसने मुझे स्कूटर जंगल की ओर जाने वाले मार्ग पर मोड़ कर सीधे चलने को कहा मुझे शंका हुई परन्तु हिम्मत कर मैं आगे बढ़ता रहा। छः सात किलोमीटर चलने के पश्चात् बीच जंगल में एक बड़ी सी इमारत दिखाई दी। यही है गुरुजी का 'श्री सिद्धदाता आश्रम' उसने मुझे बताया। जंगल में विशाल जन समुदाय देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया। आश्रम के बाहर ही कुछ स्कूटर खड़े थे। मुझे भी अपना स्कूटर वहीं खड़ा करने को कहा गया जूता स्टैण्ड पर भीड़ को देखकर पांच मिनट में अपने लौट आने की बात सोचकर मैंने अपने नए जूते, जिन्हें मैंने आज पहली ही बार पहना था, उतार कर अपने स्कूटर पर ही रख दिए। आश्रम के अन्दर जाते हुए मेरे मन में बार-बार यही विचार आ रहा था कि कहीं कोई मेरा स्कूटर न ले जाए, कोई मेरे नये महंगे जूते न उठा ले। इन्ही शंकाओं में घिरा सत्संग हाल में पहुंचा। गुरुजी तो अभी हाल हॉल में आये नहीं थे। विशाल सत्संग हाल हॉल करीब-करीब भर चुका था। गुरुजी के आने से पूर्व आश्रम के एक सेवादार ने कहना शुरु किया। पहले आश्रम की पवित्रता का बखान किया फिर एकाएक कहने लगे, भाईयो! आप लोग यहां गुरु जी के दर्शन करने, प्रभु नारायण का स्मरण करने आये हैं। यदि किसी प्रेमी के मन में अपने स्कूटर चोरी होने का भाव, कभी जूते उठा जाने का भय छाया रहेगा तो प्रभु स्मरण तो नहीं हो पाएगा। यह तो जूता स्मरण हो गया। आप यहां दाता के दरबार में आये हैं। आप यहां से कुछ लेकर ही जायेंगे, कुछ खोकर नही। मुझ पर घड़ों पानी पड़ गया। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वे अभी मेरी ओर इशारा करके कहेंगे यह वकील कर रहा है जूता स्मरण। तभी हॉल में गुरुजी ने प्रवेश किया। मैंने भी उनका सभी के साथ जय-जयकार किया। गुरुजी का प्रवचन आरम्भ हुआ तो कुछ ऐसी बातें कहनी शुरू की जिन्हें मैं मन ही मन सोच रहा था। मुझे हैरानी थी कि मेरे मन की बातें गुरुजी कैसे जान रहे हैं, जो एक-एक बात का उत्तर देते जा रहे हैं। फिर उन्होंने अपना प्रवचन वकीलों पर, उनकी कार्य शैली पर मोड़कर मुझे पूरी तरह वशीभूत कर लिया। मैं गद्गद् भाव से प्रवचन सुनता रहा। भूल चुका था स्कूटर, जूते, घर पर तैयार बैठी पत्नी तथा पन्द्रह-बीस मिनट में लौटने की बात।

प्रवचन समाप्त होने के पश्चात् भोजन-प्रसाद इत्यादि लेकर मैं शाम को घर पहुंचा लगभग 9 घंटे बाद पत्नी चिन्तित थी। जब उसे आश्रम की बातें बताई तो वह विस्मित हुए बिना न रह

सकी। तब से निरंतर सपरिवार आश्रम आना लगा रहता है। हमारी अटूट आस्था इस स्थान के पूज्य गुरुजी के प्रति जागृत हो चुकी है। उस घटना के बाद सैकड़ों छोटे-बड़े अनुभव यहां मिले उनके बारे में फिर कभी लिखूंगा। अभी तो यही कहना चाहता हूं कि धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है तो 'श्री सिद्धदाता आश्रम' में श्री गुरु महाराज के चरणों में है, केवल यहीं है, यहीं है, यहीं है।

- चौ. राजेन्द्र खुटेला, एडवोकेट, फरीदाबाद।

● ● ● ● ●

गुरुदेव के सान्निध्य में श्री सिद्धदाता आश्रम रूपी वट वृक्ष की शीतल छाया में हुए सुखद अनुभवों की तो एक लम्बी अटूट शृंखला है। जब इन अनुभवों के बारे में सोचता हूं तो सर्वप्रथम अपनी कृतघ्नता ही याद आती है। साधारण मानव दिव्य पुरुषों को पहचानने में कैसी-कैसी भयंकर भूल कर बैठता है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मैं स्वयं हूं। नवम्बर 1978 में गुरुजी से पहली बार साक्षात्कार हुआ। उन दिनों वे कोटला के मंदिर में विराजते थे। मुझे नौकरी की समस्या थी। मैं उनसे मिला तो उन्होंने आश्वासन दिया कि जनवरी 1979 में आपको अच्छी नौकरी मिल जायेगी। जनवरी माह में मुझे एक सरकारी नौकरी मिल गई तथा मेरी पोस्टिंग तेजपुर, असम में हुई। मैं गुरुजी से मिला और असम से अन्यत्र स्थानांतरण की संभावना के बारे में पूछा। उन्होंने आश्वासन दिया और कहा कि शीघ्र ही मेरा स्थानांतरण देहली हो जायेगा। मार्च 1979 में मैं दिल्ली आ गया। इन सब चीजों को एक साधारण ज्योतिषी की गणना मानते हुए मैंने विशेष महत्व नहीं दिया और इस घटना के पश्चात् 3-4 साल तक मंदिर की ओर रूख नहीं किया। अपने काम की व्यस्तता में यह भी भूल गया कि कभी किसी से मैंने सहायता भी ली थी। 1984 तक नौकरी करने के पश्चात् मैंने वहां से त्यागपत्र दे दिया और उसी वर्ष नांगलोई में प्लास्टिक का सामान बनाने का कारखाना लगाया। 1985 में इस काम में मुझे भयंकर हानि हुई। लगभग सारी जमा पूंजी बर्बाद हो गई तथा मैं सड़क पर आ गया। कई स्थानों पर भटकने के बाद जून-जुलाई 1986 में मुझे पुनः गुरु जी की याद आई। मैं कोटला के उसी मंदिर में पहुंचा तो पहले की अपेक्षा काफी भीड़ होने लगी थी तथा नाम लिखा कर गुरु जी से कुछ पूछा जा सकता था। कई दिन तक मेरा नाम ही नहीं लिखा जा सका। एक दिन किसी प्रकार नाम लिखवाया। जब गुरुजी के सामने पहुंचा तो देखते ही गुरुजी बोले, अजीत सिंह जी! यदि किसी के द्वारा कोई काम हो जाये तो क्या उसको थैंक्यू भी नहीं कहना चाहिए?

इतना सुनते ही मैं पानी-पानी हो गया और मैंने वहीं खड़े-खड़े प्रण किया कि अब प्रतिदिन गुरुजी के चरणों में जल एवं पुष्प हार चढ़ाऊंगा। तत्पश्चात् ही मैं जलपान इत्यादि ग्रहण करूंगा। यह क्रम चलता रहा और एक वर्ष या तेरह महीने पश्चात् एक दिन गुरुजी ने मुझे बुलाया।

मेरी पीठ थपथपाकर आशीर्वाद दिया कि शीघ्र ही तुम्हें कोई अच्छी नौकरी मिल जायेगी। इस घटना के 2-3 महीने पश्चात् ही मुझे सूरत में एक अच्छी नौकरी मिल गई। एक दिन मैंने गुरुजी से निवेदन किया कि सूरत तो बहुत दूर है। मुझे आप अपने चरणों में ही बुला लें और मेरा स्थानांतरण दिल्ली हो गया। गुरुजी की कृपा से यह नौकरी मुझे बहुत फली। नौकरी छोड़कर अपना व्यवसाय करने की मेरी इच्छा मन से नहीं गई। गुरुजी भी मेरी इस इच्छा को समझ रहे थे। नौकरी से त्यागपत्र देकर एक अच्छे व्यवसायिक क्षेत्र में आ गया। गुरुजी के आशीर्वाद से यह व्यवसाय बहुत फलीभूत हो रहा है। 1986 के बाद से निरंतर गुरु चरणों की सेवा कर रहा हूं और गुरुजी का असीम प्यार पा रहा हूं। इस बीच मैंने जो भी इच्छा की वह पूरी हुई।

- अजीत सिंह, कोटला, दिल्ली

● ● ● ● ●

गुरुजी महाराज के सम्पर्क में आने से पूर्व मैं एक बेरोजगार, बेहद गुस्सैल और बात बेबात पर मार-पीट पर उतारू हो जाने वाला युवक था। गुरुजी के संपर्क में आने मात्र से कई आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए। पहले नौकरी फिर अपना व्यवसाय, क्रोध के स्थान पर धैर्य एवं एक गंभीर व्यक्तित्व प्राप्त हुआ। इस परिवर्तन को कुछ लोग किस्मत का खेल मान सकते है तो कुछ समय पर भाग्योदय कह कर मेरी भावनाओं को नकार सकते हैं। इसलिए मैं अपने जीवन के उन अनुभवों को आपके साथ बांट रहा हूं जहां भाग्य या समय का नहीं एक सिद्ध सामर्थ्यवान युग पुरुश या कहूं भगवान की कृपा स्पष्ट परिलक्षित होती है। एक शाम चाचा-चाची घर पर नहीं थे। बल्ब के ऊपर मच्छर मारने की टिकिया लगाकर छोड़ गये। न जाने कैसे टिकिया नीचे कपड़ों पर गिरी और कपड़ो ने आग पकड़ ली। फिर तो रस्सी पर पड़ा एक-एक कपड़ जल उठा। रस्सी के ठीक नीचे चारपाई पर बिस्तर लगा हुआ था। उसी दीवार पर एक थैला टंगा था। रस्सी पर पड़ प्रत्येक कपड़ा जलता रहा परन्तु वह नाइलोन की रस्सी नहीं जली। यदि रस्सी जलकर टूटती तो नीचे पड़े गैस के सिलेन्डर पर गिरती और सिलेन्डर फट कर सारे घर में आग फैल जाती। उस थैले के निकट बहुत से कपड़े जले परन्तु वह थैला नहीं जला। आग जैसे लगी थी वैसे ही खुद-ब-खुद बुझ गई। कुछ देर बाद चाचा-चाची लौटे तो यह दृश्य देखकर धक से रह गये। यदि प्लास्टिक की वह रस्सी जल कर टूटती तो आग बिस्तर और चारपाई को अपनी लपेट में ले लेती जिससे घर का कुछ भी सामान बचना असंभव था क्योंकि निकट ही मिट्टी का तेल तथा डीजल से भरी दो कैन भी रखी थी। सबसे बड़ी बात यह है कि उस थैले में मेरे चाचा की पूरे जीवन की कमाई थी। जमीन-मकान के कागजात, फिक्स्ड डिपोजिट की रसीदें, डाक घर

तथा बैंक के खातों के कागजात तथा सरकार से मिलने वाले मुआवजे के कागजात। देखने वाला हर व्यक्ति आश्चर्यचकित था कि सूती कपड़े जल गये मगर नाइलोन की रस्सी को जलने से किसने रोका? यह रहस्य केवल मैं ही समझ सकता था। गांव के लोग तो उस घटना को याद कर आज भी दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं। एक और घटना मेरे अपने ही घर की है। किसान परिवार होने के कारण डीजल की आवश्यकता हर दम रहती ही है। हमारे यहां भी एक-दो केन डीजल हमेशा रहता है। एक बार खाना इत्यादि खाकर हम लोग सोने चले गये। घर में मेहमान आये हुए थे। एक छोटा बच्चा भी था। वह चारपाई पर अकेला सोया हुआ था। निकट ही दूसरी चारपाई पर उसकी मां सोई थी। चूल्हे के निकट रखी केन तक आग की चिंगारी पहुंची और उसमें छेद हो गया तथा डीजल के रूप में आग की नदी बह चली। बच्चे की चारपाई के ठीक नीचे से यह ऊंची लपटों वाली अग्नि रेखा तेजी से बहती हुई दूसरी चारपाई के निकट से निकल रही था। कुछ गर्मी महसूस कर बच्चे की मां की आखं खुली तो बच्चे को आग में घिरा देख उसके मुंह से चीख निकल पड़ी। हम सभी लोग जाग गये। भागकर बच्चे को आगे से निकाला तो देखा बच्चा पूर्ववत सोया हुआ था। उसके कपड़ो को स्पर्श करने पर भी किसी प्रकार की गर्माहट का अनुभव नहीं हो रहा था। वह पूर्णतया शीतल था। बान की बनी चारपाई ने भी आग नहीं पकड़ी जबकि जूट के बान कितनी जल्दी आग पकड़ लेते हैं। सभी जानते हैं कि आग की धारा बिना कोई नुकसान पहुंचाये शीतल जल धारा के समान बाहरी नाली तक पहुंची और शांत हो गई। यह चमत्कार नहीं तो और क्या था? एक घटना और बताता हूं। मैंने नई कार खरीदी थी। उसे लेकर आश्रम आया। गुरु जी का आशीर्वाद लिया। वापस घर जा रहा था। रात हो चली थी। मुख्य सड़क द्वारा जाने से गांव दूर पड़ता अतः एक कच्ची ढलान से शार्टकट लिया। नीचे सीधे रास्ते पर पहुंचने से पहले ही कार के पिछले हिस्से में तेज आवाज आयी। गाड़ी रोक कर नीचे उतरा तो यह देखकर दंग रह गया। कि जहां से मैंने कार निकाली थी वहां 5 फुट गहरी और लगभग 3 फुट चौड़ी एक खाई खुदी हुई थी। सामान्य परिस्थितियों में कार वहां से नहीं निकल सकती थी। परन्तु न जाने किस दिव्य शक्ति ने कार को बिना खाई में गिरे हुए पार उतार दिया था। मेरी आस्था तो गुरु महाराज के चरणों में ही है।

\- अशोक चौहान, नोएडा

● ● ● ● ●

हमें मेवला महाराजपुर के निवासी होने का गौरव प्राप्त है। परम पूज्य गुरुजी ने अरावली पर्वत श्रृंखला के इसी गांव की भूमि पर श्री सिद्धदाता आश्रम-सिद्धपीठ का निर्माण किया है। आश्रम के निकट ही निवास होने के कारण यहां निरंतर आना होता रहता है। पिता श्री

धर्मवीर चपराना जी को तो गुरुजी का विशेष स्नेह प्राप्त है। जब से गुरुजी के चरण इस गांव की भूमि पर पड़े हैं, यहां का वातावरण बहुत ही पावन एवं शुद्ध प्रतीत होता है। गांव के अधिकांश परिवार अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं के निवारण के लिए गुरुजी की शरण में जाते रहते थे। और सभी को आश्चर्यजनक रूप से इन विपत्तियों से मुक्ति भी मिली है। गत् 1992 में मेरी पत्नी सुनीता बीमार पड़ गई। इलाज कराने पर भी जब उसकी तबियत में सुधार नहीं हुआ तो उसे दिल्ली के जीवन नर्सिंग होम में भर्ती कराया। विभिन्न स्तरों पर सभी प्रकार के टैस्ट करने के पश्चात् डॉक्टरों ने बताया कि इसके शरीर मे खून बनना बंद हो गया है तथा खून का स्तर निरंतर घटता जा रहा है। कई दिन तक निरंतर इलाज चलाता रहा परन्तु स्थिति सुधरने के स्थान पर बिगड़ती ही गई। दसवें दिन तो डॉक्टरों ने बताया कि इसके शरीर में अब केवल तीन प्वाइंट खून बचा है और कोई बहुत बड़ा चमत्कार ही इसे बचा सकता है। आप लोगों को जो भी करना है कर लें।निराशा की इस घड़ी में मैं और पिताजी तुरन्त गुरुजी के पास गये। गद्दी पर गुरुजी से भेंट हुई। कुछ कहना ही चाहते थे कि गुरुजी ने कहा, बच्ची की तबियत बहुत ज्यादा खराब हो गई है। स्थिति इतनी गंभीर है कि डॉक्टरों ने भी आशा छोड़ दी है। तुम लोग घबराओ नहीं मैं दरबार की ओर से उसे 90 प्रतिशत जीवनदान देता हूं। अगले तीन दिन में उसे अस्पताल से छुट्टी मिल जायेगी। उन्होंने प्रसाद दिया और कहा कि थोड़ा सा प्रसाद सुनीता के मुंह में डाल देना। जब हमने उन्हें बताया कि वह तो पिछले एक सप्ताह से अचेत है और कुछ भी नहीं खा रही है तो गुरुजी बोले, जाओ थोड़ा सा प्रसाद उसके मुंह में डाल दो। आशीर्वाद और प्रसाद लेकर हम अस्पताल लौटे तो पत्नी की स्थिति में काफी सुधार था। प्रसाद उसके मुंह में डाला। कुछ क्षणों में कुछ ऐसा महसूस हुआ जैसे उसने प्रसाद निगल लिया है। अगले कुछ घंटों में उसने आंखें खोल दी। दूसरे दिन तक वह बिल्कुल सामान्य दिखने लगी और डॉक्टरों ने अगले दिन अर्थात् तीसरे दिन सुबह ही उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी। हम उसे लेकर सीधे आश्रम गये और गुरुजी से आशीर्वाद लिया, देव दरबार में प्रणाम किया। कुछ दिनों में उसकी कमजोरी भी समाप्त हो गई। तब से पत्नी बिल्कुल ठीक है। अस्पताल के डॉक्टर इस चमत्कार को रहस्य मान रहे हैं। चिकित्सा विज्ञान के सिद्धातों को मात देकर गुरुजी के आशीर्वाद ने मेरा घर-परिवार टूटने बिखरने से बचा लिया। गुरुदेव के चरणों में शत्-शत् नमन।

- जनकराज चपराना, मेवला महाराजपुर, फरीदाबाद।

● ● ● ● ●

कभी-कभी श्री सद्गुरु भगवान नारायण से अपने समर्पित एवं शरणागत शिष्यों एवं भक्तों के लिए पक्षपात भी कराते हैं और वह सब कुछ उन्हें दिला देते हैं जो उनके भाग्य में नहीं भी लिखा होता है।ऐसा मैंने श्री सद्गुरु महाराज के चांदनी चौक सत्संग में 1995 में सुना था। श्री सद्गुरु महाराज के मुखारविन्द से निकले हुए ये वचन सत्य हैं। 100 प्रतिशत सत्य हैं। इसका जीता-जागता प्रत्यक्ष प्रमाण है यह दासानुदास नारायण कुमार। जो श्री सद्गुरु महाराज के चरणों में 1992 से समर्पित है।इस दास के छोटे लड़के अनुज को सितंबर 1998 में एक भयानक बीमारी ने घेर लिया। जिसके फलस्वरूप उसके हाथ, पैर मुड़ गये, आवाज बंद हो गई और पूरा शरीर निढ़ाल हो गया। गर्दन लुढ़कने लगी। दिल्ली के सभी अस्पतालों में दिखाया- मेडिकल, अपोलो, विलिंगडन। विमहन्स में लड़का तीन महीने तक रहा। डॉक्टर परीक्षण करते रहे, कोई लाभ नहीं हुआ। जैसे लड़के को लेकर जाते थे वैसे ही वापस ले आते थे।मैं आश्रम में निरंतर आता रहा। जनवरी 1999 में श्री गुरु महाराज ने यज्ञशाला में उसके लिए यज्ञ किया और रक्षा कवच स्वयं पहनाया और हमें यह बताया कि 95 प्रतिशत तो इस बच्चे का खेल खत्म है पर मैंने 5 प्रतिशत शेष पर इस बच्चे का केस उस अदालत में लगा दिया है और कहा है कि यह बच्चा हमें पूर्ण स्वस्थ्य तथा दीर्घायु चाहिए, चाहिए, चाहिए। तीन बार चाहिए का अर्थ है कि यह सब निश्चित चाहिए और ऊपर से स्वीकृती मिल गई है। श्री गुरु महाराज ने कहा जब मैंने मांगा है तो उसको देना ही पड़ेगा।श्री सद्गुरु महाराज ने हमारे लिए उस बच्चे को नवजीवन प्रदान किया जो शायद हमारे भाग्य में नहीं था। इतनी बड़ी कृपा, इस तरह से जीवनदान देना और उस हालत में जब डॉक्टरों ने हमें जवाब दे दिया, कहा कि इस बच्चे के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, अगर यह जीवित रहेगा तो शारीरिक ताकत की हमेशा कमी रहेगी, जीना ना जीना बराबर ही समझो। डॉक्टरों ने हमें बहुत डराया पर हमारा विश्वास श्री गुरु महाराज की कृपा पर बना रहा। बीमारी के दौरान हम इतने दुखी हुए कि हमने श्री सद्गुरु महाराज से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि यदि यह बच्चा ठीक नहीं हो सकता तो इसे वापस ले लो। इस तरह अपंग मुर्दा लाश को लेकर हम क्या करेंगे। श्री गुरु महाराज ने कहा कि तेरा गुरु इतना कमजोर एवं असमर्थ नहीं है। उन्हें हमारे शब्दों से दुख भी नहीं पहुंचा। श्री गुरु महाराज ने वचन फरमाये कि मेरी हालत उस मां की तरह है जो नौ महीने बच्चे को पेट में रखती है। उसके लिए सारे कष्ट सहती है और पुत्र को देखकर सारे कष्ट भूल जाती है। गुरु महाराज सारी-सारी रात जाग कर स्मरण करते रहते हैं, यज्ञ करते हैं और अपने शिष्यों एवं भक्तों के लिए कष्ट सहते हैं और यदि कोई शिष्य एवं भक्त उनके इस महान उपकार को भूल जाता है तो श्री गुरु महाराज को बहुत दुख होता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार किसी मां का बच्चा अपनी मां को भूल जाये, उसके उपकार को भूल जाये। सत्य तो यह है कि श्री सद्गुरु महाराज हमारे लिए मां भी हैं, पिता भी हैं। भाई भी हैं, बन्धु

और सखा भी हैं। जो हर पल, हर क्षण अपने भक्तों के साथ सूक्ष्म रूप में मौजूद रहते हैं और स्वयं रूप में नारायण भगवान के दर्शन कराते हैं। हमारे गुरु धन्य हैं, श्री युगादि गुरु धन्य हैं। जिनके श्री सद्गुरु महाराज कृपापात्र हैं और हम सभी धन्य हैं जिनको ऐसे श्री नारायण स्वरूप श्री सद्गुरु महाराज मिले हैं।

- नारायण कुमार, स्वास्थ्य विहार, दिल्ली

● ● ● ● ●

जा के रक्षक गुरु धनी, कहा करि सकें और।

विश्वास करके गुरुजी को जब भी पुकारो तो गुरुजी महाराज क्षण भर में संसार के किसी भी कोने में संकट को टालने आ जाते है। निम्नलिखित घटना इस बात को सिद्ध करती है। हम परिवार के 9 सदस्य नवम्बर 1998 में कार द्वारा वैष्णो देवी जा रहे थे। गुरुजी गद्दी पर विराजमान थे। हमने देव दरबार में बोला कि हम वैष्णों माता जी जा रहे हैं। गुरुजी ने हमारी तरफ देखे बिना ही लिखते-लिखते बोला, जाओ।मनसा देवी के दर्शन कर हम रोपड़ की तरफ जा रहे थे तभी मुझे कार चलाते-चलाते नींद आ गयी। देखने वाले कहते हैं कि कार पहले सड़क पर सामने दाहिने तरफ से आ रहे ट्रक से टकराते-टकराते बची, फिर एक दम बायें तरफ सड़क से नीचे खेतों में घुस कर पेड़ से टकरा गई। मेरी छाती में स्टेरिंग घुस गया था। गाड़ी एकदम खत्म सी हो गई थी। खेतों पर काम करते हुये लोगों ने बाहर निकाला तो सांस भी नहीं लिया जा रहा था। सड़क पर पड़े-पड़े जय गरुदेव, जय गुरुदेव बोलना चालू कर दिया। कोई हमें अस्पताल नहीं ले जा रहा था। तभी एक सज्जन आये और बोले, सारा परिवार सूमो में बैठो। गाड़ी और सारा सामान जो सड़क पर बिखरा पड़ा था, छोड़कर रोपड़ चले गये। वे सज्जन हमें परमार नर्सिंग होम, रोपड़ ले गये। उन्होंने हमारा पूरा चैकअप कराया। उन्होंने हमारे खाने पीने, दवाईयों, बच्चों की दूध की बोतलें इत्यादि हर प्रकार से रात 12 बजे तक पूरी सेवा की और कोई पैसा भी नहीं लिया। बोले कि आप पैसों की बात करोगे तो हम चले जायेंगे। आज के युग में बिना जान पहचान के तन, मन, धन से सेवा करना गुरुजी की कृपा के बिना संभव नहीं था।उन्होंने ही दिल्ली फोन कराया कि रोपड़ के पास हमारा एक्सीडेन्ट हो गया है। भाई सुनील नारंग ने आश्रम फोन किया। किसी प्रकार गुरुजी के पास एक्सीडेन्ट की बात पहुंची। गुरुजी ने कहा, सुनील को बोलो कि मैं यहां से सबको देख रहा हूं, सब ठीक है। कल परिवार के सदस्य ठीक-ठाक आश्रम आयेंगे जबकि वहां हम रोपड़ नर्सिंग होम में थे। जांच करने आए पुलिसवाले हमें जिंदा देखकर हैरान थे।

अगले दिन, 21 नवम्बर 1998 को आश्रम गये तो गुरुजी के दर्शन हुये और उनके चरणों में अनंत धन्यवाद किया। हमें देखकर गुरुजी बोले, भाई! मेरे ठाकुर जी समय से पहुंच गये थे, किसी चीज की कोई कमी तो नहीं आई? हम मन ही मन में सोच रहे थे कि कितनी बड़ी गलती करके गये थे। वैष्णों देवी जाने की हमने दरबार से आज्ञा तो ली नहीं, बस बताकर चले गये कि हम वैष्णों देवी जा रहे हैं। जिन्होंने वहां हमारी सहायता की उनका नाम श्री पूरन सिंह है जो न्यू दोआबा स्वीट्स, 17 सैक्टर चण्डीगढ़ के संचालक है। पूरन सिंह जी ने बताया कि जब भी वह घटनास्थल से जाने की सोचते कोई उन्हें रोक लेता। सड़क दुर्घटना में उनकी एक आंख खराब हो गई थी। अच्छे-अच्छे डॉक्टरों से इलाज कराया लेकिन फर्क नहीं पड़ा। भाई सुनील नारंग बोले आपके लिये हम दरबार में गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करेंगे। गुरुजी आपकी आंख जरूर ठीक करेंगे। यहां आश्रम में गुरुजी के चरणों में प्रार्थना की। पूरन सिंह जी को एक साल बाद 19/11/99 को फोन किया और पूछा तो उन्होंने बताया कि जिस आंख के बारे में हर डॉक्टर मना कर चुका था। वह आंख 90 प्रतिशत ठीक हो चुकी है। गुरुजी की असीम कृपा है , मैं भी गुरुजी के दर्शन करने जरूर आऊंगा। हमें तो पूर्ण विश्वास है कि गुरुजी हर क्षण हमारे साथ हैं।

- संजीव नारंग, नई दिल्ली

● ● ● ● ●

मैं वर्षों से आश्रम से जुड़ा हुआ हूं। बाबा ने मुझे तथा मेरी धर्मपत्नी को चमत्कारी रूप से गुड़गांव सत्संग में, आश्रम में और फिर नामदान के लिए बुलाया। 15 मई सन् 2000 को बड़े भाई का फोन आया कि गांव पहुंचो। मां की तबियत खराब है। पांच रोज से चारपाई पर ही अचेत अवस्था में है। हमने बाबा से प्रार्थना की और गांव पहुंच गए। सभी संबंधी, रिश्तेदार अंतिम समय में कुछ न कुछ मां को दान स्वरूप देकर पुण्य कमा रहे थे ताकि प्राण आराम से निकालें।

एकाएक ही मेरी आंखें बन्द हो गई और मन फरीदाबाद आश्रम बाबा गद्दी पर पहुंच गया। बाबा से अरदास लगाई कि एक बार मां को मेरे से बुलवा दो। मेरी बहनों व धर्मपत्नी ने गुरु महाराज की आरती गानी शुरू कर दी। सहसा चमत्कार हो गया, मां ने बड़े भाई साहब को आवाज लगाई, भैरू! सभी हक्के बक्के रह गये। भाई साहब ने कहा, हां मां! मैं तेरे पास ही हूं। मां ने आंखें खोल दी। मां बोली, 'वे वापस गये, चारों वापस चले गये। दाढ़ी वाला बाबा बैठा था, सोटी लेकर, तिलक वाला बाबा बैठ गया, भगा दिया, चारों खाली गये, और कही जाओ, बाबा ने कहा' आदि आदि।

- बनवारी लाल शर्मा, गुड़गाँव।

● ● ● ● ●

20 अप्रैल 1996 को रात 8.45 बजे भैया (अरूण गंभीर) भाभी (रेणु गंभीर) व उनके बेटे जतिन, मोहित किसी रिश्तेदार की शादी के लिए पहाड़गंज की अपनी दुकान से निकले तभी पापा ने पीछे से आवाज दी शादी के स्थान व रूट को समझ लो। भैया-भाभी व बच्चे जैसे ही अपनी- दुकान की तरफ मुड़े, तभी जोर से धमाका हुआ। वह धमाका कुछ और नहीं बम ब्लास्ट ही था। उस धमाके के कारण हमारे आस पास की सारी दुकानें गिर गई और उन दुकानों के मलबे में शायद कोई भी नहीं बच पाया। मगर हमारी दुकान आगे से न गिर कर पीछे से गिरी। आगे की तरफ हमारा ऑफिस था। ऑफिस बच गया। यहां पूजाघर में हमारे गुरुजी का निवास था। यदि पापा आवाज न देते तो वह लोग बम की चपेट में आने से बच नहीं सकते थे। वह बच निकले क्योंकि स्वंय नारायण स्वरूप भगवान गुरुदेव हमारी रक्षा करने आ गए थे।

यह गुरुजी की ही कृपा है जो हमारे परिवार को कदम-कदम पर बचाती आ रही है। मैं उनका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। हम तो सभी से यही कहते हैं कि-

चिंता हमें उनकी नहीं, चिंता उन्हें हमारी है।
क्यों करें चिंता, रक्षक 'सुदर्शन चक्रधारी' है।

- स्वतंत्र गंभीर, नई दिल्ली।

● ● ● ● ●

सतगुरु महाराज जी का यह कथन है कि भगवंत की कृपा से संतपुरुष मिलते है व संतपुरुषों की कृपा से भगवंत मिलते हैं, अकाट्य सत्य है। हमारा परिवार भगवान की कृपा से वर्ष 1991 में सतगुरु महाराज जी की शरण में आया। मानव की यह विडंबना रही है कि वह भगवान की शरण में तभी जाता है जब हर तरफ से निराश हो जाता है तथा उसकी मंजिल प्राप्ति के रास्ते बंद हो जाते हैं। ऐसा ही एक हादसा यह भी है। घटना यह है कि दिल्ली में किसी दुर्जन परिवार ने हमारा मकान किराए पर लेकर कब्जा कर लिया। उसे छुड़वाने के लिए ऐड़ी-चोटी का जोर लगाते-लगाते थक गए थे। हमारे पड़ोसी ने सतगुरु महाराज के विषय में बताया। हम वहां गए तो श्री गुरु महाराज जी के दर्शन तो नहीं हो पाए क्योंकि वह उन दिनों राजस्थान गए हुए थे। हमारी बात आश्रम के एक सेवक से हुई। उन्होंने हमें चालीस दिन लगातार श्रद्धा और

विश्वास के साथ आने के लिए कहा। इस दास ने उनकी आज्ञा मानी व पूरे चालीस दिन होने को आए। इसी समय में गुरु महाराज जी के दर्शन हुए। दिसम्बर माह के पहले रविवार के सत्संग में दास का दिल न लगने के कारण पत्नी व बच्चों से चलने को कहा। पत्नी ने चलते समय गुरु महाराज जी से मन-ही-मन प्रार्थना की कि हमें मकान खाली मिले। उस किरायेदार से वार्तालाप ही न हो। इसके दूसरे दिन जब यह दास वहां गया तो आश्चर्यजनक रूप से दास का मकान खाली था। वे लोग दो दिन पहले ही मकान छोड़कर चले गए थे। कहां वे लोग गोली चलाने व लड़ाई-झगड़े की बात करते थे। उस दिन से हम गुरु महाराज जी के प्रति समर्पित हो गए। परन्तु गुरु महाराज की कृपा तो उसी दिन से ही बरसनी शुरू हो गई थी, जब हमने पहले दिन श्री सिद्धदाता आश्रम में कदम रखा।

सच है-

जाके रक्षक गुरु धनी, कहा करि सके और।
हरि रूठे तो ठोर है, गुरु रूठे नहीं ठोर।।

- अशोक ठाकुर, सैक्टर-17, फरीदाबाद।

● ● ● ● ●

श्री सद्गुरुदेव महाराज जी का अपने सभी भक्तों पर शुभ आशीर्वाद है और गुरुदेव जी समय-समय पर अपने सभी भक्तों एवं उनके परिवार के सदस्यों की हर समय- चाहे दिन हो या रात, किसी भी रूप में आकर रक्षा करते हैं। उसी रक्षा को हम श्री गुरुदेव महाराज जी का चमत्कार कहकर पुकारते हैं। ऐसा ही एक चमत्कार मेरे साथ भी हुआ था जिसके प्रत्यक्षदर्शी और डॉक्टर भी कहते हैं लड़के की हिम्मत थी जो बच गया। श्री गुरुदेव महाराज के आशीर्वाद से चार-चार ऑपरेशन टल गए और मैं ऐसे ही सही हो गया।

मेरे छोटे लड़के का जन्मदिन 23 नवम्बर 1999 मंगलवार को था। लेकिन मंगलवार होने के कारण मन में एक विचार बना कि श्री गुरुदेव जी के दर्शन के लिए अगले दिन आश्रम में चला जाए। अगले दिन योगेश को तेज बुखार हो गया। हमारे रिश्तेदार को फोन आया कि शुक्रवार को कार में आश्रम चलेंगे। हमने वह बात मान ली और कार्यक्रम फिर कैंसिल हो गया। मेरी दुकान के साथ छोटे भाई संजय की बल्व फैक्ट्री थी। फैक्ट्री के अन्दर एल.पी.जी. गैस का सिलेंडर लीक हो गया और फैक्ट्री से बाहर ले जाने की कोशिश में सिलेंडर दरवाजे के पास ही गिर गया। मैंने

गैस की आवाज सुनी तो पहले सिलेंडर के रिसाव को हाथ से रोका, पांवों के बीच में सिलेंडर को दबाया और सिलेंडर का ढक्कन मांगा। लेकिन फैक्ट्री के सभी कर्मचारी भाग गए थे। रिस चुकी गैस में आग लग गई और मैं भी आग की लपटों में पूरा घिर गया। मेरे सारे कपड़े जल गये थे। मेरा शरीर भी कई जगह से झुलस गया था। एकदम लगा कि जैसे कोई आदेश दे रहा है। जैसा आदेश मिला मैंने वैसा ही किया। फैक्ट्री में चालू सिलेंडरों को बंद किया। फिर आदेश हुआ कि बिजली का मेन स्विच बंद करो और आदेशानुसार फैक्ट्री का दरवाजा बंद करके बाहर आ गया। जिस सिलेंडर में आग लगी हुई थी उस सिलेंडर के पास में खड़ा हो गया। मैंने देखा कि मेरे साथ कोई सफेद कपड़े डाले और हाथ में आग बुझाने का छोटा सिलेंडर पकड़े खड़ा हुआ है। मुझे उनके केवल कपड़े और सिलेंडर दिखाई दिये। सिलेंडर के दूसरी तरफ भयानक आग की लपटें निकल रही थी। आग बुझाने के पांच छः सिलेंडर प्रयोग लाए जा चुके थे। आग बुझती और फिर भड़क जाती। आग की लपटें 15 फुट ऊंचाई तक उठ रही थीं। आदेशानुसार सिलेंडर पर कैप लगा दी। उसके बाद वह व्यक्ति नजर नहीं आया और मुझे डॉक्टरी इलाज के लिए अस्पताल ले गये।

डॉक्टर के मुताबिक 10 दिनों पश्चात् जख्म ठीक होने की बजाय हरे होते जा रहे थे। उनका कहना था कि इसकी सर्जरी ही करनी पडेगी। लेकिन मैंने घरवालों से कहा कि मुझे श्री गुरुदेव जी के पास ले चलो। श्री गुरुदेव जी गद्दी पर विराजमान थे। गुरुदेव बोले कि इसे हुआ ही क्या है। इसका मैंने सब कुछ तो बचा दिया। इसके दिमाग, सिर आंखें, छाती और शरीर के बाकी अंगों को कुछ हुआ है क्या? जो इतनी भयानक आग में घिर गया हो उसमें से सुरक्षित निकल सकता था क्या?

मैंने श्री गुरुदेव जी से कहा कि गुरुजी आपके हाथ कैसे हैं? श्री गुरुदेव जी कहने लगे मेरे हाथ को क्या हुआ है? मैंने कहा जब आप आग बुझाने के लिये आये थे तो आपके दोनों हाथ जल गये थे और उनमें छाले भी पड़ गये थे। आपकी शॉल का एक कोना भी जल गया था। तब श्री गुरुदेव जी ने अपने हाथ दिखाये और कहा कि हम बाबाजी हैं, हमको क्या होगा। गुरु जी के दोनों हाथ बिल्कुल अच्छे थे। श्री गुरुदेव जी ने कहा कि जो शॉल जल गई है, उसकी चिंता मत कर। उस जैसी सैकड़ों शॉल हमारे पास है। गुरुदेव ने कहा कि यह जो कुछ कह रहा है, वह बिल्कुल सच है। जिस समय यह घटी थी उस समय मैं गद्दी पर विराजमान था। जिस पल यह दृश्य दिखा कि मेरे भक्त के प्राण संकट में हैं, मैंने घटनास्थल पर पहुंचकर इसके प्राणों की रक्षा की और आग को बुझाया।

मैंने श्री गुरुदेव जी से कहा कि डॉक्टर ऑपरेशन के लिये कह रहे हैं। गुरुजी बोले करा लो, ऑपरेशन करना क्या है। जांघ से थोड़ा मांस का टुकड़ा लेकर हाथों पर लगा देना है और उस जख्म को एक सप्ताह में ठीक भी कर दूंगा।

मैंने कहा कि गुरुदेव, जब आपने ऑपरेशन करवाके ठीक करना है तो आप इन जख्मों को बिना ऑपरेशन के ही ठीक कर दीजिए। तब श्री गुरुदेव जी महाराज ने आशीर्वाद दिया कि जा तेरे ये जख्म बिना ऑपरेशन के ठीक हो जायेंगे और कहा कि जहां पर चारों का संगम हो रहा हो तो चिंता की क्या बात अर्थात् गंगा राम अस्पताल, डॉक्टर मंगल पाण्डे जी, पट्टी करने वाला गोपाल- गंगा, राम, मंगल, गोपाल का संगम हो तो वहां पर चिंता किस बात की। इसलिये तेरे ये जख्म आज से ही यहीं अभी से ठीक होना शुरू हो गये हैं। डॉक्टरों ने कहा कि चार दिन के बाद सर्जरी करनी है। लेकिन उसके बाद जख्म एक दम से सही होने लग गये। जिस दिन ऑपरेशन होना था डॉक्टरों ने दुबारा चेक किया तो हैरान रह गये क्योंकि जो जख्म 10 दिन तक लगातार गहरे हो रहे थे। वे इन चार दिनों में बहुत अच्छे हो गये। डॉक्टर और सर्जन भी इससे हैरान थे।

डॉक्टरों ने कहा कि मांस की एक परत 30 दिन से पहले तैयार नहीं होती है। तुम्हारे तो जख्म 3 परत पर थे और मैं मन ही मन मुस्कुरा रहा था कि डॉक्टर जी, आपको क्या पता यह सब तो मेरे श्री गुरु महाराज जी के शुभ आशीर्वाद के कारण हुआ है। गुरु महाराज के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। श्री हरि को शत्-शत् धन्यवाद।

-

प्रवीण कुमार सूरी, दिल्ली।

● ● ● ● ●

जून 1993 की बात है मैं अपने माता-पिता के साथ बद्रीनाथ धाम तथा श्री केदारनाथ धाम की यात्रा पर जा रहा था। यात्रा के पहले पड़ाव (हरिद्वार) में हमारी भेंट 75 वर्ष के एक बुजुर्ग से हुई। बातचीत के दौरान उनकी पत्नी ने बताया कि उन बुजुर्ग को गत् वर्षों में तीन बार दिल का दौरा पड़ चुका है। लेकिन भगवान के प्रति अगाध प्रेम को देखते हुए इन्हें श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा कराने ले जा रहे हैं। इसलिए कृप्या आप हमारे साथ सहयोग करियेगा। पूर्णमासी का दिन था। बुजुर्गवार ने व्रत रखा हुआ था। उनका कहना था कि सत्यनारायण जी की कथा सुने बिना अपना व्रत नही खोलेंगे। बोले कि सत्यनारायण की कथा सुनाने वाले ब्राह्मण को खोज लाओ। स्वास्थ्य की दृष्टि से उनका भूखे पेट सफर करना उचित नहीं था। मूसलाधार बारिश और पहाड़ गिरने की वजह से रास्ता बन्द हो गया था। सामने से देखा कि एक ब्राह्मण कन्धे पर झोला लटकाए हमारी ओर ही आ रहा है। मैंने उनसे पूछा बाबा क्या आपको सत्यनारायण की कथा आती है? बाबा कहने लगे हां-हां आती है पर वो भक्त कहां है। बस में ही बैठे-बैठे श्री सत्यनारायण की कथा हुई और उन बुजुर्ग ने प्रसाद ग्रहण किया। बद्रीधाम में पूजा अर्चना चल रही थी। मैंने उन बुजुर्गवार से प्रार्थना की कि मंदिर के द्वार 8 बजे तक खुले हैं। आप चाहें तो

दर्शन लाभ उठा सकते हैं। उनका कहना था कि मैं सुबह नहा-धोकर स्वच्छ होने के पश्चात् ही भगवान के दर्शन करूंगा। अगले दिन सुबह सवेरे उठकर नहाने के पश्चात् भगवान के दर्शन किए और स्वयं अपना पिण्डदान किया, साधु सन्यासियों को दान भी किया। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि तुझे दिया बत्ती जो कुछ भी करना है, कर ले क्योंकि मेरा यह शरीर छोड़ने का समय आ गया है। मेरे मुख में गंगा जल डाल ताकि मैं अब विदा ले सकूं। पत्नी ने दिया बत्ती करने के पश्चात् जैसे ही मुख में गंगा जल डाला भगवान के नाम का उच्चारण करते हुए वह जीवात्मा चल बसी। श्री बद्रीनाथ धाम पर रह रहे साधु-सन्यासियों को जब यह पता चला कि एक भक्त ने नारायण पर्वत पर भगवान श्री बद्रीनारायण के दर्शन करने के पश्चात् स्वयं अपनी इच्छा से अपने प्राण त्यागे है तो साधुओं की भीड़ उनके दर्शन करने के लिए उमड़ पड़ी। कुछ साधु तो उनके पैरों को पकड़ काफी देर तक रोते रहे और साधुओं ने मिलकर रीतिपूर्वक उनका दाह संस्कार भी किया।

इस घटना को साढ़े तीन साल हो चुके थे कि मुझे स्वप्न हुआ कि यात्रा में श्री सत्यनारायण की कथा सुनाने वाला ब्राह्मण कोई और नहीं बल्कि सद्गुरु देव भगवान स्वामी सुदर्शनाचार्य जी ही थे। मेरा मन यह मानने के लिए तैयार नहीं था क्योंकि तब तक तो मैं श्री गुरु महाराज से मिला ही नहीं था। अपने मन की शंका का निवारण करने के लिए मैंने फरवरी 1997 के मासिक सत्संग में श्री सद्गुरु देव भगवान के समक्ष अपनी जिज्ञासा रखी। श्री सद्गुरु देव भगवान ने मुझे बुला लिया। उन्होंने मुझसे पूछा कि यह घटना कब घटित हुई था। मैं उन्हें ठीक से निश्चित तिथि नहीं बता पाया, लेकिन उन्होंने मुझे याद दिलाया कि यह घटना जून 1993 की है। चार साल के बाद इस घटना के सन्दर्भ में जानने की इच्छा तुम्हारे मन में कैसे पैदा हुई? कहने लगे कि वैसे यह प्रश्न एकान्त में किया जाता तो अच्छा रहता क्योंकि आज मैं जिस सत्य को कहना चाहता हूं उसे सुनने के पश्चात् लोगों में यह शंका उत्पन्न हो जायेगी कि पहाड़ पर बैठा बाबा कहीं लोगों को बरगला तो नहीं रहा। मुझे तो तू सिर्फ इतना बता दे कि आज से ठीक छः माह पहले मैं तुझे साकार में दीदार देकर यह कह चुका हूं कि जिसको तू ढूंढ़ रहा है वो मैं ही हूं। अपना यह भ्रम तोड़ दे कि शिष्य ही गुरु को ढूंढता है। कभी-कभी ऐसा भी समय आता है जब स्वंय गुरु को अपनी बिछड़ी भेड़ें इकट्ठी करनी पड़ती हैं। अरे तू तो वर्ष 1993 की बात करता है, मैं तुझे सन् 1978 से अपनी ओर खींच रहा हूं। श्री सद्गुरु देव भगवान के मुख से यह सत्य सुनने के पश्चात् मेरी आंखों में खुशी के आंसू भर आये। उसी दिन मैं यह जान पाया कि जीव परमात्मा की ओर कदम बढ़ाये या ना बढ़ाये, परमात्मा हर पल हर घड़ी उसके साथ रहता है।

- गोपाल दास छाबड़ा, ओल्ड फरीदाबाद।

● ● ● ● ●

मेरे पांच वर्षीय पुत्र रोहित को मार्च 1994 में खून की उल्टी होती थी। हम उसको दिल्ली व नोएडा के अस्पतालों में लेकर घूमते रहते थे। अनेक प्रकार के टेस्ट करवाने के बाद भी बीमारी का पता नहीं लगा। हमारे गांव के शर्मा जी दिल्ली में रहते हैं। उन्होंने बताया कि श्री सिद्धदाता आश्रम चले जाओ, यह लड़का ठीक हो जायेगा। बच्चा ऑल इण्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, दिल्ली में दाखिल था। सिद्धदाता आश्रम में गुरुजी के चरणों में सबको लेटता देखकर मैं भी लेट गया। गुरुजी ने मेरे से पूछा कि क्या बात है? मैंने बताया कि मेरे लड़के को ऐसे होता है। उन्होंने किसी के माध्यम से बच्चे का वार्ड नं. व बैड नं. ले लिया। मैंने भी दरबार में प्रार्थना की और आ गया। अस्पताल गये तो वहां सिस्टर से किसी बात पर कहासुनी हो गयी और हमने वहां से बच्चे की छुट्टी करा ली। बच्चे के साथ मंदिर गए। दोपहर का भोजन प्रसाद ग्रहण किया। बच्चे को फिर उल्टी हो गयी मैं सहमा हुआ मंगलवार को बच्चे के साथ आश्रम गया। गुरुजी गद्दी पर विराजमान थे। गुरुजी ने बच्चे को हल्का सा हाथ लगाया और प्रसाद दिया और कहा चलो अब कुछ नहीं होगा। उस दिन से मेरे बच्चे को खून की उल्टी तो दूर बुखार तक नहीं हुआ। उसके तुरंत बाद मैं बहुत सख्त बीमार हो गया, डॉक्टरों को बीमारी का पता नहीं चला। मेरे पिताजी गुरुजी से मिले। उन्होंने बताया कि यह वातरोग है और इसका सिर्फ आयुर्वेदिक इलाज संभव है। मैंने गुरुजी की आज्ञा मानकर वैद्य मदन गोपाल, जयपुर से दवाई शुरू की। गुरु महाराज ने झाड़ा लगाने के बाद कहा कि आज के बाद बीमारी बढ़ेगी नहीं और यही हुआ। बीमारी के दौरान मेरी आर्थिक स्थिति भी बहुत खराब हो गई थी, लेकिन गुरु की कृपा से अब मेरी आर्थिक स्थिति बहुत-बहुत अच्छी है।

नरेश चौहान, गांव छलेरा, नौएडा

3 अप्रैल 2000, थोड़ा देरी से आश्रम पहुंचा। दर्शन नहीं हो पाये। 4 अप्रैल 2000 गुरुजी गद्दीनसीन थे, दर्शन हो गए। थोड़ी देरी उपरान्त गुरुजी अपने कक्ष में चले गये। मैं उत्तर साइड़ बरामदे में था. मास्टर जी से साक्षात्कार हुआ, उन्होंने कहा आप यहीं बैठकर हरि स्मरण करो अथवा कोई काम कर लो।मैं बताना चाहूंगा कि लगभग 75 वर्ष पूर्व मेरी सीधे हाथ में चोट लगी थी और कलाई की एक हड्डी अपने स्थान से शिफ्ट हो गयी थी। बहुत इलाज कराने पर भी ठीक नहीं हो पायी थी। कभी-कभी तो मैं दर्द से लिखने में भी असमर्थ हो जाता था। मैंने बाहर गऊओं के राशन से भरा एक ट्रक देखा। उसमें लगभग 125-150 राशन के बोरे लदे थे। और अप्रैल में थोड़ी गर्मी हो ही जाती है। ऐसे समय में मैं और मात्र दो लड़के ही उस ट्रक को

अनलोड कर रहे थे। मैं अपने हाथ की विकृति को भूल गया और ट्रक के ऊपर चढ़कर ट्रक से सारे बोरे उन दोनों लड़कों के साथ उतरवा दिये। उसी समय पूज्य गुरु महाराज ट्रक के पास आये और अपनी छड़ी लगाकर आशीर्वाद दिया एवं कहा जाओ भोजन प्रसाद लो। मैं उसी दिन से भूल गया कि मेरे हाथ में कोई दर्द, विकृति या कुछ भी था। यह पूज्य गुरुजी के आशीर्वाद से ही संभव हो पाया। समय अच्छा नहीं था, नौकरी नहीं रही। गुरुजी की कृपा से चंडीगढ़ नौकरी मिल गई। ज्वाइन करने जाते समय गुरुजी ने बताया कि 8 माह के लिए जा रहे हो। शाम को ही जाना था लेकिन पैसा नहीं था, परन्तु मेरी एक लाटरी निकल आई और पैसे का इंतजाम हो गया। लगभग सात माह बाद गुरुजी ने कहा क्यों परेशान हो आज 17 तारीख है, अगली 17 तारीख को यही आ जायेगा। मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हो गया। घर जाकर मैंने अपनी पत्नी से कहा, मैं प्रातः जा रहा हूं आप बच्चों सहित चंडीगढ़ आ जाओ। दो चार अच्छी जगह है घूम कर आयेंगे। एक सप्ताह पश्चात् पूरा परिवार चंडीगढ़ पहुंच गया, परन्तु दो दिन बाद ही फरीदाबाद एक अच्छी कम्पनी से संदेशा पहुंचा कि कंपनी के एम.डी. ने बुलाया है। वह मुझे अपनी कंपनी में नियुक्त करना चाहते हैं। हम सभी फरीदाबाद आ गये, गुरुजी से आज्ञा लेकर सर्विस ज्वाइन कर ली। आगामी रात्रि में प्रातः 4 बजे गुरुजी ने स्वप्न में दर्शन दिये और कहा, अरे मैंने ज्वाइन तो करा दिया है परन्तु जगह अच्छी नहीं है। मेरी आंख खुल गयी, मैं थोड़ा विचलित हुआ। मैंने तबियत बिगड़ने पर डॉक्टर से राय ली तो पता चला कि मुझे काफी समय से हर्निया की शिकायत है। मैं आश्रम गया तो गुरुजी बोले परेशान मत हो। सब ठीक हो जाएगा। ऑपरेशन की नौबत भी आ गई। तभी गुरुजी ने कहा क्या पेट फड़वाना जरूरी है, जा दोबारा अल्ट्रासाउंड करा। अल्ट्रसाउंड में मुझे कोई तकलीफ ही नहीं निकली। डॉक्टर भी विस्मित था। मैंने डॉक्टर को बताया कि इसका इलाज करने वाले मेरी और आपकी सोच से कही परे हैं अर्थात पूज्य गुरु महाराज हैं।

- गोपाल दास मनोचा, फरीदाबाद

2006 की बात है कि मेरा पुत्र अपने मित्रों के साथ सोहना जा रहा था। रास्ते में भयानक दुर्घटना हुई जिसमें एक व्यक्ति ने तो वहीं दम तोड़ दिया था और मेरे बेटे को इतनी चोट आई थी कि बचने की कोई संभावना नहीं था। हमने गुरु महाराज से प्रार्थना लगाई कि हे गुरुदेव केवल आप ही इस बच्चे की रक्षा कर सकते हैं। मेरा बेटा बतरा हस्पताल अस्पताल में दाखिल करवाया गया था। हमें डॉक्टर ने बताया था कि अगर किसी व्यक्ति की डीआईसी 50 प्रतिशत भी है तो उसके बचने की कोई संभावना नहीं रहती। जबकि मेरे बेटे की डीआईसी तो 60 प्रतिशत थी। लेकिन वह आज सकुशल है। सब गुरु महाराज की कृपा का फल है। वह असंभव को संभव कर सकते है। आज भी श्री गुरु महाराज सूक्ष्म शरीर से अपने

सभी भक्तों की रक्षा कर रहे हैं।

- राधेश्याम शर्मा, ग्राम छलेरा, नोएडा

● ● ● ● ●

हम जब भी गुरुजी के पास आते तो गुरु जी यही बोलते, मेरी अमेरिका वाली बेटियां कैसी है। हम कहते बाबा आपकी बेटियां तो इंग्लैण्ड में है। गुरुजी कहते, भाई मुझे पता नहीं हमारे मुंह से तो अमेरिका ही निकलता है। उनकी ऐसी कृपा हुई कि उनकी शादियां अमेरिका में ही हुई। यह बात 2000 की है जब मेरी छोटी बेटी की शादी नहीं हुई थी। हम वरजीनिया अपनी छोटी बेटी के पास गए हुए थे। एक दिन वह हमें घुमाने के लिए शॉपिंग मॉल लेकर जा रही थी कि रास्ते में ही बारिश शुरू हो गई। बारिश के साथ तूफान भी इतना तेज था कि आगे कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था। अभी हम थोड़ी दूर ही गए थे कि आगे की गाड़ियां अचानक रूक गई। लेकिन हमारी गाड़ी रूक ही नहीं पा रही थी। मैं जोर से चिल्लाई- पूजा, क्या कर रही है? गाड़ी रोक। वह बोली- मम्मा, क्या करूं, गाड़ी रूक ही नहीं रही? ब्रेक ही नहीं लग रहे। मैंने कहा- बेटा गुरुजी का ध्यान कर। इतना कहना ही था कि गाड़ी ऐसे रूकी जैसे किसी ने उसे पीछे से पकड़ लिया हो। बाद में पूजा बोली- मुझे बिल्कुल ऐसा लगा जैसे गुरुजी मेरे आगे खड़े हैं और गाड़ी को रोक रहे है। उन्हें देखते ही मेरी गाड़ी में एकदम ब्रेक लग गए। हमारे जीवन में ऐसे-ऐसे चमत्कार हुए हैं कि उन्हें बखान नहीं किया जा सकता। हमने जब भी उन्हें याद किया या न किया, गुरुमहाराज हमेशा साथ रहे। चाहे इस देश में हों यो विदेश में हों।

- मंजू हरि, साकेत, नई दिल्ली।

सन् 1995 में मैं श्री गुरु महाराज जी के सम्पर्क में आया। गुरुजी की चमत्कारिक घटनांए तो इतनी हैं कि यदि सभी लिखूं तो एक पुस्तक बन जाएगी। लेकिन मैं तीन मुख्य घटनाओं का वर्णन यहां कर रहा हूं। नवम्बर 1997 में मुझे बहुत जबरदस्त हार्टअटैक हुआ और अपोलो अस्पताल में मुझे दाखिल कराया गया। डॉक्टरों ने बताया कि अटैक बहुत जबरदस्त है, बचने की बहुत कम आशा है। मेरे परिवार वालों ने श्री गुरु महाराज तथा श्री गुरु माता जी से कृपा करने की प्रार्थना की। श्री गुरु महाराज जी ने कहा कि चिंता की कोई बात नहीं है, मैंने श्री नारायण भगवान से प्रार्थना की है और 12 से 15 वर्ष का जीवनदान भी मिल गया है। गुरु महाराज जी ने स्वामी फलाहारी बाबा जी के द्वारा अस्पताल में संदेश भेजा कि परिवार वाले

बिल्कुल चिंता ना करें और वह नारायण भगवान का जप करता रहे। श्री गुरु महाराज की कृपा से मेरी जीवन गाड़ी अभी तक चल रही है।

- चमनलाल सदाना, फरीदाबाद।

● ● ● ● ●

सन् 1997 में गर्मी की छुट्टी में मेरे 15 वर्षीय बेटे भानू ने पहली बार अपने मित्रों के साथ सिनेमा जाने की आज्ञा मांगी। मेरे पूछने पर उसने अपने राजू भैया सहित 6 मित्रों के नाम मुझे बता दिये। सभी अच्छे घरों के बच्चे थे। वे सब भी अपने-अपने घर से आज्ञा ले चुके थे। मैंने भी उसे जाने की इजाजत दे दी और अपने कार्यालय के लिए निकल गया। कार्यालय से ही मैं श्री सिद्धदाता आश्रम चला गया। वहां लक्ष्मी नारायण मन्दिर के निर्माण में मैं अपनी सेवायें समर्पित कर रहा था।

दिल्ली के उपहार सिनेमा कांड के बारे में आपने सुना होगा। इसमें लगी आग से कई लोगों की दर्दनाक मौत हो गई थी। मेरा बेटा इसी सिनेमा में फिल्म देखने गया था। लेकिन बाबा की कृपा से वह और उसके दोस्त सभी सकुशल बच गए थे। मैंने जब बेटे से सारी घटना विस्तार से बताने को कहा तो उसने बताया कि शो शुरू होने के कुछ देर बाद ही हॉल में गुरुजी आये (लगभग उन्हीं क्षणों में मंदिर में गुरुदेव विचार मग्न हुए थे।) और मेरे पास पहुंचकर कहने लगे बेटे यहां क्यों बैठे हो। उठो, जल्दी से अपने दोस्त एक दूसरे का हाथ पकड़कर चेन बना लो। तभी उन्होंने स्वयं अपने हाथ से हमारे हाथों को आपस में फंसा कर कहा कि अब तुम सभी जल्दी-जल्दी बाहर चलो। जितनी जल्दी हो सके हॉल से बाहर निकल जाओ। भानू ने बताया कि मेरे दोस्तों ने भी देखा कि एक दाढ़ी वाले बाबा आये। उन्होंने सभी को जल्दी से बाहर चलने को कहा तथा हाथ पकड़ कर चेन बनाई। उस स्पर्श का अहसास उन सभी को हुआ था। भानू के अनुसार जैसे ही हम लोग हॉल से बाहर पहुंचे तो देखा हॉल में आग लग चुकी थी। बाद में पता चला कि जिस बॉक्स में ये लोग बैठे थे उसका दरवाजा फंस जाने के कारण एक भी व्यक्ति बाहर नहीं आ पाया जिससे दम घुटने के कारण सभी की मृत्यु हो गई थी। गुरुजी की असीम कृपा से न केवल हमारे घर का चिराग सुरक्षित रहा बल्कि उसके मित्र भी सुरक्षित अपने-अपने घरों को लौट आये थे। 13 जून 1997 का वह दिन हमारे और उन सभी के जीवन का यादगार दिन चुका है।

अगले दिन प्रातः श्री सिद्धदाता आश्रम पहुंचा। देव दरबार में माथा टेक कर यज्ञशाला की ओर जाने लगा तो सामने गुरु जी के दर्शन हुए। मैंने प्रणाम किया तो उन्होंने मुस्कुरा कर पूछा, बेटा तो ठीक है न। उसे तो खरोंच तक नही आयी होगी। केवल 3 मिनट पहले ही उसे वहां से बाहर निकाला था। मैंने 'श्री गुरुदेव' कहा। गला रुंध गया और चाह कर भी आगे कुछ नहीं कह

पाया। सच है कि गुरु सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती। हमारे हित-अहित तो गुरुजी स्वयं सोच-देख लेते हैं।

- विनोद मलिक, दिल्ली

● ● ● ● ●

लगातार 14 वर्ष तक तन, मन, धन से तपस्या करने पर जो नहीं मिला वह गुरुजी ने सिर्फ 14 दिन में हमें दे दिया। मैंने 14 वर्ष 1983 से अपनी पत्नी की दवाई अच्छे से अच्छे अस्पतालों में करायी। इसके दौरान 7 बच्चे अपूर्ण रूप से (3 माह से लेकर 7 माह तक के) गर्भपात हो गये। हमें तीन अस्पतालों से भगा दिया गया और यह कह गया कि अभी हिन्दुस्तान में इसके अलावा और कोई उपचार नहीं है। कही भी जाकर पता कर लो। मैं जिसके पास गया सभी टेस्ट रिपोर्ट एवं ट्रीटमेंट समरी लेकर अध्ययन करते और गारन्टी मौखिक रूप से दे देते थे। जब भी गर्भ रुकता था, 15 दिन पर डॉक्टर को दिखाता रहता था। मैंने बच्चे के संबंध में 2000 रुपये तक के इंजेक्शन और 10,000 रुपये तक के देवी देवताओं के अनुष्ठान करवाए। जहां भी पता चला मैंने किसी पण्डित, मुल्ला, तांत्रिक, देवी-देवता को नहीं छोड़ा। लेकिन कोई भी हमारे सपनों को सफल नहीं कर पाया। सभी ने अच्छी तरह ठगा। अंग्रेजी दवाई एवं टेस्ट रिपोर्ट के आधार पर 1995 में पता चला कि टेक्सो प्लाजमा नाम का वायरस तुम्हारे बच्चे को मार देता है। इसकी दवाई रोवामाईसिन 40 दिन तक चलाकर एक डॉक्टर ने हमें मौखिक रूप से गारन्टी दे दी। 12 वर्ष तक टेस्ट रिपोर्ट में यही एबनोर्मिलिटी मिली थी। मैं बहुत खुश हुआ। फिर मैंने तांत्रिक से भी सम्पर्क कर लिया। 7 माह तक डॉक्टर के हिसाब से कोई कमी नहीं थी। अचानक खून का धब्बा आया। मैं तुरन्त अस्पताल पहुंच गया। जो भी उस समय का ट्रीटमेंट था उन्होंने किया। करीब तीन घंटे तक बच्चा बहुत तेजी से घूमता रहा। जैसे उसका कोई पीछा कर रहा हो। फिर अचानक बंद हो गया। अल्ट्रासाउंड करने पर डेड मासप्यूलेटिड फीटस की रिपोर्ट मिली। फिर किसी तरह से बाहर निकाला गया और हमें फिर बताया गया कि अब बच्चा मत पैदा करना। इस तरह से औरत मर सकती है। गर्भपात के समय होने वाली पीड़ा एवं आपबीती देखकर दिल दहल गया। मैंने सोच लिया कि अब नहीं होगा। हमने हार मान ली और यह सोच लिया कि सभी धूर्त हैं।

एक डॉक्टर ने टेस्ट रिपोर्ट और ट्रीटमेंट देखकर कहा कि इन दवाईयों के अलावा भगवान की पूजा भी सबसे बड़ी दवाई है। मुहल्ले की एक महिला के साथ हमारी पत्नी एक बार श्री सिद्धदाता आश्रम आ चुकी थी। एक दिन उसने गुरुजी की बहुत बड़ाई की। मैंने उस समय के अनुभव के आधार पर उसे डांट दिया। वह बोली एक बार जाकर देख लो, फिर मत जाना। 5

जनवरी 1997 को आश्रम के लिए चल दिया। आश्रम पहुंच कर जब गुरुजी द्वारा नाम की महिमा एवं भजन कीर्तन सुना तो बहुत प्रभावित हुआ। इससे मुझे विश्वास होने लगा कि यहां काम हो जायेगा। जब मैं घर पहुंचा तो वही दृश्य और नाम की महिमा याद आये। मुझे गाना-बजाना तो नहीं आता है, लेकिन धीरे-धीरे गुनगुनाने लगा। गुरुजी आ जाओ, मेरा सूना पड़ा संसार, गुरुजी आ जाओ। प्रत्येक दिन सोते समय यही गाता रहा। आश्रम आने के 14 दिन बाद मेरी पत्नी गर्भवती हुई। टेस्ट के बाद मैं गुरुजी के सहारे बैठ गया क्योंकि और कही विश्वास रहा नहीं था।

23-10-97 को सुबह 10 बजे अस्पताल पहुंचा तो मुझसे ऑपरेशन के लिए कहा गया। मैंने सोचा कि आश्रम में तो कुछ और ही सुना है और यहां कुछ और ही हो रहा है। अचानक दिमाग में आया गुरुजी कहते हैं कि सच्चे दिल से याद करो तो आयेंगे जरूर। मैंने जोर-जोर से गुरुजी को पुकारा और गुरुजी द्वारा गाये जाने वाली नारायण धुनि और दुख भंजन साहिब को गुनगुनाने लगा। लेबर रूम से अब पत्नी की चीखें आनी बंद हो गई थी। 01.05 बजे सिस्टर बोली, समान्य तरीके से बिल्कुल सही सलामत पुत्री हुई है। खुशी की कोई सीमा नहीं रही और हमें पक्का विश्वास हो गया कि गुरुजी नारायण पुकारने पर आते हैं।

- अयोध्या प्रसाद कुशवाहा, खोड़ा, नोएडा।

● ● ● ● ●

अपने जीवन में घटी एक भीषण घटना से सभी गुरु भाईयों को अवगत कराना चाहता हूं। यह घटना 4 जून 2001 की है। वाराणसी में अपनी सर्राफा की दुकान से ढाई लाख रुपये बैंक में जमा कराने के लिये अपने स्कूटर द्वारा अकेला ही रवाना हुआ। दुकान से कुछ दूर ही चला था कि मोटर साईकिल पर सवार तीन व्यक्तियों ने मेरे सामने आकर मुझे रोक लिया। उन्होंने रुकते ही रिवाल्वर से मुझ पर गोली चला दी। गोली मेरी पसलियों में लगी। तीन खूंखार व्यक्ति यों को पिस्तौल ताने सामने देखकर और शरीर से बहते खून ने मुझे क्षणभर को भयभीत कर दिया। तभी चेतना लौटी। सारा मामला समझते हुये मैंने गुरुदेव से प्रार्थना की, उन्हें पुकारा। मन में स्वयं आया 'मैं हूं निर्भर तुझ पे, निर्भर कर मुझे।' यह भाव आते ही मुझे अहसास हुआ कि मेरे शरीर में कोई दिव्य शक्ति आ गई है। मैं अपने आपको बहुत शक्ति शाली महसूस करने लगा।

मैंने फुर्ती से स्कूटर में रखा रुपयों का थैला उठा लिया। तभी बदमाशों ने दूसरी गोली दागी जो मेरे कंधे को भेद गई। स्कूटर नीचे गिर चुका था। थैला लेकर मैंने पैदल ही भागना उचित समझते हुए जैसे ही कदम आगे बढ़ाये सामने खड़े बदमाश ने मेरी छाती को लक्ष्य कर

गले से कुछ नीचे की ओर तीसरी गोली दाग दी। धन्य हैं गुरुदेव यह गोली मेरे गले में पड़े हुए गुरुजी के लॉकेट पर लगी और वापस हो गई। लॉकेट का कुछ हिस्सा छितरा गया पर मैं पूरी तरह से सुरक्षित बच गया। गुरुदेव की इस कृपा ने मेरा साहस दुगना-चौगुना कर दिया और मैं पूरी ताकत लगाकर वहां से दौड़ पड़ा। उन तीनों ने मेरा पीछा किया। कुछ दूर पहुंच कर एक बदमाश ने मुझे पकड़ कर थैला छीनना चाहा। हम गुथम-गुथा हुए, बहुत छीना झपटी हुई पर मैंने थैला नहीं छोड़ा और उससे छूट कर पुनः भागने को हुआ। तभी उन लोगों ने मेरे ऊपर बम से वार किया। उनका निशाना चूक गया। बम मेरे समीप ही गिर कर फटा, उसके छर्रे मेरे पैरों में लगे। इतनी देर में चारों ओर लोगों का हजूम इकट्ठा हो गया। बदमाश रुपया लिये बिना ही वहां से भाग निकले।

तीन गोलियां और एक बम का वार सह चुकने के बाद भी मेरी चेतना बची हुई थी। शरीर से खून तो बह रहा था परन्तु साहस और हिम्मत से काम लेते हुए गुरुदेव का स्मरण कर मैंने वापस लौट कर अपना स्कूटर उठाया और स्वयं ही उसे स्टार्ट करके निकट के एक नर्सिंग होम में पहुंचा और अपना उपचार कराया। इस सारे समय एक अदम्य शक्ति का साथ मुझे प्रतिक्षण महसूस होता रहा। अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। जुलाई माह के मध्य में आश्रम आया। विश्वास करता हूं गुरु महाराज का आशीर्वाद और कृपा इस दास पर बनी रहेगी।

\- निर्मल कुमार खन्ना, वाराणसी

● ● ● ● ●

मैं जब श्री गुरु महाराज जी के पास आया था उस समय मेरी आर्थिक दशा ठीक नहीं थी। लेकिन आज मेरे पास किसी बात की भी कमी नहीं है। मेरे जीवन में तो अनेक भयानक घटनाएं घटी है। हर बार श्री गुरु महाराज मुझे मौत के मुंह से निकल कर ले आये। उस समय श्री गुरु महाराज का शरीर अस्वस्थ चल रहा था। मैं भटिंडा जा रहा था। भतीजा गाड़ी चला रहा था। मेरी पत्नी भी साथ में थी। मैं तो सोया हुआ था। अचानक गाड़ी पलटी और कई पलटे खाये और गाड़ी एक खाई में जा गिरी। मुझे कोई होश नहीं रहा। 8 बजे प्रातः दुर्घटना हुई थी। हमें फतेहाबाद अस्पताल में दाखिल करवा दिया गया। दोपहर बाद 3 बजे होश आया। उसके बाद हमें दिल्ली ले आये। मेरी रीढ़ की हड्डी में फ्रेक्चर था। डॉक्टरों का कहना था कि अब मैं जीवन भर के लिए बेकार हो गया हूं। दर्द बहुत अधिक होता था। मैं रोता ही रहता था। एक दिन रात के 12 बजे मैं रो रहा था। मैंने श्री गुरु महाराज से शिकायत की कि यह मेरे साथ क्या हो रहा है। उसी समय सुनील और अशोक सैनी जो मेरे गुरु भाई भी हैं और मित्र भी, एक डॉक्टर को लेकर

मेरे पास आये। श्री गुरु महाराज का ऐसा करिश्मा हुआ कि डॉक्टर बोलता रहा और मेरा दर्द कम होता रहा। मेरी पत्नी की 2-3 पसलियां टूट गई थी। सुबह उसने भी खाना बनाया और मैंने बेल्ट खोल दी। प्रातः 4 बजे मैंने आरी से पलस्तर भी कटवा दिया। मैं पूर्ण रूप से ठीक था। तीसरे दिन मैं आश्रम गया। मेरे भाई गुरुजी को नहीं मानते थे। वे मुझे आश्रम जाने के लिए मना कर रहे थे। पर मैंने उनकी नहीं मानी। मैंने उनसे कहा कि एक बार मैं श्री गुरु महाराज से मिल आऊं, फिर तुम मुझे कहीं भी ले जाना। मैं जब आश्रम पहुंचा तो रात के 11 बज चुके थे। श्री गुरु महाराज उस समय सोये नहीं थे, कुर्सी पर बैठे हुए थे। गुरुजी की सेवा में रहने वाले सेवादारों का कहना था कि मेरी वजह से श्री गुरु महाराज अभी तक बैठे हुए है। मैं श्री गुरु महाराज से मिला तो रोये बिना न रह सका। श्री गुरु महाराज उन दिनों बोल नहीं सकते थे। उन्होंने हाथ उठाकर इशारा किया कि चिन्ता की कोई बात नहीं है मैं जो हूं। उन्होंने मुझे गले से लगाया और प्यार किया। ऐसे हैं मेरे श्री गुरु महाराज। मैं तो यह मानता हूं कि वे साक्षात् भगवान हैं।

मुझे आश्रम की झाड़ियों में एक सांप ने काट लिया था। मुझे तो ऐसा लगा कि कोई कांटा चुभ गया है। पर साथियों ने बताया कि सांप ने काटा है। मैंने परवाह नहीं की। रात को सो गया पर रात को मेरी टांगें नीली हो गई। डॉक्टरों के पास मुझे ले गये। डॉक्टरों ने कहा कि टांग कटेगी। मैंने कहा क्या बकवास कर रहे हो? मेरी टांग कटने का प्रश्न ही नही उठता। मेरे साथियों ने श्री गुरु महाराज से बात की। श्री गुरु महाराज ने कहा कि जहर तो मेरी टांगों में है। छंगा की टांगों का जहर मैंने ले लिया है। भले ही मेरी टांगें नीली पड़ गई हैं पर मुझे कष्ट नहीं हुआ। जब मैं आश्रम में श्री गुरु महाराज जी से मिलने गया तो उन्होंने मुझे अपनी टांगें दिखाई जो नीली पड़ी गई थी। क्या कोई ऐसा संत, ऐसा गुरु इस धरती पर है? मेरा तो यही मानना है कि नहीं है। इतना अवश्य है कि वे भाव के भूखे हैं। मैं तो उन्ही को नारायण, उन्हीं को भगवान, उन्हीं को सब कुछ मानता हूं। शरीर छोड़ने से पहले भी वे अपने भक्तों की रक्षा सूक्ष्म शरीर द्वारा करते थे और आज भी सूक्ष्म शरीर से हमारी रक्षा कर रहे हैं। अनेक बार ऐसा हुआ है कि मेरी गाड़ी में तेल ही नहीं होता था और गाड़ी चलती रहती थी। गाड़ी के पहिए में पंचर हो गया परन्तु गाड़ी चले जा रही है। जब मैं श्री गुरु महाराज से मिलता था तो वे कहते थे- अर छंगा बिना तेल के ही गाड़ी चलाता है। पहिये के पंचर की भी परवाह नहीं करता। मुझे ही तेरी गाड़ी धकेलनी पड़ती है। ये सब बातें सौ प्रतिशत सच हैं पर जो श्री गुरु महाराज से भावपूर्ण नहीं जुड़े हैं। वे कभी भी इन बातों पर विश्वास नहीं करेंगे।

- राजेन्द्र छंगा, दिल्ली।

● ● ● ● ●

उस परम प्रभु परमात्मा श्री लक्ष्मी नारायण की विशेष अनुकंपा से लगभग 25 सालों से मुझे और मेरे परिवार को श्री गुरु चरणों में आने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। हमारे स्वामी श्री गुरु सुर्दशनाचार्च जी महाराज मानव शरीर में साक्षात परब्रह्म स्वरूप ही थे। सन् 1983 में कोटला मुबारकपुर दिल्ली में गुरुजी के प्रथम दर्शन के वक्त हमारे परिवार में अभाव के हालात थे। लेकिन उनके प्रकाश ने हमारे चारों ओर सुख समृद्धि ला दी। मेरे पति डेसू में मात्र साधारण क्लर्क की नौकरी करते थे। उस छोटी सी तनख्वाह में चार बच्चों की अच्छी परवरिश और दिल्ली जैसी जगह में अच्छा मकान बनाना साधारण काम न था। केवल श्री गुरुदेव के आशीर्वाद से यह सब कैसे होता गया हमारी समझ से बाहर था। सन् 1986 में जब हमने श्री गुरु महाराज जी से अपना निजी मकान बनाने की इच्छा व्यक्त की तो उन्होंने हमें आशीर्वाद देते हुए केवल इतना ही कहा कि तुम लोग अपना मकान बनाना शुरू कर दो। यदि तुम्हारा लॉकर खाली हो जाये तो आकर रुपये मुझसे ले जाना। यह उनका आशीर्वादा ही था कि हमने मात्र अपनी 3300 रुपये की बचत से मकान बनाना प्रारंभ किया था और आज वह अच्छी खासी रकम से सुसज्जित दुमंजिला मकान है। मेरे छोटे बेटे की मात्र दो वर्ष की अवस्था में ही पैरों की शक्ति जाती रही। मैं तुरन्त घबराकर अपने दुखभंजन श्री गुरु महाराज के पास पहुंची और उनसे समस्या बताकर बच्चे के कष्ट निवारण की विनती की। उन्होंने कहा कि तू घबरा मत। मैं बच्चे की जिन्दगी बर्बाद नहीं होने दूंगा। यह कह उन्होंने अपनी शक्ति के चमत्कार से दो घंटे में ही बच्चे को अपने सामने चलाकर दिखा दिया। सुरक्षा के तौर पर थोड़ी सी ताकत की दवाई कराने की सलाह दी। आज वही बच्चा उन्हीं की कृपा से इंजीनियर बनकर एमएनसी कंपनी में कार्यरत रहते हुए हांगकांग में है।

एक बार मेरे बड़े बेटे के जीवन में ऐसा मोड़ आया कि आठ साल की उम्र में अचानक छत से गिर गया। जीबी पंत अस्पताल में उसके सर के पिछले भाग में दर्द रहने के कारण तुरन्त ऑपरेशन करने को कहा गया। इस ऑपरेशन की सफलता की कोई गारन्टी न थी। मैं एक बार फिर श्री महाराज जी के चरणों में आकर रोने लगी। परन्तु उन्होंने मुझे दिलासा देते हुए कहा कि पगली रोती क्यों है? क्या तुझे मुझ पर विश्वास नहीं है? आखिर हम यहां किस लिए बैठे हैं? ऐसा कहकर उन्होंने बच्चे के सर के पिछले भाग व गर्दन पर हाथ फेरकर कहा कि जाओ कि एक बार एक्स-रे और कराओ। यदि डॉक्टर फिर भी ऑपरेशन की सलाह दे तो मेरे पास चले आना। उनकी आज्ञानुसार एक बार फिर एक्स-रे कराया गया जिसे देखकर उसी डॉक्टर ने कहा कि ऑपरेशन की कोई आवश्यकता नहीं है। आज वही बच्चा 28 साल का होकर गुरुदेव की कृपा से 22 साल की उम्र में विदेशों में भ्रमण करता हुआ गुड़गांव में अच्छी तनख्वाह पर अच्छी कम्पनी

में कार्यरत है। मेरी दोनों बेटियां भी आज उन्ही की कृपा से अच्छे गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं। मेरी छोटी बेटी एम.सी.ए कर अच्छी कंपनी में काम कर रही है। उन दोनों की शादियां भी कितनी प्रतिष्ठापूर्वक रूप से सम्पन्न हुई। हमारे सद्गुरु श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज बैकुण्ठवासी होते हुए भी आश्रम के कण-कण में सर्वत्र व्याप्त हैं। प्रत्येक सदशिष्य का हृदय उनका निवास स्थान है। हमारे वर्तमान पीठाधीश्वर स्वामी श्री पुरुषोत्माचार्य जी उनके साक्षात् प्रारूप हैं।

- आशा गर्ग, दिल्ली

● ● ● ● ●

1994 की बात है। मेरे पास तीन लड़कियां थी। मैंने श्री गुरु महाराज से एक लड़के लिए प्रार्थना की। गुरु महाराज ने कहा ठीक है इस बार लड़का होगा। बच्चे को गर्भ में 8 महीने हो चुके थे। श्री गुरु महाराज ने मुझे कहा कि तू अल्ट्रासाउंड करा ले। मैं कहने लगा कि अब इस स्टेज पर अल्ट्रासाउंड का क्या फायदा? श्री गुरु महाराज ने फिर जोर देकर कहा कि एक बार करा ले। मैंने अल्ट्रासाउंड करवाया। गर्भ में फिर लड़की थी। मैंने गुरुजी को बताया तो वह कहने लगे कि कोई बात नहीं, दो जोड़े हो गये। अगली बार लड़का हो जायेगा। मैंने कहा कि आपको तो कोई फर्क नहीं पड़ता, परन्तु मुझ जैसे गरीब आदमी को तो बहुत फर्क पड़ता है। सच तो यह है कि मेरे भावों को बड़ी भारी ठेस लगी थी। फिर श्री गुरु महाराज बोले, अच्छा तो अब फिर एक और अल्ट्रासाउंड करा ले। अगले दिन अल्ट्रासाउंड की रिपोर्ट मेरे पास थी। एक में लड़की और दूसरी में लड़का। लेकिन मुझे पुत्र की प्राप्ति हुई। यह चमत्कार नहीं तो और क्या है। कितनी ही ऐसी चमत्कारिक घटनाएं मेरे जीवन में हुई हैं और अब भी होती रहती हैं। श्री गुरु महाराज पूर्ण सिद्ध संत थे। आज भी भक्तों के जीवन में वैसे ही चमत्कारिक घटनाएं घट रही हैं।

- राकेश शर्मा, दिल्ली

मेरी दोनों किडनियां खराब हो गई हैं। जिनके लिए हर दूसरे दिन डायलिसिस करवाना पड़ता था। लेकिन जब से गुरु महाराज से प्रार्थना की है। अप्रत्याशित रूप से वह सप्ताह में एक दिन हो गया है। मेरे डॉक्टर भी इस प्रोग्रेस से चमत्कृत हैं। मेरी जिन्दगी पहले से अच्छी हो गई है और यह सब गुरु महाराज के आशीर्वाद का ही फल है। बाबा स्वयं भगवान हैं जो जब चाहे तब किसी भी प्रकार से भला कर सकते हैं।

- पी.डी. शर्मा, दिल्ली

● ● ● ● ●

मेरे सद्गुरुदेव भगवान जिन्हें सांसारिक जगत में श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज के नाम से जाना जाता है, वास्तव में हमारे परिवार रूपी शरीर के लिए प्राण समान हैं। मेरे एक पत्रकार मित्र ने सद्गुरुदेव से मिलाने का वायदा किया। परन्तु वह अपनी कमजोरियों के कारण ऐसा नहीं कर सका। अचानक गुरुदेव की कृपा हुई और इस दास को आश्रम की पात्रिका के संपादन की जिम्मेदारी दे दी गई। पहली बार इसी सिलसिले में श्री सिद्धदाता आश्रम को देखा। उन दिनों मेरी आर्थिक स्थिति बेहद नाजुक थी। लेकिन बाबा की कृपा भी अजीब थी, स्वयं कहां-कहां से हमें देता था। लेकिन हम किसी से सहायता मांग लें, तो साफ मना हो जाती थी। वही क्रम अब भी चल रहा है। मैं सन् 2003 में बाबा के मौन समय में उनकी शरण हुआ। पर उनका हाथ सदा ही मेरे सिर पर था। आज सोचता हूं कि 1996 में पत्रकारिता में मेरी पहली खबर बाबा के सत्संग की ही तो थी। यद्यपि मैं उन्हें नहीं जानता था फिर भी 97-98 से ही बाबा के कांवड सेवा कैंप में सेवा देने लगा था।सम्पर्क में आने के बाद मैंने सद्गुरु से एक इच्छा रखी थी कि कभी उन्हें बोलते हुए देखूं। उन्होंने मेरी यह इच्छा शरीरी लीला समाप्त करने के कुछ ही दिन पहले पूरी की। ब्रह्म मुहुर्त में बाबा ने मुझे पूर्ण होशोहवास में दर्शन दिए और कन्हैया की तरह छम बम करते हुए कहा कि क्यों चिन्ता करता है। संतोष कर, तुझसे मुझे काफी काम लेने हैं। मैं उनकी यह मनोहारी छवि देखकर जोर-जोर से रो रहा था। मेरी पत्नी गीता सोते से जाग गई और मैं आधा घंटे तक रोता रहा। हमारी शादी को छः साल बीतने के बावजूद कोई संतान नहीं थी। हालांकि व्यस्तता के कारण हमें इस तरफ सोचने का मौका ही नहीं मिला था। परन्तु फरवरी 2008 में एक नामधारी संत ने कहा कि अभी संतान प्राप्ति का हमारा समय ही नही आया है। मैं इस बात को जानकर बेहद दुखी हो गया। मुझे लगा कि यह तो मेरे बाबा की शान में गुस्ताखी हो गई। हमने पहली बार बाबा से बच्चे की कामना की। मार्च 2008 में चिकित्सकीय जांच करवाई तो पता चला कि एक महीने का बच्चा पेट में पल रहा था। 5 नवंबर 2008 को एक प्यारी सी बच्ची का जन्म भी गुरुदेव की कृपा से हो गया। गुरुदेव की मनसा आज्ञा लेकर बच्ची का नाम जीविका रखा है। मैं तो यही कहुंगा कि मेरा सद्गुरु मुझसे न रूठे, दुनिया छूटे तो छूट जाए।

-

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर' पत्रकार, दिल्ली ।

असीम को सीमित शब्दों में कैसे बाँधा जा सकता है। गुरुदेव के विषय में कुछ कहना या लिखना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। उनके सान्निध्य में आने से हमारा

जीवन पूर्णत: बदल गया, सोच की दिशा ही बदल गई। गुरु महाराज तो वे पारस हैं जिनकी कृपा दृष्टि पड़ते ही लोहा भी सोना बन जाता है। गत् 26 वर्ष से हमें उनका कृपामय आश्रय प्राप्त हुआ 'कृपा कर अपनायो'। तब से अब तक कितनी ही घटनायें याद आती हैं कि जब कभी कहीं भी हम पर कोई संकट या मुसीबत आई और हमने उनका स्मरण किया, उन्होंनें तुरन्त आकर हमारी रक्षा की। समस्या चाहे मानसिक, आर्थिक, सामाजिक या स्वास्थ्य संबंधी कैसी भी रही हो, गुरु जी ने ही हमारी नैया को पार लगाया। हम अनुभव करते हैं कि गुरु महाराज की हम पर हर पल कृपा दृष्टि रहती है। हम से जो भी जाने अनजाने गलतियां होती हैं उन्हें क्षमा करते हुये जीवन पथ को सुगम बनाते हैं। भक्ति व श्रद्धा-भाव एवं कर्म का पाठ गुरुदेव ने ही हमें पढ़ाया।

इन पहाड़ों में नयनाभिराम श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम मन्दिर एवं श्री सिद्धदाता आश्रम (जो कि सिद्धों को भी देने वाला है) का निर्माण गुरु महाराज द्वारा किया गया, जिसे हमने कण-कण बनते देखा है, जो हम भक्तजनों के लिये आज वटवृक्ष के समान शीतल छाया देने वाला है। गुरु महाराज की सम्पूर्ण महिमा को न तो हम जान सकते हैं व न ही बखान कर सकते हैं। वे तो परमपिता नारायण के अशांवतार ही हैं। गुरु तत्व तो अमर होता है।

पुरूषोत्तम मधुकान्ता नाथानीजयपुर

● ● ● ● ●

Jai Guru Dev !!

It always gives me immense pleasure to share with all my Guru bhais, the miracles my beloved Guru Ji does for me and my family on a regular basis.

Miracle: - What is a miracle? Its God re–arranging reality in our favor. What Maybe a miracle for me could just be a normal thing or a coincidence for others? But, under Guru's Grace, everything is a Miracle.

It happened few years back in Mumbai, when we were going back home after watching a late night movie, on the way we realized there were lot of police jeeps and we wondered what was going on. We asked people what had happened and they said there was some communal tension and it has sparked riots. While proceeding further, we saw few open jeeps with people

inside wearing masks and carrying swords and knives that sent shivers down our spine. It was a very scary sight, we tried taking other roads, but all were blocked and it was raining heavily too. My brother-in- law had no clue what was happening as all the diversions he took, the roads were blocked and riots were going on there. As it always happens the car was very low on petrol.

We tried to call up few of our friends who were staying in that area, so that we would spend the night in their house as we had 3 small kids with us. We were totally clueless as if the world had stopped, and moreover if we would have taken a wrong road, we could be in serious trouble.

At that point my wife started praying to Guru Ji for his help as we were stranded. In next few minutes we suddenly saw a taxi driver stopped in front of us, he was an elderly person and he gave us directions of a road which would bypass those troubled areas. My brother-in-law exactly followed those directions and within minutes we were out of the danger zone, obviously found a petrol pump as well and reached home safely.

That elderly person was sent by Guru Ji to show us directions. Guru teaches us never to lose hope even in hopeless situations, he is always there for us; His timing is always perfect.

We are all blessed as our father, our beloved Guru Ji takes care of us every minute and he is always there for us.

"Jai Shriman Narayan"

Kamal Satwani
Dubai

● ● ● ● ●

Jai Guru Dev !!

Our family has had the good fortune for last 20 years to be blessed by holiest of hollies Shri Sidhdata Ashram. My individual experience of miracles and immense graciousness of Shri Guru Maharaj and present Shri Guruji are countless but I will like to share a latest miraculous experience I had. I have been in U.S.A for last 12

years and have a Green card. I generally keep my actual physical Permanent Resident card is the bank locker and only take it out when I am travelling internationally because after 9/11 it has become extremely difficult to replace it and it takes 2 years of investigation before Department of Homeland Security replaces the actual card. I had to open a new back account and it was one off very rare occasions except when I am travelling that I had my Green-card in my wallet. My job involves constant discussions with the clients and hence lot of talking on the phone. I was on a phone call when I left from work that day with my wallet in my hand. As I took out the keys of my car I kept the wallet on the roof of the car as I had the phone in my other hand. Distracted with a very important client conversation I sat in the car and drove off without realizing that the wallet was still on the roof of my car. As I pulled into the gas station and looked for my wallet I realized what had happened.It wouldn't have been such a dire situation had my Green card not been in my wallet, but on that fateful day it was. Everything else was replaceable but losing the Green card meant worlds of problems were upon me as I wouldn't be able to do many things including travel internationally, where I had to physically produce my Green card. As I realized the gravity of my situation, panic set in and I started driving back to the route I took to work in a hopeless attempt to find my wallet on an US highway. I prayed or more like cried loud to Guru Maharaj and Guruji about helping me out and told him if I ever needed him, now was the time. I must have driven back and forth 4-5 times back to work tracing the route but as night set in I returned home extremely distraught about what had happened. I prayed to Guru Maharaj and Guruji as always, that what may come now shall be his will. I researched on the internet and brazed myself to start on what felt like a long & hard road ahead, to get out of this mess.

My first & immediate problem was to get my Driver's license back but Department of Motor Vehicles (DMV) required to see my physical Green Card to give me a replacement License. I prayed to Guru Maharaj and Guruji and went to DMV any way, knowing very well that as per law they cannot issue me a replacement without seeing the proof of citizenship but I had no option and had complete faith in Guru Maharaj and Guruji. As my token number was called in I was greeted

by a nice gentleman and I explained him my situation and that I had lost my Green card as well as my Driver's license. I was expecting a "Sorry I can't help you" and it would have been fair but to my amazement he agreed to help and quietly issued me a new licence. Anyone who has dealt with DMV in America will understand this was a miracle indeed.It was sign enough for me that GuruMaharaj's blessings were with me to help me accomplish this mountain of a task that lay ahead of me.

Thanking Guru Maharaj and Guruji in my heart, I left from there to visit my bank to get my new Bank cards. That afternoon in the Bank as I was working with a banker to get my cards re-issued suddenly the branch manager approached me and said "Hey Abhishek! How are you, I was meaning to call you as we got a call from the County Police Station and they have found your wallet and called the bank from my cards to get my contact info". I could not believe what I had just heard ; I jumped up in joy shouting "Jai Guru Dev" which everyone heard and explained the manager what just happened and what a miracle this was. How a police officer found my wallet on a busy highway and the department came looking for me is still a mystery to everyone I tell the story to. But in my heart and mind I knew it was only the immense graciousness of Guru Maharaj and Guruji that such miracle happened. This is one the countless Miracles I have personally experienced and no different from the countless I have heard from other devotees.

Dasanudas
Abhishek Gautam, Virginia ,U.S.A

● ● ● ● ●

I wish to take this opportunity to express my feeling and experiences under the Lotus feet of our respected Guru Ji.

I came in contact with Guru Ji in 2000 and that time I didn't saw or meet Guru Ji. One of my aunt got Guru Ji's picture and we respected and kept that picture in our Mandir. My aunt use to say about the greatness of our Guru Ji, but we got faith when my father got some health problem. My aunt said you pray Guru Ji and keep 9 days and 9 times path of Guru Chalisa and on the 8th day my father's health improved. Same thing happened with my only brother, he got im-

provement on 1st day of path as well. After this, our faith got stronger day by day.

Finally I met Guru Ji in 2006 on 20th November that time Guru Ji was very ill and the darshan we got from Guru Ji was amazing. We felt as if Guru Ji was waiting for us because our train got late. We got blessing from Guru Ma and Swamji. With blessing of our Guru Ji and Govind uncle I got my husband Mr. Lalit Gianchandni. We got married on 18th Nov 2008 at Guru Ji's ashram. We got a lot of blessing from Guru Ma and Swamji as if we got married in heaven.

After coming under the lotus feet of Guru Ji I got Naam Daan on 8TH July 2008. My life got totally changed. I believe if I couldn't met Guru Ji I could have lost myself in darkness. I feel as if I'm the lucky person to have such a Guru. The place where I stay in Dubai, there the Guru Gaddi has the same vibration as if we are in ashram. I have experienced so much kripa of Guru Ji, that if I sit and start writing, even in one complete book I will not be able to completely write what I would like to tell about the Guru Ji's kripa.

I always pray Guru Ji to shower his blessing on me and my husband and our family so we can follow his teachings and do manav seva.

"Jai Guru Dev"

Kirti L Gianchandni
Dubai

● ● ● ● ●

"JAI GURU DEV SHARNAM"

I wish to take this opportunity to express my feelings and experiences under the lotus feet of my respected Guruji.

In 1973, when I was just 13 years old, I met Guruji in Defence colony as he was visiting one of our family friends Mahindra Singh Chowdhary and I remember each and every moment, as if it was just yesterday. The time has flown and I don't know if these moments will ever come back in my life? I am grateful and indebted to our friend who introduced us to Guruji as I don't know

what we would have done without having Guruji in our life.

I was very young to understand the concept of a GURU in one's life and always took life as it came, on day to day basis. My brother Gobind Bhai, did understand faster then any one else and did guide us, time to time, the value of a GURU in ones life and that helped us mould our minds in right direction to a great extend.

Guruji always treated us like his own children, gave us enough time and attention and in those days the relation was more of a father and son, rather then Guru and Devotee and as the time passed by we realised his teachings but surely made mistakes as well and he always corrected us and supported us through out our lives and I have no words to express my gratitude for the time, help, teachings, love, affection and attention he gave us as it is humanly impossible for any one to attend to so many devotees at the same time and give due attention to every one and advise them and at the same guide them with out any greed. Our Guruji did that, perhaps this is one of the qualities of a true GURU.

Our Guruji was a complete GURU and it is practically impossible to find some one like him on this planet and I am sure many devotees who have even understood him or known him a bit will agree to that.

If I have to share my experiences with any one, it will take ages to tell the events as I have seen miracles every day and every moment in my life so really don't know where to begin and where to end? When we have any Guru's grace, miracles happen every moment; it is up to a devotee, how he sees the same in his life.

During last 35 years I may have spend 50% time with him or around him as I don't stay in India but I have felt his grace, presence and blessings every moment in my life. Like every one else, I have also had my share of problems but he has helped me all along be it thick or thin. In 1983 I was attacked almost on 3 occasions by some robbers in Africa and very first time I was shot at, luckily I escaped the gun shots as Guruji saved me all the times. It can't be a co-incidence to escape all the 3 times unhurt, surely and purely it was his grace and blessings as I am very much alive.

As Guruji used to say that what ever is required he will give us and NOT what we want. I have experienced in my life, what ever we require he has provided in one or the other way, where ever I may

be.

I always pray his blessings remain on me and my family and we should continue doing Seva and follow his teachings.

Das Pooji,
Lagos, Nigeria

● ● ● ● ●

I first came to this Gaddi in March 1999. It was during this year when my life took a turn for the worst. I had a second heart attack and also experienced severe pain in my hands and legs for which doctors could not find the cause. My daughter who was 11 years old, also at the time suffered from Pneumonia and severe wheezing. During this time I had also lost my job.

Through the help of friends I came to this Gaddi. I can still remember attending satsung every week in a small room. Dada would speak about Guruji and thereafter we would sing Guruji's Bhajans. Dada would see to everyone's problems every week. He prayed for me and asked me to attend satsung every week. My health improved and over time I had opened my own business. My daughter was also cured from her Pneumonia and wheezing.

My business blossomed for 3 years and I was financially secure. In the year 2002, things took another bad turn for the worse. My business fell and I was admitted to hospital for a 3rd heart attack. My health had deteriorated in such a short time span. I was also diagnosed as a Diabetic. I had undergone major heart surgery which resulted in 2 stents implanted in my major arteries. While I was recovering in hospital, the keys to my business were taken away resulting in a large sum of money being lost.

By Guruji's grace my health improved and I was in great debt to many banks. I had gone to court and had been issued with an administration order for which I was told that I would pay for many years to come. After loosing the business I was unemployed for a year. This was a very difficult time for my family. We relied on my wife's income to see to family needs including my daughter's university needs. After a year by the grace of Guruji, I was able to get a temporary job. In the year 2006, this temporary job became a permanent job. Although I have not made the trip to India to see our

beloved Guruji, he answered my prayers in my dreams and assured me that everything will be fine. It was through devotion, patience, prayer and attending satsung every week that carried me through this journey.

It took me 10 long years to understand and see the grace of Guruji and God. Today I have been promoted in the very same permanent job. My administration order was cancelled and the lawyers have not asked me for money till this day. I am driving a new car which replaced the old car which I drove for 18 years. I am also grateful to see my daughter qualify with her honors as a speak language pathologist. This all could only happen with the grace of Guruji. I have weathered the odds and now my life is taking a turn for greater expectations.

Krishna Murthi Pillay
Durban

It gives me great pleasure to write my personal experience about my beloved GuruMaharaj.

Although I am no one to write about this Supreme Being but I'd like to express my feelings for the simple reason that wherever my life stands today is only and only because of GuruMaharaj and wherever it will in future will also be because of GuruMaharaj.

It all started when I came to the U.A.E in 1999 and landed with a job in Abu Dhabi. Although I was not eager to go to Abu Dhabi I took the offer as I was a fresh graduate and I couldn't be a chooser. To tell you the truth I was a complete atheist in my values at that time, I used to hear from my sister in Dubai that they attend Guru Maharajs satsang once in a week. I had not even seen Guru Maharajs photo and hardly knew him. I had no intentions what so ever of being so religious and attending satsang.

Just about 2 years later I was desperately looking for a new job in Dubai. I applied everywhere I could and tried for almost six months but couldn't find a suitable job. It was hard to believe that after trying so much I would not be called even for an interview. I was totally in a miserable condition and had given up on my life.

During that period of loneliness and depression I started inclining towards GuruMaharaj. It so happened that slowly my interest started growing in hearing GuruMaharajs satsang. I suppose it was my GuruMaharajs wish that sparked the interest.

I started getting satsang cassettes from Dubai and used to listen to GuruMaharaj every morning and read Guru Chalisa before I leave for work.

Then I felt I should attend at least one satsang but because I was in Abu Dhabi I never used to be present at the time of satsang. But luckily there was once a public holiday and I happened to be in Dubai at the time of satsang, after which I started praying to GuruMaharaj that I be given more satsang privilege.

And GuruMaharaj heard me!!

I got a chance to meet Gobind uncle once in Dubai and that day changed my life.

Few months later I got a job in Sharjah as told by Gobind uncle. But the astonishing part is that the job was exactly like I wanted. I felt the job was tailor made for me as it suited my requirements so well. I got my driving license from Abu Dhabi in a record time with least amount of money spent on it. Suddenly in a few months I realized life was too good to me.

These things were too good to be true for me, that is how I realized my GuruMaharajs miracles.

There are so many instances in my life in which GuruMaharaj has helped me out of very complicated situations. I never realize at that time but when I sit down and think how I got out of the problems I realize it has to be GuruMaharaj!!

Without his presence I would have been no where and I mean absolutely no where.

I feel my sole purpose of coming to the Gulf was because I had to meet GuruMaharaj. It's just that wherever you are in the world GuruMaharaj will call you one fine day.

Monesh Aidasani Dubai, UAE

● ● ● ● ●

Being the first South African couple to get married at our ashram in India with the blessings of our great Guru Ji, it

give Lash and myself, Viresh the honor of reminiscing on paper the miracles and experiences of the father of our people, Guru Ji.

OUR FIRST CONSULTATION

The first consultation with Guru Ji was one that is stamped in our memories forever reason being is that, Guru Ji was in Bombay at the time and we were part of the around forty people that were there to see him. Lash and I were anxious and afraid to see him with the thought at the back of our heads that when we get our chance to speak to Guru Ji we must know exactly what ever we want to find out or write down all the questions that we wanted to ask Guru Ji, so that we do not go blank in front of him.

Everyone in that room was nervous including us. The first names to be called were Viresh and Lash, our hearts were pounding but we were excited at the same time. We were prepared with all our questions, five to be exact, written down in our book. In my mind all that I could think of was that we worship Guru Ji through his photo and now we get to see him in person, “Amazing” that’s what was going on in my head.

We walk in; bow down, Guru Ji looks at us and smiles. Govind Dada was there at his side to translate from Hindi to English for us. Guru Ji opens his book and starts writing in Hindi from point one to five, amazingly all the questions that we wanted to ask him, he had already written the answers down in his book and then he started talking to us and grant us whatever we wanted to ask him for. Only Lash and I knew what we had written in our book, Guru Ji had written down all the answers in the same order that we had our questions written down.

EXPERIENCE AT THE ASHRAM

It was late evening when we first arrived at the Ashram, we made ourselves comfortable, and it was a cold winter in Delhi. The room that we stayed in was upstairs, there was a huge balcony which you can stand on and admire the ashram. We stood at the balcony and looked at this blessed holy pathway that Guru Ji has, where people come from far and wide to rid themselves of evil spirits. It is absolutely amazing to see so many people having these types of problems and being healed by just sitting on this pathway, praying to Guru Ji, from children to adults, everyone between thirty to forty people at once being treated.

As we prepared ourselves to walk around the ashram, Lash tells me she feels for a nice tasty pizza or a burger, I told her we shall see later. As we came down, we saw Guru Ji walking towards us, this is the second time we see Guru Ji in India, first being in Bombay as Guru Ji was walking toward us, we bow to greet him. He looked straight at Lash and asks her if she would like to have a pizza or a burger? It's like Guru Ji knows everything we talk about and need, Lash was in shock, she did not know what to say, these incidents may not seem important to many who read this but, to the both of us it just confirms the fact that Guru Ji is so powerful, that he knows our needs and will never let any of his devotees go hungry be it in India or wherever in the world we live. "People who have businesses or people who work always have the same question to Guru Ji that is to earn more money. Guru Ji may not grant you that immediately but he will always make sure that his devotees have sufficient funds to put food on the table.

NO DEVOTEE GOES HUNGRY.

This was just one experience that we had, while meeting Guru Ji for the first time. We have had so many other experiences before and after meeting Guru Ji. There is only one thing that we would like devotees to remember "if we absorb what Guru Ji teaches us and practice it we would see the light just as we feed a plant water if the plant does not absorb the water it would dry up and not bare fruit likewise if we absorb what Guru Ji teaches us we would grow strong fruit and reap the benefits".

Lash and Viresh
Durban

● ● ● ● ●

I, SoniAidasani was blessed with my second son " MeethAidasani " on 29th December 2007. All was well until the 2nd day of Meeth's birth, when the doctors in the hospital in Dubai, UAE told us that they could hear a murmur in his heart and his breathing was not normal. Since he was only 2 days old, doctors advised us to come for a detailed checkup when he is 3 months old.

After 40days, when I took Meeth to India for a detailed investigation it was diagnosed that he has 2.5mm hole in his heart and this problem medically was termed as " Atrial Septal Defect ".

In this condition, due to the hole in heart the oxygen level is low and the flow of impure blood in the body is quite high, thereby increasing the fatigue level in the patient and other illness related to the same as well. The only way this to be cured was to undergo a heart operation and close the hole to make his heart function normally and this was to be done at the age of 2 years approx.

I very well knew where I had to take him next. Without any further delay my mother and I took him to Ashram and prayed to Swami Ji and told him the entire problem. He assured me that he would pray for him.

The test was to be repeated after few months to find out the progress in the recovery. I flew back again to Lucknow with a very nervous heart and took him to the pathology and to the doctor who was to conduct this test under sedation for him, in a pitch dark room. The feeling was scary with your 10 months old in this situation, but something told me from within that things will get better, the Faith never failed.

The doctor took approx 45 mins to do the test, while I was an xiously waiting to know what he says, I was also wondering what is taking him so long and why is he not speaking at all.. Anyways after a long gap, I came to know the result which was beyond what I even expected. I was expecting the hole must have shrunk and so on…..

Quoting the Doctor " God is really kind on you…. I can't believe this myself… there is no hole in the heart, it has closed on its own and that's what was taking me so long to check why is it not showing…. "

Well, I came out of the dark room with tears of joy and gratitude towards our Guruji, who I knew had done the miracle.We shared the news with the entire family and everyone was too over whelmed. Our Family really cannot thank our Guruji enough for all that he has done for us, such incidents are too many , but the reason why I wanted to share this isto make all of us realize that what science and medical cannot do, our master could do just with his spiritual strength.!!

We are blessed to be in the fold of such a Master, who is doing so much for all of us each day and guiding us each day,each moment, through all our life's situations and challenges.

JAI GURU DEV !!!

SoniAidasani, Dubai, U.A.E

Our Reverent Gurus, Respected Swami Surdarshanacharyaji Maharaj and Respected Swami Purshottamacharyaji Maharaj, by their immortal presence showered their unconditional love and impacted us greatly. Their presence has delivered countless miracles both spiritually and materially; thus having altered our lives with life of purpose, meaning and deep fulfillment

Our first encounter with Guruji was in 1993, Since then, our regular family trips to the Ashram, has enlightened us and our Children to change our vision towards life making us think positive and overcome peer pressure. Guruji's immense loves towards our Children taught them to embibe good human, social and spiritual values.

Guruji gives us the tools and mechanisms to face life's challenges, come what may ~ and to understand the purpose of our personal challenges leading to spiritual upliftment. He has moved us from the "UNREAL" to "REAL" and has changed our vision and perspective towards the spiritual world. With Guruji's Grace, these challenges came, only to bind us with Guruji and teach us to surrender at his Lotus Feet. His presence is felt all around us.

Our families raised us ritualistically and performing Pujas and Havans was never a question, however looking back, those prayers are now evidence of a response from the Lord bestowing upon us a "GURU" in 1995 to lead us to the path of salvation.

Self Realization is the only purpose which resides in NAAM. It is our good fortune that our family members took NAAM Daan individually in 1999 , 2006 and 2007 by Guruji. Today, our family are experienced beings of the power of NAAM and to the extent that it's reshaped our lives.

Guruji's Ashram is "Heaven On Earth". In my personal experience, I felt a presence of the Lord, and my prayers were both heard and answered.

Our once turmoiled life was soon filled with profound strength and fearlessness.

Our Guruji's Grace lifted us to enjoy the 'higher taste' and essence of spiritual practice. I can still remember the time when Guruji opened his arms to us and let us 'IN'.

Guruji has emphasized that the TRUTH is eminated from Satsang. We are blessed to have so many opportunities to listen to 'spiritual gems' directly from the messenger of God. Of the repeated blessings.

As follower of Guruji for 19 years now, our whole Mahtani family's lives have transformed like the transformation of a butterfly. Where would we be without Guruji? As we light the incense or candle in our daily prayers , we can only ask for HIM.

Vanisha Mahtani, Hongkong.

● ● ● ● ●

Over the years, through many generations, it was custom to follow the rituals and prayers performed by my parents and ancestors.

My family and I were ignorant because we did not understand the concepts of our religion being Hinduism. A dear friend that thoroughly enjoyed the bhajans and prayers that were performed at our home on a Tuesday, persuaded me to visit our Durban Gaddi about 6 years ago. Since then, with the guidance of Khanaya there was no turning back. Total surrender, faith, devotion and love have drawn me to the lotus feet of our Dear Guruji. I cannot explain the miracles that happen every second of the day. I wish I would have known Guru Ji sooner, as this was the best thing that happened to me. I love you Guruji, thank you for lighting up my path. I will remain forever your humble slave.

Mala Baijnath
Durban

● ● ● ● ●

With the blessings and grace of his holiness Guru Maharaj, I am very grateful to Guruji for giving me this opportunity to write down a few of my memorable experiences with our beloved Guru Maharaj.

I used to live in Lagos, Nigeria and had heard about a lot of miracles that Guru Maharaj had done but I never really felt connected to all this unitil the year 1995. This was the year I got married and my wife; Sheena and I had visited the ashram in Faridabad for the first time.

We were really very lucky to get Guru Maharaj's darshan being our first time in the ashram. After meeting us at the gaddi, Guru Maharaj took us both to the dev darbar and read mantras, making us exchange garlands and blessed us both again in a very divine way which was something my wife had always prayed for.

Our lives had been touched by none other than 'The Supreme Lord' but we being lame humans had not realized this.

I visited the ashram again in December 1995. Sheena was pregnant during this time, I met Guru Maharaj at the gaddi and without me mentioning anything Guru Maharaj told me not to worry and that he knew why I had come, he told me that the baby was in the wrong position. Guru Maharaj then told me that he has sent his doctors and that the baby is in the right position now and there is nothing to worry about.

When Sheena went for her next check up, even the doctors were shocked to see that the baby was in the correct position, they could not believe how this had happened. With the grace of Guru Maharaj we were blessed with a healthy baby boy.

In December 1996 I along with my family visited the ashram to meet Guru Maharaj and seek his divine blessings, we met Guru Maharaj at the gaddi and there he told me that my business was in a loss. Guru Maharaj then blessed me and told me that within 6 months I would recover all my losses and start making profit and that is exactly what happened. From that day onwards with the grace and blessings of Guru Maharaj I have been progressing in life.

In the year 1999 when I met Guru Maharaj, I was blessed in a most gracious way, Guru Maharaj told me that in life wherever I am and I ever have any problem I should just pray to him and that my problem will be resolved and that is exactly what I have been doing and Guru Maharaj has been helping me ever since.

I feel very blessed being one of the fortunate ones who got Naamdhan from Guru Maharaj in the year 2001. We were not sure if we would get naam since our loving Guru Maharaj was not well, but

see his loving nature in all his illness he still gave us all Naam. This changed my life for the best.

Who else but a true Guru gives, gives and only gives and in return asks for nothing but only that we should leave our bad habits.

Before I met Guru Maharaj my way of thinking and attitude towards life and everything else was very different, after meeting Guru Maharaj and hearing his satsang and interacting with him I realized that how wrong I was, I thank Guru Maharaj for changing my entire life and making me a better person.

My salutations to our Beloved Guru Maharaj who always continue to live in our hearts forever guiding us every single day of our lives which would have been meaningless without his living and divine grace.

Rohit Sidhwani Dubai, UAE

● ● ● ● ●

"JAI SHREEMAN NARAYAN"

I came to Guruji when I was probably in my 11th class. It was just somewhere Mummy, Papa were going; didn't understand much about Guru and how HIS kripa changes and forms our life. HE took us in HIS "sharyn" right away, and over the last 18+ years, HE has given us so much. With HIS blessings and kripa, we have come through all the life up and downs with smiles.

In 1991, had a few near-death experiences and I came out with minor bruises, Baba was with me all the time, and protected me. Fell from horse back, on the corner of the cliff, can't remember a thing except that I was taking Baba's name. Everyone thought I would have gotten a bad hurt; could have died; but all I had was a little bump on my forehead and right there was someone waiting with lodex! Jai Baba Ki.

After my 12th grade, I was pretty sure I didn't want to study further, wanted to be a fashion designer. My cousin was going to UK and I asked dad if I could also, and the answer was "NO! I am just a chemist, can't afford the fees and other expenditure." Decided to ask Baba, and HE said "Why not". Baba told papa to send me to UK for my Bachelors, and HE will take care of the funding. Filled out the forms and next I know I was going. Papa has no idea how business

grew enough that he could afford my fees. It was a huge amount, but Baba made it seem nothing. A lot of people asked papa, and he always replied, "Guru Kripa". A lot of times, I felt like quitting and running back home, but Baba always made me stick it out. Mom was worried about me all the time, but Baba always reassured her, HE always said I am papa's beta, not beti. Baba told me that "anytime you miss home, keep a glass of water and remember me, and I will come, you will see the water lowered", I tested HIM, and it did happen. Jai Baba Ki. My professors always thought highly of me, although I don't think I was very academic, but Baba always made it happen. HE got me an excel lent job opportunity after graduation, and took care of me always. HE always said, "Mai apne sharnagat kae hamesha saath hu", and time and again HE showed me that. Jai Baba Ki.

Went through a very bad phase in 1998, "Purane janam ke karam to katne padte hai, but Guru ki sharan, unhe 99% reduce kar deti hai". It was a very rough time in my life, but Baba protected me through all of it, gave me and my family the strength and love to survive. With HIS kripa, I had an excellent job to support me. To keep my morale up, HE gave me promotions and great success at work. HE was going through health problems HIMSELF, but always asked about me. On one of my trips to India, Baba was on wheelchair and didn't used to talk to anyone. HE especially stopped the wheelchair and said "Pinky Beta, Apne Aap". That has been the strength for me since than. I used to fight a lot with Baba, cry, question "why me", but HE was always patient and loving. HE provided strength and support like a Dad; love and shelter like a Mom. Baba ki kripa se, today I am extremely happy with my husband and son and a second baby on the way. "Guru Kripa bin Guru bhi nahi milta". Jai Baba ki

Today Baba is not with us physically, but HE is with us, always. All we have to do is call HIM with true heart, and HIS presence can be felt, wherever in the world we are. We have to remember and follow HIS words and be an obedient child, not a pampered one. "Bhav Mein Hi Bhav Hai Mera"

Pinky Suri/Hari
(U.S.A.)

● ● ● ● ●

I want to share how Guruji has protected me and saved my life.In Sept'2004 I got admitted to Rashid Hospital, Dubai due to Acute Pancreatitis. For those who do not know about this condition, in this the pancreas gets swollen and it omits a poisonous fluid/enzymes that in normal conditions helps to digest our food.

Though Doctors did a laparoscopic surgeryon me to cleanse this poisonous fluid, they had given up hope on me. I as in ICU for 13 days. It was during this time I experienced Guruji's graceand blessings.I truly understood that even if we forget Him but He never forgets us even for a moment and comes to help us whenever we call upon Him.

In ICU I was sedated and woke up after 6 days of surgery. I was on ventilator as my lungs were also affected due to the poisonous fluid and it was difficult for me to breathe without the aid of ventilator.

Doctors would come everyday and check the oxygen and other gas levels in my blood. This process went on for another 5 days. Everyday, specially nights as I was all by my self, I would pray to Guruji asking Him that how long will I be like this?? You have saved my life so surely there is still some work left in this world for me. I want to fulfil that. I want to be back on my feet. Will I ever be able to breathe without any help? And one day He did hear my pleas and prayers.

One morning during the usual visit of doctors, I saw that Guruji himself is standing in front of me and asking the nurses that why this girl is still on ventilator. Remove this. At that moment when the nurses were obeying Guruji, I felt as if I will die. How will I breathe..then Guruji asked me to cough and take a deep breath and then asked me to drink some juice slowly..

Only after this that I could realize that the person instructing the nurses was actually the head of respiratorydept.. But for me, it was Guruji who came Himself to save my life.

After this I was in India for further treatment and before coming to Dubai I went to Ashram to seek His blessings. Now I am 98% on my feet with lil problems in my feet. I am much thankful to Guruji.

This is the divine grace of Guruji.

Neeta Ramchandani, Dubai

● ● ● ● ●

My experiences with Guruji had begun so unintentionally. Approaching the Durban Gaddi, unexpected, I was affiliated by the knowledge of our supreme Guru and his teachings. Yet, being so skeptic and unsure of all this different meanings, the bond created has lasted to this day.

Guruji's meaning cannot be summed up into a page, a book or even a collection of books. Everyday seems to be a blessing from our Guruji, as the reality of experiencing each day unharmed, clothed, fed and healthy, shows he is truly our supreme father, who takes care of us from our simplest needs to the most testing need.

Experiences from our Guruji cannot be pinpointed to a specific event.However, living through his grace, we live in a state, that Guruji has protected us from death, financial crisis, education, health and the list goes on. I may have not had a specific crisis, as with Guruji no crisis seems to gain importance or relevance.

Protecting my family from all sorts of evil and making sure we never saw the streets, as there was a point in time to which we came close to losing everything. However Guruji is my everything and my humble respects to beloved Guruji as I am blessed to be succumbed by his divine presence and devotion.

Mr. Prem Pardesi and Family
Durban

● ● ● ● ●

In 1998 when my family was introduced to Gobind bhai by his sister, Kelly was always sick, in and out of hospital. We did not have a house of our own for 28 years. I was lucky to go for Guru Purnima with Gobind bhai. When Guruji saw me, he told I will get my land by May 2000. It was so true. Our house was completed in August 2000. Kelly moved to our house on the 16th August 2000 on his birthday. With the grace of Guruji, our house was freed in 3 years. Kelly enjoyed his house for 8 years. My son and I are very grateful to Guruji. Whenever I am in problem, Guruji is there for me. Guruji also put my child right, Kaveer. I will never forget Guruji. The name Guruji is more precious than the wealth of the whole world. I will always pray to Guruji, thank you for everything Guruji.

Mrs. Kelly Ramdhani
Durban

● ● ● ● ●

My Pranaams at the Lotus Feet of our Great Guruji

I have been thoroughly blessed to be in contact with Guruji since 1980, I was around 10 years old. I used to visit Him at Defence Colony, Delhi along with my uncle. Of course for me – it was just an outing.

I lost my father at a very early age and when Guruji heard about this – He said that from today my brother and I were His respon sibilities, and really, He knows how to keep His Word.

Reflecting back all these years, I really have to accept that He has really taken the utmost care of me. He has brought me up in all dimensions - physically, mentally, financially, emotionally and of course – spiritually. There is not one stone He has left unturned during this period of my growth and till date He takes so much care of me and I am so so sure that He will take care of me for as long as I live and even beyond.

Guruji protects us at every instance whether we realize it or not. A very big incident in my life was many years ago – my wholesale shop caught fire and I had not yet even reached my place of work. I rushed to the spot which was cordoned off by the police and fire brigade authorities, the building where my shop was located was in flames.

I managed to immediately call our Guru Maharajji on phone and see how He knows everything – He immediately came on line and I gave Him the information of the fire. He thought for a moment and said, that yes, your shop is on fire, but I will see to it that 75 percent of your business is saved.

We were allowed to enter our shop only after 3 days and as I entered – I found everything converted to ashes and I was remembering Guruji telling me He would save 75% of my business, but here everything was burnt down.

Another 2 days passed of salvaging what I could – and suddenly I see three files – quite intact, only a bit wet and when I went close to

pick them up – one file was unpaid purchases, one was unpaid sales and one contained post dated cheques collected from my customers !!!

I pulled those files and went to my friend's office and opened them all – every one bill was intact – only a bit wet, I immediately loosened them and left them to dry and in a few hours I had the most important details of unpaid bills and cheques - were intact in my hands

I called Guruji – and He said – that is what I meant – if you have all your details and records intact means 75% of your business is salvaged. Again due to His Grace – whatever I lost in stock and furniture was all recovered from the insurance company.

I may have been out of my shop for 4 months – but His Grace did not let me lose anything.

I could go on and on recounting Guruji's Grace on me and my family…….

It is amazing how we lose patience when our own children keep asking for things but our Great Guruji is one with unlimited patience, we ask for things all our life, and He is so full of love and compassion – that He only keeps giving and giving.

After so many years of utmost care and love from Guruji, I really now feel ashamed. What I have learnt is that in spirituality – one must love his Guru in a one way direction, but here I see that instead He loves us – in a one way direction. We as humans must sacrifice our lives for Him – as He is our Sadguru – the one who shows us the path to the Supreme Lord, but instead He is sacrificing His life for us.

Not only has he taken care of me – but since I have got married he has even taken care of my wife and her full family as well, every member of my family and my wife's family is being protected, taken care of and our wishes are being fulfilled at every step.

I really wish to share this thought with all my Gurubhais and fellow readers – that we must all pray to Him to Grace us with the mind and conscience to understand what He wishes from us, and now start obeying His wish and His word and I can also say without a doubt, that even us listening to Him – is again for our benefit.

This is a quality of a Guru – in whatever form – He only gives and gives, and I can say, that by far – our Beloved Guruji is TOTALLY

PERFECT in this and every possible aspect.

JAI GURUDEV

Hitesh, Dubai

● ● ● ● ●

I was born in the darkest ignorance and my spiritual master opened my eyes with the torch of knowledge. I offer my respectful obeisance's unto him.

Guruji's grace has touched me in ways that are difficult to capture in words. I will try to express some of my personal experiences since my association with the Gaddi in Durban, South Africa. Through the grace of Guruji, I was introduced to the spiritual work of the ashram by my dear brother, Pravesh Prathap., who invited me to Sunday's satsungs around 1998.

My early experience of power of Guruji was felt through my meeting with Gobind ji in 1999. This coincided with a medical set back that I suffered at the time and from which I recovered through the grace of Guruji. Clearly my arrival at the Gaddi was destiny playing itself out. This was my first experience of his guiding and healing hand and this had a great impact on my devotion and continued association. I have been regular at Victoria Street Gaddi and can say that as my devotion grew so did my spiritual consciousness and my appreciation of Guruji as my spiritual mentor.

I have received his guidance when I needed to take difficult decisions and experienced his power when faced with failure. Guruji's pictures are living symbols of his presence. He adorns my home, my office and my person. He is a companion that I can turn to whenever I need him. I feel his presence in simple and explicit ways at various times in my day.

I still have a long way to go on this journey of devotion. I believe that Guruji reveals only a part of his full power to us to attract us to the greater spiritual gains that lie beyond our material needs and wishes. We are all privileged for this association and should take care not to loose or abuse his kindness and guidance. I sincerely try to apply the various spiritual guidelines that are imparted through sat-

sungs in my everyday action and thinking… it is difficult, but I keep at it with constant chanting and remembering.

I have had the privilege of offering pranam and being in Guruji's presence in June 2007 – I can honestly say that this was a life changing experience and the spiritual highlight in my life. I consider it a singular honor to have the association of our Satguruji. I offer my humble submission and pranam to him, over and over.

Pravin Ram
Durban

● ● ● ● ●

My experience with our GuruMaharaj & Ashram is so vast that an entire lifetime would not be enough to explain. But to put it in short, I'll share few points with everyone.

I use to be a very superstitious person and GuruMaharaj cured me of this, and by his grace today I am 100% cured.

I feel the same warmth with GuruMaharaj & Guruji, like we all feel with our parents.

I don't get afraid of anything now like I used to get scared before …as I know they are always there for me to protect me and will always take care of me.I do my best and leave the rest to them and whatever they decide for me is Final, because I believe that whatever they decide is always going to be good for me.

Also once I remember when GuruMaharaj was talking to me I got so nervous I could hardly reply…I got so scared… I am only scared of him … and scared in the terms of love and respect.

It's all the same feeling with Guruji as well.

With them my feelings are like you have in a Dancing / Singing Competitions where they have a Danger Zone and a Safe Zone ..... I always feel that I am in a Safe Zone with them and I feel protected always.

Manoj S Kirpalani, Dubai, UAE

● ● ● ● ●

I offer my most humble obeisance's to my Guruji, Swami Shri Sudarshanacharya Ji Maharaj. My acquaintance with Guruji and

the Shri Sidhdata Ashram began in March 2005 when I attended my first satsung, I had no idea what to expect. I did not realize then what impact this association will have on my life and those of my family. Like everyone I have various relationships in my life, that of a daughter, wife, mother, sister and so on, but the relationship of devotee is what I treasure most.

My faith in Guruji and his ashram has grown in leaps and bounds over the years. My experiences with Guruji's grace, kindness and benevolence are so numerous that I can probably write a book on them. The first and most precious experience for me was when my husband and children started attending satsungs with me. Maybe I should begin mentioning that before I joined the Sidhdata Ashram, I was attending satsungs at another ashram for 5 years and not once did my husband and children join me. Two months after I joined the Victoria Street Gaddi, they accompanied me on their own accord.

The other experience I want to share is one that I had with Swami Ji, Shri Purushotamacharya Ji. After only 10 months in the Durban Gaddi, I had the opportunity of visiting Guruji's Ashram in Faridabad. I was there with my family. We spent a full week at the ashram. That was the most peaceful and blissful time of my life. Anyway one evening I decided to do Parikrama on my own. Now in South Africa we always try to have company when we venture out of our house, due to the muggings and crime. As I walked around the ashram, I had this fear in my heart and mind that I was being followed and attacked. When I reached the front of the ashram, Swami Ji was walking around supervising the preparations for Holi. I prostrated at his feet. He asked me if there was anyone there harming me. I could not help but stare up at him in amazement. He knew exactly what was in my heart. He was there to protect and keep me safe. I had no other answer but the truth which was that I was fine, the concern, care and love that Swami Ji showed me in that moment was more than my heart could handle, I just cried.

That was when I understood the true meaning of "Tvameva Mata Cha Pita Tvameva" "Tvameva Bhandu Cha Sakha Tvameva" for in that moment Swami Ji became my mother and father, my protector and savior. My depression at losing my parents was lifted. My faith in God and Guru was restored that day.

I would like to end by saying that there is no one dearer to me than

my Guruji and Swami Ji, they are my life.

Shakila Nundlall
Durban

Since joining the ashram eight years ago our lives have become spiritually enriched. One tends to attain a sense of inner peace and tranquility which enhances our quality of life. We have become progressive thinkers and realize the importance of Guru ji in all our success and achievements.

Our family has placed undivided faith and devotion in the knowledge that we are eternally guided by the forces of goodness and prosperity and that Guru ji will assist in all our challenges and obstacles. We hope that you also surrender your soul to the ashram and Guruji in pursuit of a life of perfection.

Tommy & Omilla Bhugwandeen & Family
Durban